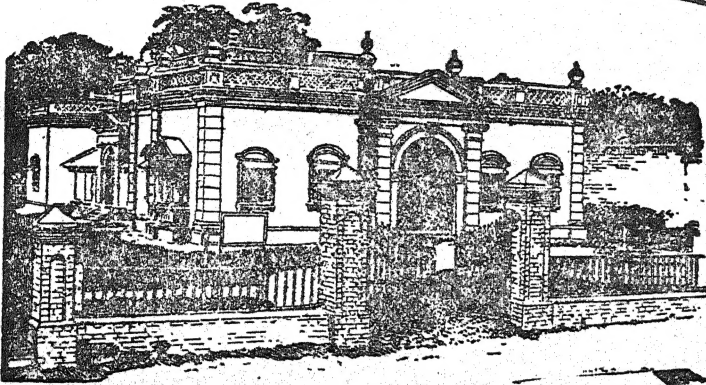
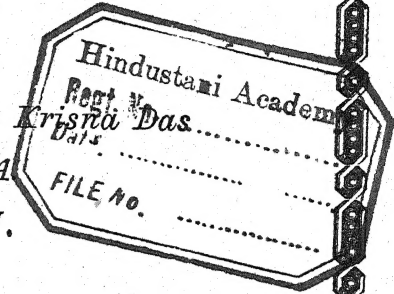


Nagari-Pracharini Granthmala Series N. 4-6.
THE PRITHVIRAJ RASO

OF
CHAND BARDAI,
EDITED

BY
Mohanlal Visnupal Pandia, Radha Krishna Das
AND
Syam Sundar Das, B. A.
CANTOS XVII. TO XXIV.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास
और

श्यामसुन्दरदास बो. ए.

ने

सम्पादित किया ।

पर्व-१७ से २४ तक ।

PRINTED AT THE MEDICAL HALL PRESS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA,
BENARES.

1906.

सूचीपत्र ।

| | | | |
|---------------------------|-----|-----|---------------------|
| (१७) भूमि सुपन प्रस्ताव | ... | ... | पृष्ठ ५७७ से ५८८ तक |
| (१८) दिल्लीदान प्रस्ताव | ... | ... | ,, ५८९ ,, ६०१ ,, |
| (१९) माघी भाट कथा | ... | ... | ,, ६०३ ,, ६३० ,, |
| (२०) पद्मावती समय | ... | ... | ,, ६३१ ,, ६४१ ,, |
| (२१) प्रियाव्याह वर्णन | ... | ... | ,, ६४३ ,, ६७० ,, |
| (२२) होलीकथा | ... | ... | ,, ६७१ ,, ६७३ ,, |
| (२३) दीपमालिका कथा | ... | ... | ,, ६७४ ,, ६७९ ,, |
| (२४) धनकथा (अपूर्णा) | ... | ... | ,, ६८१ ,, ७०४ ,, |

अथ भूमि सुपन प्रस्ताव लिख्यते ॥

(सत्रहवां समय ।)

पृथ्वीराज का कुँअरपन में शिकार खेलना ।

कवित्त ॥ कुँअरपन प्रथिराज । राज आघेटक पिछहि ॥
जोव्वने मभक्त रवन । मूल पच्छिम दिसि मिछहि ॥
भालि बीर वाराह । चक्र बज्जी चावहिसि ॥
मुक्ति थान पंचान । मिले सूर संखद घसि ॥
लोहान बीर आजान भुअ । लोहा खंगर धाइया ॥
इह थान चुक्ति अपथान मुकि । पंचां नन रव छाइया ॥ कं० ॥ १ ॥

हाथी घोड़े आदि का इतना कोलाहल होना कि शब्द
सुनाई नहीं पड़ता ।

द्रुहा ॥ पंष सबद गुंजत सुगज । चै हींसत सद खानं ॥
गिर गुंजत परसद बहु । सद न सुनियै कानं ॥ कं० ॥ २ ॥

सिंह का क्रोधित होना ।

कवित्त ॥ सदपति संभरिय । कानं मंडे रव संभलि ॥
ज्यो पल बयन असंत । विप्र घोजै निगंम मिछि ॥
गुन अवगुन कुल बधू । सती पति वृता मानि मन ॥
नाग अंग चंपयौ । किमार अगै फुल्यौ मन ॥
षिभयौ एम पंचाननह । बाय बास सुमंन फुलिय ॥
द्रिग घालि द्रिष्ट खगया सकल । तेज अंग कायर छलिय ॥ कं० ॥ ३ ॥

द्रुहा ॥ कानन सहन संभरत । कूह कलह आघेट ।

थह सूतो बर जगगयौ । सिसु दंपति घटि पेट ॥ कं० ॥ ४ ॥

कवित्त ॥ दिष्ट राज अंमरिय । सरित संभरिय संपत्ते ।

के हंके चक्काह । केक चावहिसि धत्ते ॥
 के पाइल बर बान । मूल धारी उठि नठे ॥
 के असवार करार । चीन काइर ह्वै तठे ॥
 के गए मुक्कि पाइल मगय । पीर कंठि तक्कर परत ॥
 दिष्यौ लंग लंगवली । बियौ न कोइ धीरज धरत ॥ कं० ॥ ५ ॥

सिंह का महा क्रुद्ध होना ।

सुनिब सूर बर चक्क । धक्क बज्जी चावहिसि ॥
 नरन सह कानन प्रसह । सिंघ किन्नो सु क्रोध ग्रसि ॥
 बीरा रसु बिडुरिय । पुंकि सिर भारि भूपदिय ॥
 दीप नयन प्रज्जरिय । लंग दिसि लगे लपदिय ॥
 बल अतुल तोल तोलत पय । बुल्यौ मन सहह गुहिर ॥
 फटिय धरकि मानहु गगन । सिस सनेह संगन बहन ॥ कं० ॥ ६ ॥
 दूहा ॥ आघेटक दरसे सकल । सिसु सिंघनी बिच सिंघ ॥
 खान देषि मुहु रव करत । ओलंघे नरसिंघ ॥ कं० ॥ ७ ॥

सिंह पर तीर का निशाना चूकना, पृथ्वीराज का तलवार से सिंह को मारना ।

कवित्त ॥ सवै सेन अवसान । मुक्कि लग्यौ बर तामस ॥
 तब पंचानन चक्कि । धक्कि चहुआनां पामिस ॥
 लै कमान बिय बान । पंचि नंध्यौ विय चुक्यौ ॥
 समर सिंघ सब स्थ्य । तथ्य चावहिसि हंक्यौ ॥
 डंमरिय डहकि विज्जुल लहकि । धग कळ्यौ सोमेसजा ॥
 चंघ्यौ नरिंद अवसान तकि । पंडो डारिय हथ्यता ॥ कं० ॥ ८ ॥
 चंपि स्वामि बिडुरिय । लोह संजुरि नग मुक्यौ ॥
 ॥ ९ ॥ लोहा लंगर राइ । बीर अवसान न चुक्यौ ॥
 स्वामि सथ्य परिषथ्य । रुंड धर बर उष्यारे ॥
 रुहिर अंग भंभरिय । सिंघ पारिय अष्यारे ॥
 बन राय बीर बन हित रूप । सूर स्वामि भ्रमं सुरसि ॥

चर नंग बीर तल बज्जय । सबर जोर जम दटुकसि ॥ कं० ॥ ८ ॥
दूहा ॥ लंगे लोह उचाइ करि । अरु चावहिसि चाहि ॥

दृष्ट्य आइ कर तोन द्रढ । बर कमान बर साहि ॥ कं० ॥ १० ॥
कवित्त ॥ द्रढ कमान मुट्ठिय प्रमान । गछौ तकि तोन जोर कर ॥

बरकि बरकि बंगाल । चित्तन चंचल सु बोलि गुर ॥

गुंजि गरज भूभान । जंग देवत रत्त जुअ ॥

नचि निवेस तजि बाल । सिंघ सम बीर इक्क हुअ ॥

आषेट तजिय चस्त्रिय सुभर । बिबिध सिंघ दिष्यन दिसा ॥

सम बीर बीर एकत भए । तहां दिष्टौ सोमस जा ॥ कं० ॥ ११ ॥

षेध लुगि कुटि बीर । सुबर दिषि बीर अष्ट क्रम ॥

सोमसर सुअ सूर । लयौ पर तौजिम रवितम ॥

मुष्टि दिष्टि मरदां मरद । मिले पंचानन सूर ॥

पिता जान बेबंध । द्रव्य अधो अध पूर ॥

चय भाग तक्रिय सिंघद सुख्य । मुला मूल लंगी चळ्यौ ॥

उपमा चंद सुनि सुपन ज्यौं । सुबर बीर देही दळ्यौ ॥ कं० ॥ १२ ॥

पृथ्वीराज के शिकार की धूम धाम का वर्णन, पृथ्वीराज का एक पेड़ की छाया में अपने सरदारों के साथ बैठना ।

कंद पदरी ॥ आषेट रमत प्रथिराज रंग । गिरबर उत्तंग उद्यान दंग ॥

उत्तंग तरुन काया अकास । अनेक पंषि क्रीडहिं हुलास ॥

सुब्बा सरास कुहे सुगंध । तहां अमत भोर बहु बास अंध ॥

फल फूल भार नमि लगी साध । नासा सुगंध रस जिह्व चाष ॥ कं० ॥ १३ ॥

पन्नग प्रचंड फूँकर फिरंत । देखंत नरद ते करत अंत ॥

अनेक जीव तहां करत केलि । बट बिटपि कंह अवलंबि बेलि ॥

इक घाट विकट जंगल दुअर । तहां बीर मूल पिथल कुंआर ॥

वामंग अंग चामंड राय । चूकै न खंठि सौ काल घाइ ॥ कं० ॥ १४ ॥

दाहिनि दिसा कन्हा सुजोध । सम ब्रह्म सख सम ताहि क्रोध ॥

लोहान ण्ठि बैठे प्रचंड । जनार जोर जम देन दंड ॥

दिग कन्ह बैठि पुंडीर धीर । आजान बाह बज्जी सरीर ॥
 चामंड अंग कैमास काल । जीवार जोध पसु घरनि घाल ॥
 तिन अगग आई पज्जन राइ । सब पेल निपुन पसुदाइ घाइ ॥ कं० ॥ १५ ॥
 दुअ और और सामंत जूह । घेदानि जेर करि करी कूह ॥
 कर जौरि सेन सात सहस सथ्य । उडुंत पंषि गहि लेइ दथ्य ॥
 जुर बाज कुची तुर मनी धारि । उडुंत जीव ते लैहि पार ॥
 सच लैहि स्वांन ते रौभ भुमि । पिष्यै जु करंक बिन मंस भूमि ॥ कं० ॥ १६ ॥
 सकल अनेक उठे वराह । बट बंटी मंसनह तुहि थाह ॥
 सा मरन सूर परि बथ्य लैहि । ते बंटी बंटी सव सथ्य देहि ॥
 घरगोस स्वांन नह लहत बांटी । फिरि चढ़े जीव ते ओठ चांटी ॥
 स्रगमाल पवन उठि चले भागि । तिन परसु तीर सरवसि आगि ॥ कं० ॥ १७ ॥
 अनजीव जीव वष्पांन कोन । सिकार लगि इन चाल होन ॥
 सब सथ्य तथ्य हुअ एक जुहि । गज्यौ सु सिंघ जनु गगन फुहि ॥
 धपि चल्थौ बीर प्रथिराज धीर । लंगरिय लोह तह इक तीर ॥
 दिथ्यौ सुजाइ सिंघनिय बाल । अवतार धरिय जनु पुहमि काल ॥ कं० ॥ १८ ॥
 गरु राइ गुंग गज्यौ गरु । उचाइ पुह मनु पुहमि चूर ॥
 दथवांन दथ्य हाकंत घाल । दहुरनि दैरि मनोद बटि व्याल ॥
 आकास सीस दहै प्रचंड । जम रूप जीव ताडंत तुंड ॥
 दक्यौ सुराइ संजम कुंआर । कुय्यौ सु तेज जनु तीर तार ॥ कं० ॥ १९ ॥
 भए लथ्य बथ्य नर जीव जोध । त्रप अगग केलि जनु मल्ल क्रोध ॥
 गल वांछ घल्लि दब्यौ सुसूर । फाख्यौ सु उदर जम दहू पूर ॥
 दथवांन एक केहरिय कीन । पय दथ्य अंषि करि कंन हीन ॥
 आये सु दैरि सब सथ्य जाम । लंगा सधनि इम कहिय स्वांम ॥ कं० ॥ २० ॥

संजम राय के बेटे का वीरता दिखलाना ।

दूहा ॥ संजम राइ कुमार बल । करि संजम नृप भ्रम ॥
 इक मिक एकत भए । अप्प चर्म पसु चर्म ॥ कं० ॥ २१ ॥
 गजनि कुंभ जिसि दथ्य हनि । फारि चीर धर डार ॥

संजम राइ कुमार सौ । बस्थन मारि पकारि ॥ कं० ॥ २२ ॥

रीक रोभत बाराह चनि । दठन बट्टे कोरि ॥

तिते जीव उर मभक्त । कठि जम दट्टे फोरि ॥ कं० ॥ २३ ॥

गिरि परबत नद घोह सर । लंगत लगी न बार ॥

लंगा इक्कन लंग्यौ । अनी धार धर धार ॥ कं० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज का प्रसन्न होना और उसकी पीठ ठोंकना ।

कवित्त ॥ भौ प्रसन्न प्रथिराज । बोल बल्ल्यौ सुलंगरिय ॥

इतौ देजं प्रचंड । पंच जो मझि मोहि जिय ॥

अहा राज सु अह । पाट अहा तंबूल ॥

अहा बेस सुदेस । करो आदर संभूल ॥

बोलंत बैन प्रथिराज सुनि । जीव लज्जि नीची नजरि ॥

लगाइ कंठ ठुकि पिठु कर । भजौ भजौ सब सथ्य करि ॥ कं० ॥ २५ ॥

दूहा ॥ जब दैवत दिवाइहै । तब सच्चा मुक्त बैन ॥

मिग तिझा ज्यो देषियै । प्यास न बुझै नैन ॥ कं० ॥ २६ ॥

सुपनंतर की प्यास ज्यो । भजै मही किचि भति ॥

जब दैहौ तब पूजिहै । जो मन मझुह भति ॥ कं० ॥ २७ ॥

सब लोगों का आगे बढ़ना, एक शकुन मिलना ।

इह कहि करि अगें चले । मिले सूर सब संग ॥

तब दिख्यौ इक सगुन बन । भए सबन मन पंग ॥ कं० ॥ २८ ॥

शकुन को देख कर सब को आश्चर्य होना ।

बत कहत प्रथिराज ने । पिछ्यौ सगुन नृपति ॥

सकल साथ अचरिज भयौ । देखत इहै चरित्त ॥ कं० ॥ २९ ॥

एक सर्प को नाचते हुए देखना ।

कवित्त ॥ अहि सुरंग मनि दुत्ति । देवि मंडै तंडव गति ॥

बालमीक बिल अग्र । इक फनि कुटिल क्रोध मति ॥

इक हस्थ बिब विहथ । थान उंचौ रवि संझौ ॥

वर संमल उर चंपि । तेज जाजुलि सुचिन्हौ ।
 आचिज्ज देषि प्रथिराज तब । चक्काछौ पामर सहर ॥
 धावर सु कन्ह चहुआन कै । बोलि बीर चहिग महर ॥ कं० ॥ ३० ॥
 महर कहर करिवार । भार जिन जुह कन्ह वर ॥
 नरनाहां वर गठ । गाह गिर दीह दुअन धर ॥
 मति जोतिग सचदेव । सगुन आगम गम जानै ॥
 प्रबल मैबासन मारि । उथपि थप्य थिर थानै ॥
 बिर दैत दमित आजांन भुअ । उर किंवार वर वज्र जुअ ॥
 कुह न किमच जै क्रोध तजि । दुअ महिष निवारै भुजनि दुअ ॥ कं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज का इस सर्प की देवी के शकुन का फल पूछना ।

कंदपद्धरी ॥ आयौ सुमहर महरन नरेस । जिहि सुनत चढि भगि जात देस ॥
 उन्निद अंग उत्तंग कंध । वर बाहु वज्र अरि धर असंध ॥
 बेहथ कलाइय हथ्य जाहि । पग दौरि बियन वर रछौ गाहि ॥
 महिषी सु उभय पय टांसि जाइ । कलहंत क्रोध दिष्य बलाइ ॥ कं० ॥ ३२ ॥
 रष्यत सु निजरि सब अग पच्छ । चुकवै चोट हनि तुच्छ तच्छ ॥
 कल केद भेद तस करन राव । पर भूमि अप्य इस धरै दाव ॥
 दुअ सहस महर जिन संग जोध । कमनैत काल अनमी अबोध ॥
 बहु ब्रषभ गाय महिषीन तुंग । केली क्यख गडरन्न पुंग ॥ कं० ॥ ३३ ॥
 धुंमत मथान जिन घरन घोर । आगम अषाढ जनु घटा सोर ॥
 बेपार दुग्ध जिन घरन घर्च । अनभंग बुद्धि जिन समर चर्च ॥
 विरदैत एक वाने न धार । चमरैत एक एक तबल तार ॥
 सिर वचै बिदर पग पच्छ देन । टिग समर देषि सिर लगत गैन ॥ कं० ॥ ३४ ॥
 गुज्जर अहीर असि जाति दोइ । तिन लीह लोपि सकै न कोइ ॥
 चाचिग हजूर कुंमार आइ । करियै हुकम सिर ल्यौ चढाइ ॥
 बुल्ले सुबैन चहुआन राउ । कहि सगुन सर्प देवी प्रभाउ ॥ कं० ॥ ३५ ॥

**ब्राह्मणों का फल बतलाना कि बिना युद्ध पृथ्वी से
आपको बहुत धन मिलेगा ।**

दूहा ॥ महर कहर गति बैन कहि । ज्यों बुल्लै दुजबैन ॥
 घरी एक सन्हौ रहै । तौ लभै नृप चैन ॥ कं० ॥ ३६ ॥

कुंडलिया ॥ मंने संभरि बार सुनि । इह अपुब्ब गति इच्छ ॥
 मभक्त कदन घरि इक्क मै । आवै भूमि रु लच्छि ॥
 आवै भूमि रु लच्छि । पंषि माता इह सारी ॥
 दल जिते पुरसांन । कित्ति जग ज्यो विसतारी ॥
 इन सगुननि चहुआन । तुच्छ दुष अतिहि अभनौ ॥
 विन जुद्धइ इह लग्न । द्रव्य निकसै आभनौ ॥ कं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ कुटिल दिष्ट तिन चिन्त करि । कही महर इक बात ॥
 सो ब्रह्मा नन जानई । बात भविष्यत घात ॥ कं० ॥ ३८ ॥

पृथ्वीराज का देखना कि सर्प आधा बिल में है और आधा बाहर, उसके फन पर मणि के ऐसी देवी चारो ओर नाचती है और राजा पर प्रसन्नता दिखलाती है ।

कवित्त ॥ संभलि पिथ्य कुमार । व्योम दिष्यौ स्वप सारिय ॥
 अडौ बंभी मध्य । अड उँचौ अधिकारिय ॥
 ता फनि ऊपर मनि प्रमांन । देवि चावहिसि नंचै ॥
 दिष्यो इक्क मन मंडि । राज दिसि सगुनह संचै ॥
 आवै न पच्छ तथ्यह निजरि । नृपति द्वियं अयंत सुष ॥
 जंपयौ महर धावर धनू । सगुन बीर जानै सरुष ॥ कं० ॥ ३९ ॥

देवी का इतने में उड़कर आम की डार पर बैठना और साग गिराना, पृथ्वीराज का बड़ा शकुन मानना ।

दूहा ॥ इतें देवि उडि बैठि अंब । चंच गिराइय साग ॥
 दैरि महिर तब हथ्य किय । लै नरिंद तुअ भाग ॥ कं० ॥ ४० ॥

सर्प सर्पिनी का मिलना और वहां से दूसरी जगह उड़जाना ।

सर्प आनि सर्पिनि मिलिय । भषु दीनौ तिन षाड ॥
 निय आसन थल कंडि कै । अन्न स्थल उडि जाई ॥ कं० ॥ ४१ ॥
 इह अचिज्ज पिष्यिय सकल । चाचिग पुक्कि फिरि बत्त ॥
 तुम जानो सब फल सगुन । महर कहर मत तत्त ॥ कं० ॥ ४२ ॥

इस शुभ शुकन का फल वर्णन ।

कंद पद्धरी ॥ तत वत्त महर तिन कही वत्त । या सगुन लाभ वरन्यौ न जत्त ॥
 दिन तुच्छ मद्धि धन लाभ होइ । ता पच्छ कंक दुअ राह जोइ ॥ कं० ॥ ४३ ॥
 तुम जैत होइ भगो पलांन । धन जुइ लाभ लभै बलांन ॥
 इह लगन महरत इसो देव । पल भूमि अप्पि तो करै सेव ॥ कं० ॥ ४४ ॥
 संसार कित्ति चहु चक्र होइ । बंदै सुवाह बल दीन दोइ ॥
 सागुन्य सगुन फल कहै जब्ब । प्रमुदित मन चहुआंन तब्ब ॥ कं० ॥ ४५ ॥
 जिम मेह मोर आनंद होइ । राका रयनि आनंद तोइ ॥
 रिति राइ पाइ तरु फलत फूल । जिम सिद्ध सेव दिय हरत सूल ॥ कं० ॥ ४६ ॥
 जिम मंच सक्ति साधक लहंत । रस धात रसाइन लहि चहंत ॥
 जिम इष्ट लाभ आराध वंत । प्रमदा मुदित जिम आइ कंति ॥ कं० ॥ ४७ ॥
 तिम भयौ सुष्य प्रथिराज अंग । बजि पंच सष्ट बाजै सुरंग ॥ ४८ ॥

शिकार बंद कर के बन में पृथ्वीराज का डेरा डालना ।

दूहा ॥ पंच सबद बाजिच बजि । तजि अगथा चहुआंन ॥

कानन मध्य सु उत्तरिय । किनौ कुअर मिलांन ॥ कं० ॥ ४९ ॥

डेरों की शोभा, बिछैने पलंग आदि की तयारी वर्णन, पृथ्वी-
 राज का शिकार की बातें करना, सरदारों का सत्कार करना,
 सब का ठंढा होना, भोजन की तयारी ।

कंद नाराचा ॥ कछौ मिलांन राजयं । बरनि कब्बि राजयं ॥

फिरंग सू फनक्कसी । जरद्दु जंज रक्कसी ॥ कं० ॥ ५० ॥

सुवंन वंस राज्जतं । उभे सुमभक्त मभक्तं ॥

फिरंग सूर लगतं । अजब्ब जेव जगतं ॥ कं० ॥ ५१ ॥

गिरिह डोरि रेसमं । सुपंच रंगयं अमं ।

तने तानव तंबुअं । करे सुपद्धरं भुअं ॥ कं० ॥ ५२ ॥

विक्काइ कैदुली चयं । धरे प्रजंक वीचयं ॥

सवारि सेज पथ्थरं । सुगंध फूल विथ्थरं ॥ कं० ॥ ५३ ॥

गरम्म रुम तोसयं । ढके पलंग पोसयं ॥

कनंक मै सिंघासनं । अक्कादितं सुवासनं ॥ कं० ॥ ५४ ॥

धरे सुपिठु तक्किण । अतस्स संत ठक्किण ॥
 अगें अबन्नि अंगनं । सिका करै किरकनं ॥ कं० ॥ ५५ ॥
 कुंमकुमा गुलाबयं । सुनेक कंटि आवयं ॥
 तहां सु वैठि पिथयं । करै अषेट कथयं ॥ कं० ॥ ५६ ॥
 अनेक भंति चंदयं । पढै विरह कंदयं ॥
 सामंत स्तब्ध नम्मियं । मिलांन अप्प कम्मियं ॥ कं० ॥ ५७ ॥
 सें हथ्य चाहुआनयं । दए कपूर पानयं ॥
 षवास पास वानयं । हजूर उभ्भ आनयं ॥ कं० ॥ ५८ ॥
 विरष्प बह जंबुअं । पिरन्न जह अंबुअं ॥
 गयंद बंधि अंदुअं । भरंत मह बिंदुअं ॥ कं० ॥ ५९ ॥
 करंत केलि सारसी । मलप्प ते महारसी ॥
 विरह नेक बोलते । पलक्क चप्प षोलते ॥ कं० ॥ ६० ॥
 महावतं पुकारते । च्छटं न लै अचारते ॥
 पियंत नीर षों गरें । गरज्ज नभ्भ ज्यों गरें ॥ कं० ॥ ६१ ॥
 कपोल लोल हल्लते । चबेल सुंड भल्लते ॥
 गिलोल चोट लगते । विरष्प ओट भगते ॥ कं० ॥ ६२ ॥
 दिपंत दंत उज्जलं । पहार पंति कज्जलं ॥
 दुरह चह बेसके । दिये गनेस भेस के ॥ कं० ॥ ६३ ॥
 सुपीलवान उभ्भयं । चरष्पि गड्डु षुभ्भयं ॥
 करे तुरंग काइजं । भरे अमंन बाइजं ॥ कं० ॥ ६४ ॥
 मिटै डरं पसीनयं । पलान दूरि कीनयं ॥
 न्दवाइ नष्प सिष्पयं । अक्कादि कंध रष्पयं ॥ कं० ॥ ६५ ॥
 रतब्ब दै ब्रहासयं । करे चपत्त घासयं ॥
 ता पच्छ जाइ साहनी । अरांम पंड वाभनीं ॥ कं० ॥ ६६ ॥
 कहूं करं भलारयं । भरी रषत्त भारयं ॥
 अनूचरं उतारयं । संभारि ढार ढारयं ॥ कं० ॥ ६७ ॥
 हुलास सेन उप्पजै । भोज्जंन भष्प निप्पजै ॥ कं० ॥ ६८ ॥

धरे सुपिठु तक्किण । अतल्ल संत ठक्किण ॥
 अगें अबन्नि अंगनं । सिका करै किरक्कनं ॥ कं० ॥ ५५ ॥
 कुंमकुमा गुलाबयं । सुनेक कंठि आवयं ॥
 तहां सु वैठि पिथयं । करै अषेट कथयं ॥ कं० ॥ ५६ ॥
 अनेक भंति चंदयं । पढै विरह कंदयं ॥
 सामंत स्तब्ध नम्मियं । मिलांन अप्प क्रम्मियं ॥ कं० ॥ ५७ ॥
 से हथ्य चाहुआनयं । दण कपूर पानयं ॥
 षवास पास वानयं । हजूर उभ्र आनयं ॥ कं० ॥ ५८ ॥
 विरष्य बह जंबुअं । पिरन्न जह अंबुअं ॥
 गयंद बंधि अंदुअं । भरंत मह बिंदुअं ॥ कं० ॥ ५९ ॥
 करंत केलि सारसी । मलप्प ते महारसी ॥
 विरह नेक बोलते । पलक्क चष्य पोलते ॥ कं० ॥ ६० ॥
 महावतं पुकारते । हठं न लै अहारते ॥
 पियंत नीर पोां गरें । गरज्ज नभ्र ज्योां गरें ॥ कं० ॥ ६१ ॥
 कपोल लोल हल्लते । चबेल सुंड भल्लते ॥
 गिलोल चोट लगते । विरष्य ओट भगते ॥ कं० ॥ ६२ ॥
 दिपंत दंत उज्जलं । पहार पंति कज्जलं ॥
 दुरह हह बेसके । दिये गनेस भेस के ॥ कं० ॥ ६३ ॥
 सुपीलवान उभ्रयं । चरष्य गड्डु पुभ्रयं ॥
 करे तुरंग काइजं । भरें अमंन बाइजं ॥ कं० ॥ ६४ ॥
 मिटै उरं पसीनयं । पलान दूरि कीनयं ॥
 न्दवाइ नष्य सिष्ययं । अक्कादि कंध रष्ययं ॥ कं० ॥ ६५ ॥
 रतब्ब दै ब्रहासयं । करे चपत्त घासयं ॥
 ता पच्छ जाइ साहनी । अरांम पंड वाभनी ॥ कं० ॥ ६६ ॥
 कहूं करं भलारयं । भरी रषत्त भारयं ॥
 अनूचरं उतारयं । संभारि ठार ठारयं ॥ कं० ॥ ६७ ॥
 हुलास सेन उप्पजै । भोज्जंन भष्य निप्पजै ॥ कं० ॥ ६८ ॥

इस शुभ शकुन का फल वर्णन ।

कंद पद्मरी ॥ तत बत्त महर तिन कही बत्त । या सगुन लाभ वरन्यौ न जत्त ॥
 दिन तुच्छ मद्धि धन लाभ होइ । ता पच्छ कंक दुअ राह जोइ ॥ कं० ॥ ४३ ॥
 तुम जैत होइ भगो पलांन । धन जुइ लाभ लभै बलांन ॥
 इह लगन महरत इसो देव । पल भूमि अपि तो करै सेव ॥ कं० ॥ ४४ ॥
 संसार किति चहु चक्र होइ । बंदै सुवाह बल दीन दोइ ॥
 सागुन्य सगुन फल कहै जब्ब । प्रमुदित मन चहुआन तब्ब ॥ कं० ॥ ४५ ॥
 जिम मेह मोर आनंद होइ । राका रयनि आनंद तोइ ॥
 रिति राइ पाइ तरु फलत फूल । जिम सिद्ध सेव दिय हरत सूल ॥ कं० ॥ ४६ ॥
 जिम मंच सक्ति साधक लहंत । रस धात रसाइन लहि चहंत ॥
 जिम इष्ट लाभ आराध वंत । प्रमदा मुदित जिम आइ कंति ॥ कं० ॥ ४७ ॥
 तिम भयौ सुष्य प्रथिराज अंग । बजि पंच सट बाजै सुरंग ॥ ४८ ॥

शिकार बंद कर के बन में पृथ्वीराज का डेरा डालना ।

दूहा ॥ पंच सबद बाजिच बजि । तजि मगया चहुआन ॥

कानन मध्य सु उत्तरिय । किनौ कुअर मिलांन ॥ कं० ॥ ४९ ॥

डेरों की शोभा, बिछौने पलंग आदि की तयारी वर्णन, पृथ्वी-
 राज का शिकार की बातें करना, सरदारों का सत्कार करना,
 सब का ठंढा होना, भोजन की तयारी ।

कंद नाराचा ॥ कखौ मिलांन राजयं । बरंनि कब्बि राजयं ॥

फिरंग सू फनक्कसी । जरदु जंज रक्कसी ॥ कं० ॥ ५० ॥

सुवंन वंस राज्जतं । उमे सुमभक्त मभक्तं ॥

फिरंग सूर लगगतं । अजब्ब जेव जगतं ॥ कं० ॥ ५१ ॥

गिरिह डोरि रेसमं । सुपंच रंगयं भ्रमं ।

तने तानव तंबुअं । करे सुपद्धरं भुअं ॥ कं० ॥ ५२ ॥

विक्काइ कैदुली चयं । धरे प्रजंक वीचयं ॥

सवारि सेज पथ्यरं । सुगंध फूल विथ्यरं ॥ कं० ॥ ५३ ॥

गरम्म रुम तोसयं । ठके पलंग पोसयं ॥

कनक मै सिंघासनं । अक्कादितं सुवासनं ॥ कं० ॥ ५४ ॥

सब लोगों के साथ पृथ्वीराज का भोजन करना ।

दूहा ॥ करि मिलांन मध्यांन हुआ । निपति भोज कह भंति ॥

एकत मिलि आहार हुआ । रही न मन ककु घंति ॥ कं० ॥ ६८ ॥

संध्या होने पर सब लोग घर लौटे ।

मादक में नउ दीप किय । बह्नि सुगंधन तार ॥

निसि आगम बहुरे ग्रहन । जित तित भूपन भार ॥ कं० ॥ ७० ॥

पृथ्वीराज का घर पहुंच कर भूमि देवी (पृथ्वी) को
स्वप्न में देखना ।

चढि करि संभरि वार चलि । गेह सपन्नौ जाइ ॥

अंधारी दाहन निसा । भू सुपनंतर आइ ॥ कं० ॥ ७१ ॥

भूमि देवी के रूप सौन्दर्य का वर्णन ।

कवित्त ॥ पीत वसन आरुहिय । रत्न तिलकावलि मंडिय ॥

कूटिय चंचल चाल । अलक गुंथिय सिर कंडिय ॥

सीस फूल मनिबंध । पास नग सेत रत्न बिच ॥

मनों कनक साषा प्रचंड । गहै काली उष्यंम रुच ॥

मनो सोम सहायक राह होइ । कोटि भांन सोभा गही ॥

अदभूत द्रव्य ससि अहि गल्यौ । साष सुरंग भनावही ॥ कं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुम कौन हो और इस

समय यहां क्यों आई हो ।

दूहा० ॥ सुरंग चिया सोमो नृपति । वचन सुपन कहि लाल ॥

का तूं सुंदरि किन बरन । क्यों जभी इहि काल ॥ कं० ॥ ७३ ॥

भूमि देवी का कहना कि मैं वीरभोग्या हूं, मेरे लिये

सुर असुर सब शंकित रहते हैं पर जो सच्चा वीर

मिले तो मैं बहुत रस अवती हूं ।

कवित्त ॥ वीर भोग वसुमती । वीर भोगी वर चाँदौ ॥

आई भाइ कटाच्छ । वीर वीरां तन साँदौ ॥

वीरां थी पङ्करी । विना वीरां वर बंकिथ ॥
 हुं दिव्य नारी एह । सुरां असुरांनह संकिय ॥
 मिष्टानं पांन बहु भोग रस । रस सुगंध वीरन द्रव्यौ ॥
 अनभंग वीर जोह्ति वरि । रस अनेक निहचै अत्रौ ॥ कं० ॥ ७४ ॥

गाथा ॥ पंक जनय नीवामं । सुपनंतर राज दिठायं ॥
 जानिजै रति अंगं । कामं उकाह दीपयं मालं ॥ कं० ॥ ७५ ॥

राजा का विचार में मग्न होना ।

कवित्त ॥ मन लगौ बिसमित विचार । राज चिंता उष्यनिय ॥
 भोमि बयन मन मभक्त । सु कर वर गहि कर लिन्निय ॥
 सुभ लच्छिन उत्तंग । अंग अंग गुन पिन्निय ॥
 ता समांन छवि वांम । आंन करतार न किन्निय ॥
 मानीक वंस दानव कुलह । भोमि चरन निवास करि ॥
 जै जया सबद सुरपुर भयौ । करै केलि कलि इंद्र सर ॥ कं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज से भूमि का कहना कि षट्पूरन में अगनित धन है ।

दूहा० ॥ कहै भूमि प्रथिराज सो । सुति दै करि मन सुद्धि ॥
 बसै द्रव्य अगनित सगुन । षट्पूरन मन मद्धि ॥ कं० ॥ ७७ ॥

**अजयपाल चक्रवर्ती राजा द्वापर में था, उसने वहां
 असंख्य धन रक्खा है ॥**

कवित्त ॥ अजैपाल चक्रवर्तै । द्रुग अजमेर द्वापरह ॥
 तिहि बानिक पुर सिद्ध । लिषिय संजीत अपारह ॥
 हेम कोटि छा हून । इन देवर धर मंभह ॥
 घरी आइ इक पहर । देव देवी तत सुभक्तह ॥
 अस्नान काल पूजादि वह । तहं पत्तौ दुज राज बर ॥
 अप्पी असीस मंगी लक्ष्य । काम कछौ दुजराज नर ॥ कं० ॥ ७८ ॥
 इक्क सहस अपि द्रव्य । फेरि विप्रह अप्रमानं ॥
 सुनी सलकि बर बिष्णु । दर्ई सुमहा बर थानं ॥
 फिरि पत्तौ तहां राज । दियौ तब आप दुजबर ॥

अण्ण भयौ सुइ राज । रहै धन रषि गड्यौ धर ॥
 मो मति द्रव्य तिहि थांन रहि । तास मोह राजन करै ॥
 पायौ न कोइ पैहै न को । यों अरत अर्जुन फिरै ॥ कं० ॥ ७८ ॥
 दूहा ॥ को गड्डै पायौनि को । को विलसै करि भेव ॥
 माया काया मध्य दिन । ज्यों बिषया बल देव ॥ कं० ॥ ८० ॥
 इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासके भूमिस्वपन
 नाम सप्तदशो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १७ ॥



अथ दिल्ली दान प्रस्ताव लिख्यते ॥

(अद्वारहवां समय ।)

अनंगपाल के दूत का कैमास के हाथ में पत्र देना ।

दूहा ॥ दिय पत्री कैमास कर । अनंगपाल कहि दूत ॥

बर बंची सामंत सत । द्विमत अप्पर नूत ॥ ६० ॥ १ ॥

पत्र में अनंगपाल का अपनी बेटी के बेटे पृथ्वीराज को लिखना

कि मैं बूढ़ा हुआ, बट्रिकाश्रम जाता हूं, मेरा जो कुछ है

सब तुम्हें समर्पण करता हूं ।

साटक ॥ स्वस्ति श्री अजमेर द्रोण दुरगे । राजाधिपो राजनं ॥

पुत्री पुत्र पवित्र पश्य अधनौ । पित्री सर्व तावनं ॥

मा वृद्धा इह विद्ध तप्य सरनं । वट्री निर्वर्त तनं ॥

आभूमं पुर ग्राम ह्य गय समं । संकल्पितं त्वार्थयं ॥ ६० ॥ २ ॥

पत्र पढ़कर सब का बिचार करना कि क्या करना चाहिये ।

दूहा ॥ बंचि पत्र कैमास कर । नृप सामंत समंत ॥

आइ दूत दिल्ली पुरह । सुवर बिचारहु मंत ॥ ६० ॥ ३ ॥

कोई कहता है कि दिल्ली चलना चाहिये, कोई कहता है

पहिले पृथा कुंआरि का व्याह रावल समरसिंह के साथ

करना चाहिये ।

चौपाई ॥ इक कहै दिलिय चलि राजं । मातुल बोलि तुमं प्रथिराजं ॥

इक कहै भगिनी परनाइय । समर सिंघ चिचंग सुराइय ॥ ६० ॥ ४ ॥

कवित्त ॥ समर सिंघ रावर नरिंद । चिच चिचंग देव दुति ॥

तिन सगपन संमुहौ । राज जानंत राज गति ॥

कै दिल्ली दिसि चलहि । बाल सेवर अधिकारिय ॥

सोमेसर पितु सते । करिय जिन बोल सुभारिय ॥

आवै न मंत विय बंध दृत । अनंगपाल संमुह चलिय ॥
 ता पच्छ प्रथा आगम सु प्रथ । देवमत्त व्याहं पुलिय ॥ कं० ॥ ५ ॥
 राजा सोमेश्वर सब सामंतो को एकत्र कर परामर्श करता है
 कि क्या कर्तव्य है, पुंडीर राय ने सलाह दी कि आता
 हुआ राज्य न छोड़ना चाहिए ।

सित सामंत रु नृप्य । बैठि सब सथ्यय मंतर ॥
 कैमासह चामंड । राय रामह बड गुज्जर ॥
 चाहुलि राय हमीर । सलष पांमार जैन सम ॥
 कछौ राज हम मान । तात अप्पी दिखी तम ॥
 पुंडीर राइ हम उच्चरै । करौ सकल आदर सुधर ॥
 उप्पाइ अनंत महि लिज्जियै । आदि भ्रम अमर असुर ॥ कं० ॥ ६ ॥

चंद बरदाई का मत पूछना ।

चौपाई ॥ सब भट पूछि पूछि कवि चंदह । तुम बरदाइ लहौ बुधि कंदह ॥
 किम अप्पै पितमात धरंनिय । सब बिरतंत कहौ मन करनिय ॥ कं० ॥ ७ ॥

चंद ने ध्यान कर के देवी का आह्वान किया और
 देवी की आज्ञा से कहा ।

तब बरदाइ सुइ मन कीनौ । सुमरिय सकति ध्यान मन लीनैन ॥
 देवी आइ कछौ बर तंत । सो अप्पै प्रथिराज सुमंत ॥ कं० ॥ ८ ॥

व्यास ने जो भविष्यत बानी कही थी वह सुनाकर
 चंद का कहना कि आप का राज्य खूब तपैगा ।

कवित्त ॥ पुब्ब कथा वरतंत । कहौ व्यासह ज्यों चंदह ॥
 सही भविष्यत बात । सुनी सो होइ बरिंदह ॥
 तोंअर बट्टी जाइ । पथ समप्यै चहुआनं ॥
 तपें तेज रवि जेम । कहीं सरसं परवानं ॥
 इह मत्त सत्त मन्नौ मनह । अरु पुब्बह मंची सपुन ॥
 सामंत सित धर भ्रम रत । सों पुब्बहु सचहु अपुन ॥ कं० ॥ ९ ॥

दूत से पृथ्वीराज का पूछना कि नाना (?) को वैराग्य क्यों हुआ ।

दूहा ॥ दूत हजूर बुलाइ करि । पुकृत पिथ्य कुंआर ॥

क्यों मातुल हुआ धर अरत । सो कहो सत्त विचार ॥ कं० ॥ १० ॥

दूत का अनंगपाल की प्रशंसा ।

गाथा ॥ दिखी अनंग नरिंदं । दंदं दहन दुऊनं दलनायं ॥

चिगुन तेज सुअंगं । पुहमी इंदं पहुमी सरनायं ॥ कं० ॥ ११ ॥

अनंगपाल का प्रताप कथन ।

दूहा ॥ बंक नृपति इक अंक लौ । मिटत करभर पांन ॥

इम इच्छै अवनी अटल । सचु न सुनियै कांन ॥ कं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ गज गुज्जत दरवार । घुरत दमंम बह धुअ ॥

बज्जत हय पुर तार । गाल गुज्जत सु डंट मव ॥

तंत तान भंभार । भमर गुंजार बास रस ॥

मुकट बंध राजान । लीन सेवंत हुकंम बस ॥

यो अवनि इंद्र तूअर तपै । कपै रोर मौजन मनह ॥

चव बरन सरन सुष्यह रसहि । दुष्यन^१ किहिं दिष्यिय तनह ॥ कं० ॥ १३ ॥

अनंगपाल के राज्य में दिल्ली की शोभा वर्णन ।

अनंगपाल तोअर सुढाल । सोज वासंत दिखीय वर ॥

धर सुढार कालिंद पार । अठार व्रन थर ॥

वर विहार प्रकार । विपन वाटिका बिराजिय ॥

ग्रिह उतांन वतांन । गोष जाली उच साजिय ॥

सब लोक असेक अनंद में । अण्य अण्य रच उहुरिय ॥

जाजंन जाप अट्टा परषि । हेम धोम धू विथुरिय ॥ कं० ॥ १४ ॥

अनंगपाल का वृद्धावस्था में सपना देखना कि सब तोअर

लोग दक्षिण दिशा को जा रहे हैं ।

अति तोअर परिवार । वृद्ध बहु रिड अनूपं ॥

ध्रंम क्रंम बहु रीति । चलै सब लोक सु कूपं ॥

बीर सेन सुत बीर । पाल बहु काल धरंजिय ॥
 मन लगौ वैराग । करत कत ऊंच करनिय ॥
 निसि मध्य सुपन पिष्यै दुरय । सब तूअर दक्षिण चलै ॥
 आरत माल कंठह कुसुम । दूरि मग घानी मिलै ॥ कं० ॥ १५ ॥

स्वप्न से जागकर अनंगपाल का हरि स्मरण करना ।

अनंगपाल पहु सुपन । देषि अप्पन चल चित्तह ॥
 हरि हरि हरि हरि चवै । इष्ट फुनि भूत विहत्तह ॥
 निसा जांम इक सेष । अप्प सुपनौ फुनि पिष्य ॥
 अप्प तरुनि सम उड्डि । तिथ्य धानक तप दिष्य ॥
 इह लष्य चित्त चंमकि नृपति । पांनी पाय अंदोलि अप ॥
 नरसिंघ नाम जंपिय पृथुक । सुत पुन नहीं पवित्त वप ॥ कं० ॥ १६ ॥

देा घड़ी रात रहे स्वप्न देखा कि एक सिंह जमुनाजी के किनारे
 आया है, दूसरा उस पार से तैरकर आया, दोनों सिंह
 आमने सामने बैठ गए और प्रेमालाप करने लगे,
 इतने में नींद खुल गई, सबेरा हो गया ।

घटिय उमै निसि सेष । ताम सुपनौ फुनि पिष्यहि ॥
 तट कालिंदी तीर । सिंघ क्रीडत दिव दिष्यहि ॥
 ताम समै इक सिंघ । पार उत्तरि जल आयौ ॥
 उमै खंघ सो मिल्या । नेह क्रीडा दरसायौ ॥
 बैठो सुसिंघ हथ मंढि करि । बैठि सनमुष सिंघ दुअ ॥
 जग्गायौ बीर सिंघह सुतन । नाम सुपिष्यौ प्रात हुअ ॥ कं० ॥ १७ ॥

अनंगपाल का व्यास जगजोति को बुला कर स्वप्न का प्रष्ण करना ।

तब तूअर चित चक्रत । उठि एकंत मंत हुअ ॥
 हरि जोतिह जग जोति । बोलि दैवग्य तथ्य दुअ ॥
 दिय आसन तमोर । बचन आभासि भाव दिय ॥
 कछौ सुपन विरतंत । आदि अंत कारंन तिय ।
 संभलें सुपन मन दुज दुमन । देषि राज बुल्यौ न हसि ॥

कित कहीं सब कंडौ दुमय । सब निम्मान सुकाल बसि ॥ कं० ॥ १८ ॥
 घ्यास ने ध्यान करके कहा कि दिल्ली में चौहान का राज्य
 होगा जैसे सिंह आया था, सो तुम भला चाहे तो
 अब तप करके स्वर्ग का रास्ता लो ।

तब दैवग्य विचारि । एक एकन मुष लोकिय ॥
 सब गंठी निम्मान । एक कारन चित दो किय ॥
 कहै सुनौ सुन बीर । दिखि चहुआन निवासं ॥
 ज्यौ दिख्यौ तुम सिंघ । मिलै तूअर सम तासं ॥
 तप सद्धि तुमह सद्धौ सरग । जो द्रष्टौ उडुन अपन ॥
 तूअर बिनास अगह अतुल । सब भविष्य कारन सुपन ॥ कं० ॥ १९ ॥

इस भविष्यबानी को सोचकर विचार करना कि दिल्ली
 का राज्य अपने दौहित्र चौहान को देना चाहिए ।
 दूहा ॥ सबै भविष्य विचार मन । पुचि पुच चहुआन ।
 तिहि अप्पो दिखिय सुदन । पसरै कित्ति प्रमानं ॥ कं० ॥ २० ॥

अनंगपाल का मन में यही निश्चय करलेना कि पृथ्वीराज
 को राज्य देकर बनवास करना चाहिए ।

कवित्त ॥ बालप्यन पन ज्वान । गतह त्रिद्वप्यन आयौ ।
 एक समे एकन । चित परब्रह्म लगायौ ॥
 पुच होइ संसार । भूमि रष्यै षल पंडै ॥
 बटै वंस विसतार । कित्ति दसहूँ दिसि हंडै ॥
 अब करौ जोग जंगम जुगति । भुगति सुगति मंगो हरिय ॥
 पुत्तीय पुत्त अप्पो पुहमि । इम चिंतन मन में धरिय ॥ कं० ॥ २१ ॥

अनंगपाल का मंत्रियों को बुलाकर मत पूछना ।

कं० पद्धरी ॥ बोलेति मंत मंती प्रमान । स्वामिंत भ्रम जे अंग जानि ॥
 रामह सुराज चिंतै सदाय । धुर भ्रंम रूप बांनी बदाइ ॥ कं० ॥ २२ ॥
 एकन महल राजन बयठ । गुदराइ बोलि दरबान तठ ॥

संसार विरत मन दिषि राज । चीकह कुंभ जल बूंद आज ॥ कं० ॥ २३ ॥
 अग्यांन चित्त ज्यो दिहु ग्यांन । लोभीय चित्त ज्यो हरि न ध्यांन ॥
 कुलटा सुनेन नहिं लज्ज जेम । कपटीय मनह नहिं प्रेम नेम ॥ कं० ॥ २४ ॥
 बानिक बनिज नहिं प्रीति अंग । दिष्यौ सराज इन परि बिरंग ॥
 बुल्ले सु बिनय करि बैन एव । ककु दुचित अज्ज मन लगत देव ॥ कं० ॥ २५ ॥
 प्रति वात कहिय अब हमहिं ईस । बिन पुच सचु संसार दीस ॥
 नृप वंस अस जो पुच होइ । अवनीय अप्प रघ्येति सोइ ॥ कं० ॥ २६ ॥
 पुची सपुच चहुआंन पिथ्य । तिन देंउं राज सो सरन तिथ्य ॥
 मंचीन मंत तब कहिय राज । चव जुगनि जुगति जे भूमि काज ॥ कं० ॥ २७ ॥
 जिहि जियत जीय धर रमै ओर । तिहि नृप नहीं कहि लोक ठौर ॥
 जनमंत पुब्व जिन तप्य होय । करि कष्ट कष्ट तप भूमि जोइ ॥ कं० ॥ २८ ॥
 धर पाइ राइ धर भ्रम बट्टि । धर भ्रम क्रम सुरलोक चट्टि ॥
 जो गंग जुगति कल कठिन काम । कहु पंगधार विश्राम ठाम ॥ कं० ॥ २९ ॥
 हम सीष मांनि अनंगेस राइ । भूमिय सु तजै सुष कित जाइ ॥
 मंचीन राज तब कहिय बत्त । मानो कि वैर गहि गुंग गत्त ॥ कं० ॥ ३० ॥

मंत्रियों का मत देना कि राज्य बड़ी कठिनता से होता है
 इसे न छोड़ना चाहिये ।

अरिस्तु ॥ ते मंची जंपिय नृप बत्ते । किहि गुन राज भूमि अनुरत्ते ॥
 गत्ति अगत्ति जिन धर पर अषी । तिहि धरपति धर कबहु न रषी ॥ कं० ॥ ३१ ॥
 कवित्त ॥ जो धरपति धर कंडि । अम्यौ नल राय हेत चिय ॥
 जो धरपति धर कंडि । तौ राम रषी न सीयनिय ॥
 जो धरपति कंडि । अमिय सुत पंड पंड बन ॥
 धर कारन विक्रम । कियौ कंगामिष भष्यन ॥
 धर मंडि न कंडि अनंग नृप । तिथ्य अमन राजिंद नन ॥
 धर काज राज धर पंडियै । चित न दिष्यहि राज मन ॥ कं० ॥ ३२ ॥
 मंत्रियों की बात न मानकर अनंगपाल का अजमेर पत्र भेजना ।
 अरिस्तु ॥ कहिय मंत्र नह मनिय राय । लिषि कागद अजमेर पठाय ॥

सुनि बत्ती नृप भर किल कानं । राका चंद उदधि परमानं ॥ कं० ॥ ३३ ॥

कवि चंद का मत सुनकर पृथ्वीराज का दिल्ली

जाना निश्चय करना ।

दूहा ॥ सुनिय राज कवि चंद कथ । उर आनंद अपार ॥

पित मातुल मिहन नृपति । कियो सुगवन विचार ॥ कं० ॥ ३४ ॥

कैमास का भी यही मत हेना ।

थपिय मत कैमास सोइ । धरनि धरत्तिय तथ्य ॥

चढ़ि चहुआन सुसंचरिग । पुर दिल्लीय संपत्त ॥ कं० ॥ ३५ ॥

कवित्त ॥ सुनहि राज तूअर नरेस । एक बर बुद्धि विचारिय ॥

एक बनिक पाचार । सु वय अंगह तिह सारिय ॥

ताहि बाल वय नन्ह । सील हत दुखभ लीनौ ॥

क्रंस काल मन हुल्यौ । चित्त मति संत उपनौ ॥

अनंगेस राज तोअर प्रगट । उह सुमत्ति जिन लेइ उर ॥

मम भूमि मुक्कि राजंद सुनि । भ्रम धरा रखै न धर ॥ कं० ॥ ३६ ॥

दूत ने आकर समाचार दिया, पृथ्वीराज का धूम धाम से

दिल्ली की ओर यात्रा करना ।

दूहा ॥ कही दूत सारी विवरि । आदि अन्त जो बत्त ॥

चढ़ि चहुआन सु संचरिय । जुगिनि पुर लै बत्त ॥ कं० ॥ ३७ ॥

चौपाई ॥ लै सम सूर बन्धौ चहुआनं । जगत सूर देव प्रति मानं ॥

सगुन सकल संमुह बनि आए । गयौ राज दिल्ली समचार ॥ कं० ॥ ३८ ॥

गयौ राज दिल्ली परिमानं । मिले सूर अनंगेस निधानं ॥

देधि भूमि दिसि थान प्रामानं । राजा मुष बन्धौ चहुआनं ॥ कं० ॥ ३९ ॥

अनंगपाल ने दौहित्र से मिलकर बड़ा उत्सव किया और अच्छा

दिन दिखला कर दिल्ली का राज्य लिख दिया ।

दूहा ॥ मातुल पित भित्यो सु पहु । मिलि अति उच्छव कीन ॥

बासुर सुर रवि इंद बल । लिषि दिल्ली पुर देन ॥ कं० ॥ ४० ॥

पृथ्वीराज के राज्याभिषेक का वर्णन ।

कंद उधोर ॥ पयो चर पाइ पाइह अंत । दह जुग मत्त रत्त गुरंत ॥

भाषंत चंद कंद उधोर । प्रति षग कही पन्नम जोर ॥ कं० ॥ ४१ ॥

लिषि वर धटी महरत मत्त । दुज घन वेद विद्यव सत्त ॥

आसन हेम पट सुठार । मांनिक मुत्ति दुत्ति उजार ॥ कं० ॥ ४२ ॥

मंडित कलस विप्र विनोद । राजन अतिहि मानि य मोद ॥

धुनि वर विप्र मंडत वेउ । माननी सकल साजन तेउ ॥ कं० ॥ ४३ ॥

बज्जहि बहुल बज्जन भार । गांनहि मांन ग्राम सुतार ॥

नचि चिय पाच भरच सुभाव । गांनहि सिंघ विक्रम साव ॥ कं० ॥ ४४ ॥

सज्जित सघन सिंदुर दंति । कच सु पुचप सोभत पंति ॥

धवलें चटिय निरषति नारि । गौषन रंध्र सुराजकुं आरि ॥ कं० ॥ ४५ ॥

दमकत दसन हंस विराज । मानहु तडित अभ अग्राज ॥

वसनह रसमि रज्जित कोर । सजि सित सघन वासव जोर ॥ कं० ॥ ४६ ॥

राजत श्रवन रवनि ताटंक । राका मनहु सोभ मयंक ॥

सोभत लाल कुंडल कंति । मनु बधू इंद इंद मिलंत ॥ कं० ॥ ४७ ॥

चडि सु पडु सोहत दंति । मनो इंद ऐरापंति ॥

मांडत विप्र वेद सुवेद । जग्यहि जपति भेदहि भेद ॥ कं० ॥ ४८ ॥

पटहि पुत्ति पुत्त अरोहि । विंजत नृप्य चामर सोह ॥

मांडत मुकुट उत्त सुमंग । रचि बहु धात मौल सुरंग ॥ कं० ॥ ४९ ॥

दुति कलस करिय तास । मारिच कोटि इंद उहास ॥

धुअ सम मंडि कच अजेर । मनो चरि बाल बिंब सुमेर ॥ कं० ॥ ५० ॥

तिलकह जटित रंजित भाल । भाल चल करहि दीप उजाल ॥

चरचहि मुत्ति कुंदन थाल । पूरति सुपडु पूजति बाल ॥ कं० ॥ ५१ ॥

चरचति सुकर अनंगपाल । सोहति कंठ मोतिन माल ॥

दुज वर चवै असिष वेद । मांननि गांन तन सु अपेद ॥ कं० ॥ ५२ ॥

(१) मो०-मानत ।

(२) मो०-भाल ।

हय गय हथ दिखिय देस । समप्यहि पुत्ती पुत नरेस ॥
 षोडस दांन पूरन मांन । अप्पे विप्र धेन सुआंन ॥ कं० ॥ ५३ ॥
 थप्प विप्र गोव सुग्यांन । ग्रहन सुतप्प तप्पिय थांन ॥
 बद्रिय नाथ धरिय सु ध्यांन । ॥ कं० ॥ ५४ ॥
 तजि ग्रह मोह माया जाल । सज्जिय जोग बंचिय काल ॥
 रच्चिय बांन प्रस्थिह रूप । क्रमि रह तप्प तप्पित भूप ॥ कं० ॥ ५५ ॥
 हय गय तरुनि द्रव्य सुदेस । तिन वर तजिय राज नरेस ॥
 संवत ईस तीस हू अठ्ठ । चलि नृप हेम गहि कर कठ्ठ ॥ कं० ॥ ५६ ॥

कवित्त ॥ एकादस संवतह । अठ्ठ अगग हति तीस भनि ॥
 प्रथि सुरति तहां हेम । सुद्ध भगसिर सुमास गनि ॥
 सेत पष्प पंचमीय । सकल वासर गुर पूरन ॥
 सुदि मृगसिर सम इंद । जोग सद्धि सिध चूरन ॥
 पहु अनंगपाल अप्पिय पहुमि । पुत्तिय पुत्त पवित्त मन ॥
 कंद्यौ सुमोह सुष तन तरुनि । पति बद्दी सज्जे सरन ॥ कं० ॥ ५७ ॥

**शुभ लगन दिखा कर बड़ी तयारी और विधि के साथ
 अनंगपाल का पृथ्वीराज को पाट बैठाकर
 अपने हाथ से राज्य तिलक करना ।**

कंद पद्धरी ॥ सुभ लगन दीन दिखिय नरिंद । तुम करहु राज जनु पहुमि इंद ॥
 सुनि अवन सह आनंद अंग । राका रयन जनु दधि तरंग ॥ कं० ॥ ५८ ॥
 बुल्लाह फेरि दुज बर प्रमांन । थपि लगन मगन अमृत समांन ॥
 जिन वचन व्यास मिहै न कोइ । स हजह कहंत मुष सिद्ध होइ ॥ कं० ॥ ५९ ॥
 मंडप्य मंडि सुतधार बांनि । रचि व्याह छुआ हूकमनि मानि ॥
 उच्छव अनंत बाजंत बाज । जिन घुमर घोर रव गयन लाज ॥ कं० ॥ ६० ॥
 नृत्यंत नृत्य पातर प्रवीन । तिन रष्प अंग मुनि मन अधीन ॥
 सब नगर उड्डि गुड्डि अनंत । कैलास विपन बांनिक बसंत ॥ कं० ॥ ६१ ॥
 आरास सुव्रन बनिकाच कोह । देषंत नैन मुनि मगन मोह ॥
 बहुरंग व्रंन चिचित्त अवास । साला सुरंग गौषन उजास ॥ कं० ॥ ६२ ॥

अंगन अंग दिषि रहत भूलि । चिगुन निवास सुरवास फूलि ॥
 जाजिम पट जरकस जराव । अनीस दिषि जकि धरत पाव ॥ कं० ॥ ६३ ॥
 कुहंत तार सहजह सुरंग । भंगीन अंग भय अमत अंध ॥
 नव ग्रही वास सुर वास साज । तहां बैठि आनि अनगोस राज ॥ कं० ॥ ६४ ॥
 बुल्लाय सब्ब अप भर समान । द्विगपाल जोर तन तेज भान ॥
 लघु बेस तरुन के वृद्ध वीर । कइ वाच साच दजंग श्रीर ॥ कं० ॥ ६५ ॥
 इंद्रीन मोह जिन अंग भंग । संग्राम रंग जनु कषि पंग ॥
 मच्छर हुलास जिन अंग सोह । चिन जरत उठि सिर समय कोह ॥ कं० ॥ ६६ ॥
 नव रस विलास निय नारि रंग । अनिवरत रंग भीषम प्रसंग ॥
 षग दान मान परिमान जोइ । कवि कहै व्रंन जो आनि होइ ॥ कं० ॥ ६७ ॥
 कुल रीति नीति हिंदून राह । दासन्न दुसह दुभर दुवाह ॥
 अस बैठि भूप सब समा आनि । सुर इंद्र कोटि तेतीस जानि ॥ कं० ॥ ६८ ॥
 तहां धरिय सिंघासन कनक कंति । जिन हीर लाल पीरोज पंति ॥
 मानिकू चूनि मनिमुक्ति भंति । चक्रचोंध दिष्ट बुधि भूलि जंति ॥ कं० ॥ ६९ ॥
 नृमान लपित पुष्पह उपाइ । तहां बैठि भूप कुल सुद्ध आइ ॥
 आसन्न अस्तु तहां धोरय आनि । सुरजंपि तथ्य जै जया बांन ॥ कं० ॥ ७० ॥
 प्रथिराज बोलि बैठाय पाठ । धुनि करत वेद तहां विप्र ठाठ ॥
 बिय कंध पच्छ बिय चमर टार । रजि रूप जानि अश्विनि कुमार ॥ कं० ॥ ७१ ॥
 धरि कनक दंड सिर कच सीस । सिर चंद कंति कैलास ईस ॥
 गायंत गांन कामिनि उत्तुंग । कलयंठ कंठ सुर करत भंग ॥ कं० ॥ ७२ ॥
 मुसकत हसंत अँडत अलोल । सहजन कटाच्छ कंडत सलोल ॥
 रस भरिय एक आलस्य भंग । मुनि देषि अंग मति होत पंग ॥ कं० ॥ ७३ ॥
 इक अलसि फेरि अँडति अलोल । कंडंत असित सित अवन कोर ॥
 अंगन अवास सालानि चूरि । जालोन गौष भरि रहौ पूरि ॥ कं० ॥ ७४ ॥
 बंदीन ठाठ बिरदह बुलंत । नव रस विलास रसना तुलंत ॥
 सधि लग्न मुहूरत दुज प्रवीन । अनगोस राज तव तिलक कीन ॥ कं० ॥ ७५ ॥
 बजि सबद पंच बाजे बजंत । तिन सेर घोर दरिया लजंत ॥
 जित तित्त अति उच्छव रजंत । बरषाह पाइ जनु जग गजंत ॥ कं० ॥ ७६ ॥

दिल्ली के सब सर्दारों का आकर पृथ्वीराज को जुहार करना ।

ॐ भुजंगी ॥ तहां बैठयं राज दिखो प्रमानं । सिरं आतपचं सु दीनो निधानं ॥

बजै दुंदुभी भीत^१ आकास थानं । ॥ ॐ ॥ ७७ ॥

मिले आइ सब लोइ ते सूर बीरं । जिनै आदरं राइ दीनो सरीरं ॥

भक्तकेति ताजी किनकै करीनं । महामत्त दीसै सुमती सुभीनं ॥ ॐ ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ करि जुहार भट सुभट थट^२ । प्रजा महाजन आइ ॥

सब काहू मन यों भयौ । ज्यों जलचर जल पाइ ॥ ॐ ॥ ७९ ॥

बड़ी तयारी के साथ सजकर पृथ्वीराज की सवारी निकलना ।

सत हथ्यो दस सित हुअस । मानक मुत्तिय लाल ॥

सवा लष्य सोवन महु^३र । गनै और को माल ॥ ॐ ॥ ८० ॥

चढन जोग हथ्यो तबै । मंगवायौ मदमंत ॥

जनु घन वहल पवन बसि । बग पंकति ता दंत ॥ ॐ ॥ ८१ ॥

जो रावर जंजीर बसि । पवन न पावै जान ॥

अग्न मंडि डारै प्रबल । सायर अजा समांन ॥ ॐ ॥ ८२ ॥

कंद पहरी ॥ आहूठ इंद्र सम गज गहुर । ज्वालाति जोति जनु किरन सूर ॥

जरकस जराव औकार मंडि । सुरराज विपन सोभात पंडि ॥ ॐ ॥ ८३ ॥

रेसंम रास नारी बनाइ । घुघघर घमंक कंचन जराइ ॥

आहूठ राज आसन अनंद । सुर पुफ्फ विष्टि दुअ दीन बंदि ॥ ॐ ॥ ८४ ॥

लंगरी राव पछै अरोह । कर कनक दंड सिर कच सोह ॥

विय बांह चमर दर गाह धारि । रवि चंद किरनि जनु सिर पसारि ॥ ॐ ॥ ८५ ॥

तिन पच्छ पंति दंतीन साजि । सामंत सूर सब चढ़े गाजि ॥

तिन पच्छ तुरी तत्ते निवानि । बर पवन रुठ मन भए जानि ॥ ॐ ॥ ८६ ॥

कत्तीस बज्ज बज्जे सु बाज । विरदैत विरदै चंद राज ॥

अवधारि मध्य बाजार बीच । केसरि कपूर तहँ अगर कीच ॥ ॐ ॥ ८७ ॥

जित तित गिरंत जारीन फूल । कबि कलै कलै नवना अभून ॥

मन मगन मुक्त अखित उकार । जलजान मनो बसि ओस झार ॥ ॐ ॥ ८८ ॥

१) मो.-घोस ।

(२) क. को. ए.-भर सुभट सब ।

सब परज अरज प्रभु करत रह । इक भूमि ग्रहे धिर राज देह ॥
 नर नारि निरषि मनु मुदित मोह । लगि चंद सूर चिरचीव होह ॥ कं० ॥ ८८ ॥
 षट दरस दरसि आसिष्य देत । प्रथिराज बंदि सिर भेलि लेत ॥
 फिरि राज आइ अंदर अवास । जहं रहत मुग्ध मध्या सुवास ॥ कं० ॥ ८९ ॥
 सबमान कीन रनिवास राइ । जस मनि सत्त सत सिद्ध पाइ ॥ कं० ॥ ९० ॥

पृथ्वीराज का रनिवास में आना, रानियों का मंगलाचार करना ।

दूहा ॥ अन्य नृपति गन सुंदरिन । मधि अंगन रनिवास ॥
 दिष्यत क्वि कक्की सकल । मिल त्यंजन^१ दिन तास ॥ कं० ॥ ९१ ॥
 कनक किउ कुंदेरनह । भरत कि भरिता अंग ॥
 जलज नैन मुष कर चरन । जनु धरि अंग अनंग ॥ कं० ॥ ९२ ॥
 मधुर कंति मुष मधु मुदित । उदित अर्क आकार ॥
 तोरि चंन तरुनिय कहत । धरनि सच्चै तुम भार ॥ कं० ॥ ९३ ॥
 गाथा ॥ बनिता विनय सुकरियं । धरियं भ्रम केन अंगांयं ॥
 के क्वि क्वित क्लीयं । भइयं ववसि पिषि पिथ्यायं ॥ कं० ॥ ९४ ॥
 दिल्ली चौहान को देकर अनंगपाल का तीर्थवास के लिये जाना ।
 दूहा ॥ जुगिनिपुर चहुआन दिय । पुचीपुच नरेस ॥
 अनंगपाल तोअर तिनिय । किय तीरथ परवेस ॥ कं० ॥ ९५ ॥
 यह सब समाचार सुनकर सोमेश्वर का प्रसन्न होना ।
 कवित्त ॥ सुनि सोमेश्वर सूर । द्वियै बढिय आनंद सुष ॥
 अति अनंद त्रिमलय । धनि मो पुच दीह रूप ॥
 बर बाने बंधियै । मिले सामंत सूर सब ॥
 सरित समुह प्रमान । मिलिय आहत वीर सब ॥
 गोधूर लगन चढुन नृपति । बाल चंद कल नृपति हुअ ॥
 माननिय मान जानै सकल । नृप परतीत समत्त धुअ ॥ कं० ॥ ९६ ॥

छंद पद्धरी ॥ बंदहि विवेक अविवेक पाइ । विंभहि मुकुट सों मुकुट वाइ^१ ॥
नग नगन जरहि किरनी जराइ । जाने कि अगनि अनहिल वाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥

पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन ।

छंद चोटक ॥ भयभीत सुनंत चढत कला । जनिचै गुरदेव सुमंग मला ॥
बर बज्जि निसान दिसान धुअं । नृपराजसुकाज ज्यौ भ्रंम सुअं ॥ छं० ॥ ८९ ॥
प्रगटी जनु कामथ कोटि कला । करि उज्जल गज्ज सुमंत मला ॥
विसरे द्रगपाल दसों दिसयं । प्रगटी जनु काम कला ससियं ॥ छं० ॥ ९० ॥
रन नंकिय पाइ कमल भुअं । किति मित्त क्षिपाधिप चित्त धुअं ॥
प्रगटे प्रथुपालक पंच कलं । तिनमें प्रथुराज प्रथून बलं ॥ छं० ॥ ९१ ॥
परधानति भीम कुंआर तिनं । नृप सेवत जास सुपाइ गनं ॥ छं० ॥ ९२ ॥
दूहा ॥ अत दृत्तिय नृपराज तपि । दिल्ली छै घन साज ॥
जानिजै जंगल नृपति । मन उद्वि गुन पाज ॥ छं० ॥ ९३ ॥

आशीर्वाद ।

सित छ अग सामंत सजि । बजि विघोष सुनंद ॥
सोमेसर नंदन अटल । दिल्ली सुबास नरिंद ॥ छं० ॥ ९४ ॥
इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके अनंगपाल
दिल्ली दान नाम अष्टदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ९८ ॥



अथ माधो भाट कथा लिख्यते ॥

(उन्नीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का दिल्ली आकर रहना ।

कवित्त ॥ किय निवास प्रथिराज । आइ चहुआन वीर वर ॥
पुज्ज धाम जुगिनी समांन । बलि दीय थांन थिर ॥
दस दिसांन दस महिष । किन्न^१ सहु नयर दीन बलि ॥
अवर देव पुज्जै सु सेव^२ । नैवेद धूप मिलि ॥
पुज्ज सु दीय दानानि अथ । अथ पंषि दीय चंडरस ॥
कंपै सुसीम तहां राषि भट । जस जु प्रगग्यौ दिसि विदिस ॥ कं० ॥ १ ॥

शाहाबुद्दीन के कवि माधोभाट का गुण वर्णन ।

कंद भुजंगी ॥ कवी कब्बिचंदं सुमाधौ नरिंदं । सुरंतान भटं मधू माद इंदं ॥
कवी एक भंडी भिडिंभी प्रमानं । किते तार भंकार बिद्या सुजानं ॥ कं० ॥ २ ॥
विधं मंच पची पढै वेद बानी । तिनं भट कोनं जु पूजै गियानी ॥
पढै तर्क वित्तर्क चौसठि विद्या । तिनं रूप के भेद चौरास सद्या ॥ कं० ॥ ३ ॥
सतं मद्धि घटियं सुषोडस प्रमानं । इते कंद विच्छंद कंदे कलानं ॥
महा रूप रंगति गंगा प्रकारं । तिनं वाइकं भट बोलेत सारं ॥ कं० ॥ ४ ॥

माधो भाट का दिल्ली आना और यहां की शोभा पर मोहना ।

कंद चोटक ॥ दिषि भट सुथानक दिखि घरं । जमना जल राजत पापहरं ॥
तिह भ्रम सुतं त्रिप भित्त दर्ई^३ । सोइ दिखिय राजस राज भई^४ ॥ कं० ॥ ५ ॥
इंद पथ्य सु पूरब नाम घरं । इन काज सु पंडव जुद्ध जुरं ॥
चव पंथ पती पति पाप हरै । रवि की तनया तन तेज दुरै ॥ कं० ॥ ६ ॥

(१) मो-किल ।

(२) मो-पुज्जेति सेव ।

(३) मो-दिष्यतई ।

(४) मो-गई ।

दूतनी विधि देषत थान गयौ । अग लोक समान सु तेज तयौ ॥ कं० ॥ ७ ॥
दूहा ॥ इहि विधि दिषिय सकल द्रिग । पुर दिखी उनमान ॥

थान बीर चहुआन कै । प्रति कैलास समान ॥ कं० ॥ ८ ॥

पृथ्वीराज के इन्द्र के समान राज्य करने का वर्णन ।

इंद्र रूप दिखिय नृपति । इंद्रासन पुरि दिख ॥

सचीवा इकिनि सुव्रत । सुव्रत वृत्त गुन किछ ॥ ९ ॥

सुरपति सम सामंतपति । अति अनूप मति सार ॥

कनिष्ठ आन हिंदुवान सब । इह गरु अत्ते भार ॥ कं० ॥ १० ॥

इह चरित दिषित नयन । गयौ भट नृप थान ॥

मय मनुं सुमन सुरषि कै । रच्यौ प्रथी पर आन ॥ कं० ॥ ११ ॥

**माधो भाट का पृथ्वीराज के दरबार में भेद लेने का आना
और अपने गुणों से लोगों का रिक्ताना ।**

कवित्त ॥ दिषि भट माधौ नरिंद । राजधानी चहुआनी ॥

दूत भेद अनुसरै । दूत लग्यौ परिमानी ॥

हिंदु भाष षट रस । मेक पारसी उचारै ॥

जहां अकिर कोइ कहै । वान तैहीं विधि मारै ॥

भाषा कवित्त नाटिक सकल । गीत कंद गुन उचारै ॥

जानत तर्क वितर्क सब । राग बिरागह अनुसरै ॥ कं० ॥ १२ ॥

गाथा ॥ हिंदू हिंदू अवचने । रचने मेकाय मेक्यौ बयन ॥

जं जं जेम समुभक्तै । तं तं समुक्ताय माधवं भट ॥ कं० ॥ १३ ॥

भ्रमाइन कायस्थ का माधो भाट को सब भेद देना ।

कवित्त ॥ भ्रमाइन कायस्थ सुरंग । मिल्यौ वर भट प्रमान ॥

जु ककु भेद चहुआन । दियौ निहचै सुरतान ॥

विधम सुधम विसाल । कहौ निधम परिमान ॥

कगद मंत चलाइ । मंत मग्गी चहुआन ॥

दै लेइ दांन संभरि धनी । रोर सतम करभान वर ॥

मय मंत मंत चिंतान करि । द्यौ दांन इत्तोति नर ॥ कं० ॥ १४ ॥

पृथ्वीराज का माधो भाट को बहुत कुछ इनाम देना ।

दूहा ॥ दस दृथी मै मत्त करि । भर मंडन मुष अगग ॥

अरि घंडन मंडन फवज । लेइ बीर बहु बग ॥ कं० ॥ १५ ॥

कवित्त ॥ दस दृथी सन एक । एक कंजी कमानं ॥

कंजी तौनति पंच । वांन सोहै परिमानं ॥

दियौ साह सुरतान । भट दीने परधानिय ॥

कह सोती बर माल । कनक इक तोल सुजानिय ॥

दिय प्रथिराज सुराज बलि । द्रव्य सुवर चतुरंग बिधि ॥

माधव सुभट रंजे नृपति । चंद कही असुति समधि ॥ कं० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ हेमरु है गै अंबरह । सरसैं बुद्धि गंभीर ॥

सत्त सुमति आमित्त गति । माधौ भट सुवीर ॥ कं० ॥ १७ ॥

**बहुत कुछ दान देकर एक महीना तक माधो भाट को
दिल्ली में रखना ।**

कवित्त ॥ दियौ दान बर भट । मास रखै दिल्लीधर ॥

बहु भोजन प्रति स्वाद । इंद इंद्रास देव गुर ॥

मन खीनौ नृप दृथ्य^१ । भट नृप^२ इंद प्रमान्यौ ॥

गण दरिद जनमंत । चिंत्य चिंता घट भान्यौ^३ ॥

अणै सु दांन सामंत सब । सुदत मत्त वृत्तह सुधरि ॥

मै पूर पूर पूरन कबो । जा चांग्या भगी सुउरि ॥ कं० ॥ १८ ॥

दूहा ॥ जात जात जे जात है । गए गवन किन कीन्ह ॥

इत्तय बन पूरन नहीं । मत्ति गरुअ तन चीन्ह ॥ कं० ॥ १९ ॥

**बहुत सा दान (जितना कभी नहीं पाया था) लेकर
माधो भाट का गज़नी लौट आना ।**

अरिख ॥ जै सुदांन गज्जन पुर आयौ । इतौ दांन जनमंत न पायौ ॥

महादांन विद्या परकारं । दियौ राज^४ चौदांन विचारं ॥ कं० ॥ २० ॥

(१) मो-बरभट ।

(२) मो-नृप बर ।

(३) मो-जान्यौ ।

(४) मो-दान ।

माधो भाट का शहाबुद्दीन के दरबार में पृथ्वीराज के दिल्ली पाने आदि का वर्णन करना ।

कंद पड़री ॥ गरु अत्त मत्त कविराज राज । शृंगार हास्य अद्भुत विराज ॥
तिहि जाइ कीन नृपकिति बैन । तिम तिम सुहाय सुरतान चैन ॥ कं० ॥ २१ ॥
संभरिय वत्त उभरि उरत्त । सुरतान बेन गोरी बिरत्त ॥
मातुल्लव वंस चहुआन राज । दै गयौ सकल दिल्लीस काज ॥ कं० ॥ २२ ॥
चै गै भंडार बिन किति भूमि । क्ली बाज मार आवति कूमि ॥
दैवत्त करै इह मनुक लोइ । क्ली बाज जनम आवत सोइ ॥ कं० ॥ २३ ॥
अनगेस राज तजि तिथ्य जाइ । सामंत सूर वर मिले आइ ॥
अजहूँति सेन इक मनी नथ्य^१ । गोरी सहाब इह घात तथ्य ॥ कं० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ फुटिय वत्त प्रहास सब । वसि दिखिय चहुआन ॥
बंदिन माधो आय कहि । सम गोरी सुरतान ॥ कं० ॥ २५ ॥
चै गै दिखिय देस सब । अरु जु अबर द्रव अप्य ॥
सो सब दै चहुआन को^२ । अनंगपाल गय तप्य ॥ कं० ॥ २६ ॥

अनंगपाल के बनबास का वर्णन ।

लै चल्थौ संग निज तरुनि । दै दिखिय अनगेस ॥
मन वच क्रम बढ़ी चल्थौ । साधन जोग जोगेस ॥ कं० ॥ २७ ॥

यह समाचार सुनकर शहाबुद्दीन को बड़ी डाह होना ।

सुनत सटप्पट लगि मन । उर गोरी बर बीर ॥
पल पल घिन जुग जात जिय । बढिय बिषम पल पीर ॥ कं० ॥ २८ ॥

शहाबुद्दीन का क्रोध करके घोड़े पर चढ़कर लड़ने के लिये चलना, फौज की शोभा वर्णन ।

कंद भुजंगी ॥ चल्थौ मंगि सुरतान साहाब ताजी । जरं जीन अमोल साकति साजी ॥
बरं बासनं रत्त हेमं हमेलं । मनी मुत्तिमाना बनी लख जेलं^३ ॥ कं० ॥ २९ ॥

(१) मो-सथ्य ।

(३) मो-सेलं ।

(२) छ-सौ समय प्रियराज कूं ।

जरं हेम कृचं सुभं सोम सीसं । उवं लाल थंभं सिरं सूर दीसं ॥
 अगे लक्करी लाल दो सहस सोहं । जिनं आइ जक्की सहं कोइ कोहं ॥ कं० ॥ ३० ॥
 अगे साहि गोरी निसूरति घानं । लग्यौ बंदि माधौ पढै ब्रिहवानं ॥
 दिसा दाहिनी घानं तत्तार गोरी । दिसं घां घुरासांन रजि वांम जोरी ॥ कं० ॥ ३१ ॥
 उभै पुठि मम रेज मुलतांन घानं । सुतं साहि महमंद सोहित घानं ॥
 मुषं अगग बेतं उसे रन्न साहं । सितं चौर बांने सितं गज्ज गाहं ॥ कं० ॥ ३२ ॥
 कही बत्त गोरी तिनं सों सबांही । कहै जेब जब्बाव पुकंत सांही ॥
 अपं सेन सथ्यं सहं सूर सथ्यं । तिनं जाति बांने कहै कोन कथ्यं ॥ कं० ॥ ३३ ॥
 चले आइ सो सेषची मन्न थानं । हयं कंडि दरवार साहाव तानं ॥
 दरं रषि दरवन अप मभक्त आइ । सबै बोलि उमराति सब अप्य भायं ॥
 कं० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ ओर रोकि अप मभक्त गय । नमि पय सेष चिमन ॥
 अप्य प्रसंसिय विवह परि । बैठि पयंधरि पंन ॥ कं० ॥ ३५ ॥
 सीष सु पुच्छिय सेस पहुं । बोलि पंचदस घानं ॥
 आसन कंडिय अप्य तिन । दिय आदर सनमान ॥ कं० ॥ ३६ ॥

**शहाबुद्दीन का तातारखां आदि सरदारों का
 इकट्ठा करके सलाह पूछना ।**

कंद पद्धरो ॥ गोरी ततार गुरलज्ज भार । घुरसांन घानं मति सिंधुसार ॥
 निसूरति घानं जेहानं मीर । ममरेज घानं बल लाज नीर ॥ कं० ॥ ३७ ॥
 आजानं घानं सेरन बितंड । मुलतांन घानं मुहबत्ति बंड ॥
 मारुत्त मीर जमुनह सुमीर । साहाव घानं गरुअन गंभीर ॥ कं० ॥ ३८ ॥
 रुस्तंम घानं पल संक जास । गज्जनी घानं रिन साहि आस ॥
 गजनीय लज्ज गुर तेज गंज । महमंद मीर अरि तेज भंज ॥ कं० ॥ ३९ ॥
 गोरीय व्रंन काली बलाइ । मृगराज जेम मृग अरि पलाइ ॥
 साहब सलाम सब करी आइ । चीमन सेष नमि परिस पाइ ॥ कं० ॥ ४० ॥
 बट्टे सु सब कर कर समुठि । धिन एक बैठि साहाव उठि ॥
 गयौ सेष वाग तरु चंप नूप । बैठक तथ्य चौरा अनूप ॥ कं० ॥ ४१ ॥

आसंन मंडि बैठो सु साहि । बैठकक दई उमराव ताहि ॥
 उच्चस्यौ बीर गोरी सु संच । पुच्छिय जु सब मंचह प्रपंच ॥ कं० ॥ ४२ ॥
शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के दिल्ली पाने का समाचार
कहकर उसके जोर तोड़ने का मत पूछना ।

कवित्त ॥ कहिय साहि साहाब । पांन तत्तार सुनौ सब ॥
 बसि दिखिय चहुआंन । कही माधौ जु चंड कव ॥
 अनगपाल गय तप्प । देस है गौ सु द्रव्य सह ॥
 सो समपि चहुआंन । अप्प सज्ज्यौ सुबंन रह ॥
 अरि मत्त अग बर जोर हुअ । अरु लंभी चतुरंग श्रिया ॥
 सधियै बैगरन घेत पल । जौ लौं जोर न बंधिया ॥ कं० ॥ ४३ ॥

तातारखां का सलाह देना कि दिल्ली पर चढ़ाई करना चाहिये

तब कहै पांन तत्तार । साह साहाब चित्त धरि ॥
 अरि अनंत बर जोर । याहि सधियै सनइ करि ॥
 तब दिख्यौ दल जोर । सूर सामंत स्मथ्यं ॥
 अन्त तेज मत अन्त । बेग रन बहै सुहृथ्यं ॥
 दल जोर जोर भंडार घन । करि सुचित्त भर एक मन ॥
 भरहृथ्य जीव दिखिय सहर । मम करि अरि सइन सयन ॥ कं० ॥ ४४ ॥

तातारखां की बात का सब लोगों का सकारना, सुस्तमखां का
मंत्र देना कि जब तक सेना तयार हो तब तक एक दूत
दिल्ली जाय सब समाचार हिंदुओं के ले आवै ।

कंद पइरी ॥ पुरसांन पांन कहि सुनि ततार । संची सु बत्त जंपौ सुठार ॥
 दल सेलि बेग सहौ सुमंत । बंधीय बंधान अरि करिय अंत ॥ कं० ॥ ४५ ॥
 जेहांन बीर जंपे तमंकि । तुम उरौ मीच कुटौ न अंक ॥
 सडियै दोरि करि रुचु सथ्य । नन होइ कांम दख्यौ सुहृथ्य ॥ कं० ॥ ४६ ॥
 जंभी सु पांन निसु रत्ति तब्ब । बिन बंध वत्त डिंभ रु गब्ब ॥
 चचरन देषि चहुआंन तुह । जंपौ सबत्त मंतह गुरंम ॥ कं० ॥ ४७ ॥

उच्चरिय पांन साहाब सक । वै वृद्ध भए भय बुद्ध जक्क ॥
 भंषियै जुद्ध पावक्क पाइ । बंध्यौ विराम ना निजरि आइ ॥ कं० ॥ ४८ ॥
 बल तुच्छ अरिय सद्धौ सु साहि । पल दुष्ट जोर बंध्यौ न जाइ ॥
 मुलतांन पांन हसि कहिय बत्त । मम रेज पांन दावौ विगत ॥ कं० ॥ ४९ ॥
 पंजाव गरुव कंझो गुमान । धन मह मंत वयची प्रमान ॥
 कालिंग पुलै जिम जुध पुलाइ । गरु अत्त साहि साहाब जाइ ॥ कं० ॥ ५० ॥
 उक्कसे पांन सेरन वितंड । विकसे कहिय कर षग मंड ॥
 गोरिय अवनि तुम गनौ गति । भय भीत मृत्य दीसहि सुमति ॥ कं० ॥ ५१ ॥
 बिनसंत काज क्यो पातिसाह । पूछै सुमंत अच्छै सुभाह ॥
 जंप्यौ बत्त काली बलाइ । मो विना सेन गोरी पलाइ ॥ कं० ॥ ५२ ॥
 काल ग्रहंत मन आइ मुभक्त । मंड्यौ जुद्ध मो विन अबुक्त ॥
 तमस्से मीर तब फते जंग । पुज्जेन सेन पंषी बुलंग ॥ कं० ॥ ५३ ॥
 सम वरन साज सज्जै न संग । हरि तेज तेज दष्यै अभंग ॥
 अरि सार जेत जानौ न भेव । उच्चरौ मंत गुन सुवर गेव ॥ कं० ॥ ५४ ॥
 तब मीर जमन गज्जनी पांन । महमुह मीर मारुत्त पांन ॥
 उठे सुच्चार तम तेग भारि । बुल्ले बिहँसि मत्ते विचारि ॥ कं० ॥ ५५ ॥
 थिर जुद्ध मंत रच्चौ सु सब्ब । बैठनह सूर नहि ध्रंम अब्ब ॥
 कीयौ हुकंम साहाब जब्ब । ग्रहि तेग हनै प्रथिराज तब्ब ॥ कं० ॥ ५६ ॥
 रुस्तंम कही साहाब अज्ज । मुक्कलौ दूत जुध करौ कज्ज ॥
 लषि आवै चर सु हिंदू चरित्त । तब लगि सेन सज्जौ सुदत्त ॥ कं० ॥ ५७ ॥
 मंथ्यौ सुमंत सब चित्त सार । मंझ्यौ सुमंत बर चरन चार ॥
 रुस्तंम वाह धरि चवत दीठ । बुल्लाइ सिंघ बर चर गरीठ ॥ कं० ॥ ५८ ॥
 कंद भुजंगी ॥ स्वयं भेद प्रकार भेदं प्रमान । सुनौ पांन तत्तार पांन सुमान ॥
 स्वयं साहि साहाब साहाब सूर । मनो भेद बंभान कुट्या कहर ॥ कं० ॥ ५९ ॥
 घानं तेज तेजं प्रकारंत न्यारे । कही कब्बि चंदं उपमा उचारे ॥ कं० ॥ ६० ॥
 दूहा ॥ कहत चंद बर भट फुनि । सकल कथा परिमान ॥
 जु कक्क भट माधौ कही । सम गोरी सुरतांन ॥ कं० ॥ ६१ ॥

कंद पद्मरी ॥ उच्चल्यौ चंद बरदाइ मंडि । सुरतांन घांन आरज्ज कंडि ॥

बर बीर धीर तत्तार पंडि । काली बलाइ सेरन वितंडि ॥ कं० ॥ ६२ ॥

हबसी हुजाब पुरसांन बंध । पीरोज घांन निज बंध सिंध ॥

पर दार पौरि दस दस प्रमांन । राजन अनेक भर सुभि थांन ॥ कं० ॥ ६३ ॥

तिन ब्यांठि सभा दिष्पी नरिंद । मनों जामिनी तेज रवि सवर इंद ॥

बंदै न चंद तत्तार घांन । पीरोज बंध हबसी समांन ॥ कं० ॥ ६४ ॥

पुरसांन घांन जल्लाल बीर । सेरन वितंड माधौ सरीर ॥

हुस्सेन सूर भट्टी प्रकार । साधै जु साधि ज्यौ चंद सार ॥ कं० ॥ ६५ ॥

बैरंम घांन जमनेस जोर । जमजोर बहै तिन बल सुथोर ॥

पीरोज घांन माची मरह । सोभंत तेज ससि बर सरह ॥ कं० ॥ ६६ ॥

उन्नेग घांन गाभरु मीर । बेधंत सत्त धातह सु तीर ॥

तुम तेज घांन ममरेज मीर । पुरसांन लज्ज निज मुष्य नीर ॥ कं० ॥ ६७ ॥

फतूच मीर तुंगी तुरांन । पुज्जै न तास तम तेग पांन ॥

नव नेह घांन मैदान मीर । रुम्मी रुद्धिख तम तेग धीर ॥ कं० ॥ ६८ ॥

ढिल्ली बढाल ठाइन प्रकार । संभरे मुष्य भए रत्त भार ॥

पारषि रष्य पावंग जांन । जानहि जु स्वांमि भ्रम प्रमांन ॥ कं० ॥ ६९ ॥

फिरि पूछि जाइ इत सबनि कह । उच्चरै बत्त चहुआंन थह ॥

भय भीत रीत माधव सुभह । हेां देषि आइ इह तथ्य घह ॥ कं० ॥ ७० ॥

सोमैस सूर तस पुत्तमांन । मारन हमीर जाने गियांन ॥

दातार ओर पोहचे न दान । दै गयौ अनंग दिखी निघांन ॥ कं० ॥ ७१ ॥

बर राज अनंग तिथ्यह जु जाइ । दै गै सु लच्छि दोहित पाइ ॥ कं० ॥ ७२ ॥

माधव भाट की बात पर विश्वास न करके शाह का दूत भेजना ।

दूहा ॥ साह बदी सुरतांन तब । माधौ कछो न मांन ॥

भट्ट जाति जीहं गुनौ । दूत सु पठय प्रमांन ॥ कं० ॥ ७३ ॥

दूतों के लक्षण का वर्णन ।

कवित्त ॥ कं जांनी कंमांन । अंक रेसम प्रति भासै ॥

दस औरांक तिय तेन । साधि गोरी मुकि जासै ॥

दूत भेद अनुसरै । लषि हिंदवानं चरितं ॥

मो मत्तह सुरतांन । थांन मो कलि दस रत्तं ॥

दूत के दूत मंचह सुपन । सब सु चरित अंषिन लषै ॥

उच्चरै वत्त सांची सुवृत्त । सुविधि विधि अमृत भषै ॥ कं० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ इन मुक्कलि उन सथ्य वर । दिसि दिखी परिमांन ॥

माधौ भट्ट सु तथ्य कहि । दूत पठय सुरतांन ॥ कं० ॥ ७५ ॥

चाहुआंन सुरतांन वर । करन जुद्ध परिमांन ॥

मिलन पुब्ब पक्किम हुतै । बीरा रस उत्तांन ॥ कं० ॥ ७६ ॥

कवित्त ॥ सें बुझै सुरतांन । अप्प गज्जन बलवानं ॥

आषेटक हम्म करहिं । दूत मुक्के अगिवानं ॥

जु कक्कू भेद अनुसरै । तत्तग्यांनं परिजानिय ॥

भय भयंक भ्रम षंड । काल कलहं गुन ठानिय ॥

जं कहौ जाइ मच्चमंद षां । सेरन षांन वितंड वर ॥

हवसी हुजाव मुक्कलि नृपति । सुवर बीर मत्ते गहर ॥ कं० ॥ ७७ ॥

भेद दुग्ग भंजियै । भेद दुरजन धरि छिज्यै ॥

भेद भूमि अनुसार । भेद दिखी धरि लिज्यै ॥

भेद पष्प मत नश्य । भेद विन कंक न होई ।

भेद गुरुअ गुरु ग्यांन । भेद विन तात न जोई ॥

अवृत्त भेद वर रंजियै । गुन सज्जन सज्जन बरन ॥

सुरतांन दीन साहाव दी । भेद साहि कीजै गवन ॥ कं० ॥ ७८ ॥

गाथा ॥ घुरसांनं प्रति षांनं । पीलं नथ नथियं पानं ॥

पुंगी नथ्य प्रमानं । वरचं नथ्य सस्त्रयो बलयं ॥ कं० ॥ ७९ ॥

औ गजनो नरिंदं । बुल्ल्यौ बीराइ बीर साहसं ॥

विन जगगत जग्गायं । तौ जितै निश्चयं पल्यं ॥ ८० ॥

दूहा ॥ विन जगगत जो जगियै । षग्ग साह विन चाह्य ॥

मेक्क पिच्छ किर सान गुर । विवरि गुरज्जन साथ ॥ कं० ॥ ८१ ॥

पातसाहि विची सुक्किति । मति रष्यन परिमांन ॥

जौ भंजै साहान तूं । कहै दूत सोइ ठांन ॥ कं० ॥ ८२ ॥

अरिह ॥ माधौ बत्त सुसत्त प्रमानिय । तऊ दूत मुक्कलि गुन ठानिय ॥

नव नव नव घन मध्य प्रमानं । कछो मंत गोरी सुविधानं ॥ कं० ॥ ८३ ॥

दूत भेजकर अपनी सेना की तयारी करना ।

कंद पद्दरी ॥ करि मंत साह गोरी अचंभ । आरंभ चक्र भुज दंड अंभ ॥

जल थल तिथ्यलत करि प्रमानं । उनस्यो^१ मेक जुन मध्य भांन ॥ कं० ॥ ८४ ॥

गगन मगन पुर पेह काय । सुभै^२ न भांन मिटि पंथ वाय ॥

अरुभे सुकमल^३ संकुचि सकोर । रुठी सु बदन अलि किसल थोर ॥ कं० ॥ ८५ ॥

चक्रवी चक्र चक चकी भूमि । रस ताल वितल तल कट्टि तूमि ॥

तिन बननि^४ तुहि कर करत नीर । प्रज्जरै पंथ साइर गंभीर ॥ कं० ॥ ८६ ॥

तन^५ करै पवन गवनं प्रकार । उरभंत धजा गज चलत लार ॥

बाजत टमंक तबलं कठोर । नाचंत ईस जुन गंग सार ॥ कं० ॥ ८७ ॥

सुभै^६ न नैन दिसि विदिसि थांन । मन क्रम सुद्धि नठी प्रमानं ॥ कं० ॥ ८८ ॥

दूहा ॥ चाहुआंन चतुरंग दिसि । सजि सुमंत साधव्व ॥

जुककु मंत गुन उच्चरिय । वर कोविद माधव्व ॥ कं० ॥ ८९ ॥

मति माधव कोविद सुबर । कही बत्त गुन जुत्त ॥

तऊ साहि गोरी नृपति । फेरि मुक्कले^७ दुत्त ॥ कं० ९० ॥

बोलि दूत चव^८ अग लिय । दिय कगगर धृमांन ॥

सुद्धि सिंध अरु सोव वर^९ । दिय इनांम अब्बांन ॥ कं० ९१ ॥

शाह का फर्मान लेकर दूत का दिल्ली की ओर जाना ।

चल्यौ दूत दिल्ली दिसा । लिए साह फुरमान^८ ॥

भेष सुसोफिय तज सजि । चित्त अचिंतिय मांन ॥ कं० ॥ ९२ ॥

(१) को-उभस्यौ ।

(२) मो-ततकमल ।

(३) मो-बनह ।

(४) छ-नन ।

(५) मो-मुकहिय ।

(६) मो-बचन ।

(७) मो-सब ।

(८) मो-में यह तुर नहों है ।

दूत को दिल्ली पहुँचकर अनंगपाल के बनबास और पृथ्वीराज
के न्यायराज का समाचार विदित होना ।

गाथा ॥ दिल्ली दूत सपत्तं । फिरि फिरि देखत न्याव नृप नैरं ॥

यद्य धृमांन सुग्रेहं^१ । दिन्नं वर पच ह्य धृमानं ॥ कं० ॥ ८३ ॥

षवरि ऋष धृमानं । दिन्नं नृप आदि सूर सामंतं ॥

अनंगपाल तप सरनं । दिल्लीय दीन राज प्रथिराजं ॥ कं० ॥ ८४ ॥

भ्रमान कायस्थ का सब समाचार सामंतों के रहने
आदि का दूत को बतलाना ।

कवित्त ॥ विवरि षवरि धृमांन । कही चहुआंन सेन वर ॥

पष्ये सत्त राजानं । सुवास कीन पिथ्यपुर ॥

पष्य पंच कैमास । राव चावंड पष्य चव ॥

वसि वित्ते दिन अठ्ठ । पष्य लोचानं रसे सब ॥

चहुआंन कन्ह पष एक हुअ । वसिय बास दिन पंच हुअ^३ ॥

सामंत अवर आगम इकै । सबन^४ वास चहुआंन रय ॥ कं० ॥ ८५ ॥

भ्रमान का सब समाचार लिखकर भेजना ।

दूहा ॥ लषि करि इह बंधी विवरि । राज धृम्म चहुआंन ॥

दिय कगार तसु दूत कर । वर कागर भ्रमान ॥ कं० ॥ ८६ ॥

सब समाचार लेकर दूत का लौटना ।

षवरि सबै लीनी नृपति । चलिय दूत निज मग ॥

आतुर पति गज्जन नमिय । सौफी वे सह जग ॥ कं० ॥ ८७ ॥

अरिस्त ॥ दूत आइ दिल्ली परिमानिय । राजधान जुगिनि पहिचानिय ॥

निगम बोध दिष्यौ चहुआंन । रहे षट दीह फिरे तिन थानं ॥ कं० ॥ ८८ ॥

दूत ने छ महीने रहकर जो बातें देखी थीं सब शाह को जा सुनाई ।

दूहा ॥ रहे दूत षट दीह वर । लषि चरित षट मास ॥

जु ककु चरित षट मास कै । कहै विवरि सुदर्भास ॥ कं० ॥ ८९ ॥

क्रम ढिल्ली ढिल्ली बयर । ढिल्ली नृप चहु आन ॥
 गौ तीरथ बन सज्जिकै । प्रगटि दिसांन दसनां ॥ कं० ॥ १०० ॥
 प्रथीराज चहु आन बर । लै ढिल्लीपति मंद ॥
 जानत सकल जिहनां बर । बजि निर्घोष सुदंद ॥ कं० ॥ १०१ ॥

**शहाबुद्दीन का लड़ाई के लिये प्रस्तुत होना,
 उमरावों की तयारी का वर्णन ।**

कवित्त ॥ साह बदीं सुरतनां । आइ गज जुड़ निरषिय ॥
 अगड मय्य चौगांन । बीस गजमत्त सज्जकिय ॥
 सहस एक गज भुंड । मंडि मंडल अविधानिय ॥
 तहां गोरी बर बीर । दंति चक्कै दिन मांनिय ॥
 गज एक सेत निज रोहि बर । चढिय पिठु तत्तार षां ॥
 सुरतांन षांन निसुरत्ति षां । चढि सुगज बाई रुषां ॥ कं० ॥ १०२ ॥
 दिसि दष्यिन साहाब । साहिजादा चढि दंतिय ॥
 अबर सब्ब उमराव । चढे गज बंधि सुपंतिय ॥
 लाल भंड सम सिंघ । हेम रज्जंत साहि सिर ॥
 चैदल पैदल अबर । गनिक को गनै गहब्बर ॥
 महमंदचंद महावत्त सौं । बोलि साह पुर मांन दिय ॥
 गज भूत सिंघ गज मुष्य है । आनि सुअगडह अडु किय ॥ कं० ॥ १०३ ॥
 दूहा ॥ इहा कहत तिन चर चवन । दिश दुवाह सुरतान ॥
 निरषि साह उची निजरि । बे बुल्ले पुरसान ॥ कं० ॥ १०४ ॥
 बारुन बर बानै विविधि । असु औनप आलोह ॥
 ठाढा कोतूहल कवल । करत दांन नवर लोल ॥ कं० ॥ १०५ ॥
 कंद उधौर ॥ मंडित उत्तंग उत्तिम कंद । मूरध सोभा सोमह नंद ॥
 कच विसाल बर दुति सीस । बाल विसाल उडगन ईस ॥ कं० ॥ १०६ ॥
 आसन सिंघ मंडौ राज । सामंत सूर भर करि साज ॥
 राज चहुआन प्रथी नरेस । मंडिय चंद देव सुरेस ॥ कं० ॥ १०७ ॥

मास बित्तिय मंडी रेर । नह निसांन थांनह भेर ॥
 है गैगुंजि नाना भंति । कच विराज कचनि भंति ॥ कं० ॥ १०८ ॥
 मिलिभर जहां तहां भरि भीर । सूर समथ्य जुद्ध सधीर ॥
 जित तित दिषि रंग सरंत । आगम जांनि फूलि बसंत ॥ कं० ॥ १०९ ॥
 बसन विराजि दसन कुआरि । लोल कलोल सुंदर नारि ॥
 गावति हसति अलि अलि रासि । दग दुति कमुद किरनि प्रकासि ॥ कं० ॥ ११० ॥
 जब लगि बढै वीर जराइ । तब लगि गहिन साहि बधाइ ॥
 जब लगि बढत बर जर जांम । तब लगि करन मत्तन कांम ॥ कं० ॥ १११ ॥
 सुनि उर लगि अगि उदार । परति न षिनक चैन दुवार ॥
 बह चर चवत चारु बिचार । सिर दह वार नंमि उदार ॥ कं० ॥ ११२ ॥

दूत का ब्योरेवार दिल्ली का समाचार कहना ।

दूहा ॥ सुनत बत्त पुरसांन^१ बर । बोले दूत हजूर ॥
 पुकै साहि सुचित्त करि । विवरि षवरि संखर ॥ कं० ॥ ११३ ॥
 बचनिका ॥ सुरतांन सु विहांन सुखतान सादाब दीन ॥
 करि करतार कि जोर । जासु कित्त जै अरु दल की जोरि जोरि ॥
 जनु दरियाव की हिलोर । मिलते सेां मुह जोरै ॥
 अन मिलत सेां पल पंचि कठोरै^२ । सुरतांन सुचिर दुतांन ॥
 आनि कही कायथ धृमांन । दिल्ली की षवरि विवरि लिषि दीनी ॥
 अलगपाल तूंअर बन बास लीनी ॥
 देस है गै कोस पुची पुच प्रिथीराज कै दीनी ॥
 पष्य सत हुए वास कीनें । तरुनि पुच परिवार सुष चैन ॥
 पष्य पञ्च कैमास कों भए आएं । मास दून दिन अठु भए चावंड बसाएं ॥
 तीन मास लोहांन बीते । बीस रोज कन्ह चहुआंन हूते ॥
 और सब सामंतकी बसही आंनी । कितेकों आंननै मांनी ॥
 चौहांन वास की आग्या दीनी । सब सामंत सीस नांमि लीनी ॥
 रोज बाईस तिस पर हमको राह लगे । पडि पतंग जगि सानगे ॥

(१) मो.—सुरतांन ।

(२) मो.—पंचि कै तोरै ।

जबलुगि न बैरी जराइ । तब लुगि साह मारि करि आइ ॥ कं० ॥ ११४ ॥
 कंद पद्मरी ॥ उच्चल्यौ दूत प्रति गज्जनेस । चहुआन तेज दिष्यो असेस ॥
 अनगेस राज तजि तिथ्य जाइ । सामंत सूर सब मिले आइ ॥ कं० ॥ ११५ ॥
 संकुरे सकल भुम्भिया भयान । सेवंत आन दरबान थान ॥
 इक भजत भोमि तजि गहत गेह । निय नारि रंमि सक्के न नेह ॥ कं० ॥ ११६ ॥
 इक मिलत आनि तजि एंड अंग । पल पग पंडि वेसे जु जंग ॥
 अजहूं सुसेन इक मनी नथ्य । गोरी सहाब इह घत तथ्य ॥ कं० ॥ ११७ ॥

संवत् ११३८ में पृथ्वीराज का दिल्ली पाना ॥

दूहा ॥ ग्यारह सें अडतीस भनि । भौ दिल्ली प्रथिराज ॥
 सुन्यौ साहि सुरतान वर । बज्जे बज्जि सु बाज ॥ कं० ॥ ११८ ॥
 अरिस्त ॥ ग्यारह से अडतीस मानं । भौ दिल्ली नृपरा चहुआनं ॥
 विक्रम बिन सक बंधी सूरं । तपे राज प्रथिराज कहुरं ॥ कं० ॥ ११९ ॥
 कलिजुग अरु दापर की संधी । साको भ्रंम सुतह बल बंधी ॥
 ता पच्छै विक्रम वर राजा । ता पच्छै दिल्ली नृप साजा ॥ कं० ॥ १२० ॥
 कहि चरित्त दिल्ली परिमानिय । सब गुन साह बिबेकत जानिय ॥
 सबै चरित्त कहे प्रति भटं । सोइ दूत अप्पै प्रति घटं ॥ कं० ॥ १२१ ॥
दूत का पृथ्वीराज का चरित्र कहना, शाह का

खुरासान खां आदि से मत पूछना ।

कंद द्वैअप्परी ॥ दूत आइ दिल्ली प्रतिथानं । हेम सु है गै मुद्रित मानं ॥
 तपै राज दिल्ली चहुआनं । नाकरधू नागेन्द्र प्रमानं ॥ कं० ॥ १२२ ॥
 एक बराह थिरं बेराहं । सकल हत्य सुरराज समाहं ॥
 को अग्या भंजै नर विराजं । अप्प लज्ज सम सामंत लाजं ॥ कं० ॥ १२३ ॥
 मुष कुहै जो बैन प्रमानं । तो घल्लै अगि जुलित नथानं ॥
 सुनौ साहि गोरी सुरतानं । एक अंग एक मन ठानं ॥ कं० ॥ १२४ ॥
 पुब्ब लोइ दालिद्री नासं । सबै सुक तब टंक विलासं ॥
 दंड हथ्य जोगिंद सुदिथ्यौ । नहि सुदंड प्रज्जा सिर पिथ्यौ ॥ कं० ॥ १२५ ॥

दुज उचिष्ट नह उष्टं अस्सी । कीन लंक कोइ कीन न भस्सी ॥
 कठिन ककुच चिया प्रकारं । कोइ न कठिन दुअन अधिकारं ॥ कं० ॥ १२६ ॥
 कसै हेम सोनार सुबीरं । कोइ न कसी दरिद्र सरीरं ॥
 भै निरभै संसार सुजानं । सुनि सुनि राज वृत्त सुरतानं ॥ कं० ॥ १२७ ॥
 मोहत अहत सुहत गुन जानी । कहै दूत बिधि विधि परिमांनी ॥
 सोहै मभ अहत अभिलाषं । सोज प्रवाह सुभंत बैसाषं ॥ कं० ॥ १२८ ॥
 यों आवै बहै कवि मन्त्रं । इतौ राज अप्यै प्रति दिन्नं ॥
 सेत सुमंत सुमंतह सारी । भो मुष मंद मंद अभिसारी ॥ कं० ॥ १२९ ॥
 यों जंपिय चहुआन सुमंतं । त्यों अभिलाष गई मति तंतं ॥
 बोलि षान तत्तार प्रकारं । कहै मंत सो किज्ज सारं ॥ कं० ॥ १३० ॥
 अन्नंगाल गौ तिथ्य सुनिज्जै । चाहुआन दिखी प्रति रज्जै ॥ कं० ॥ १३१ ॥

तातार खां का दिल्ली पर चढ़ाई करने की सलाह देना ।

दूहा ॥ कहै षान तत्तार वर । अहत चरित सुनंत ॥
 जे चरिच दिखिय नृपति । कहि गोरी गुनमंत ॥ कं० ॥ १३२ ॥
 कवित्त ॥ कहै षान तत्तार । सुनहि गोरी सुरतानं ॥
 मोहि मत्त जो किजियौ । सजियै सेन परमानं ॥
 कही बत्त माधौ सुभट । सोइ लिषि कायथ कगर ॥
 सोइ दूत कहि बत्त । सुत बोलैं न भट वर ॥
 धरमान नाम काइथ सुघर । तेनु चरित लिष्ये सबै ॥
 अप्यै सुदृश्य बंदीन ते । सुहत बीर बीरह तवै ॥ कं० ॥ १३३ ॥

तातारखां का मत मान कर सुलतान का सेना

सजने के लिये आज्ञा देना ।

दूहा ॥ मानि मंत तत्तार वर । मति गोरी सुरतान ॥
 लिषि धरमानह कगरह । सुविधि विद्धि परिमान ॥ कं० ॥ १३४ ॥
 गाथा ॥ माधवं कोविदं भटं । गीतं काव्यं रसं गुनं ॥
 नटं चिचं मद्या विद्या । पिंगलं भरहं तथं ॥ कं० ॥ १३५ ॥
 कंद सोतीदाम ॥ निरंजन भट सुमाधव वीर । कही तिन बत्त सुसत्ति सधीर ॥
 इहै कहि मत्त सुमत्त प्रमान । सजी चतुरंगिनि सेन निधान ॥ कं० ॥ १३६ ॥

कवित्त ॥ सेन साजि चतुरंग । लिषे कगगर परिमानं ॥

थानं थानं प्रति जानं । साहि कट्टे फुरमानं ॥

आइ सेन सजि थह । सकु सवै उमरावं ॥

चठिचै कंधै भूपटि । जानि उल्लथौ दरियावं ॥

विधि रूप दैव गोरी नृपति । गरुअ मत्ति भंजन सयन ॥

तत्तार षानं पुरसानं षां । करे मत्त सच्चे वयन ॥ कं० ॥ १३७ ॥

गाथा ॥ सुनि श्रवणं चर वत्तं । बज्जानं घाव बीसानं ॥

निज चै वर आरोहं । चठियं सजि गज्जनी साहं ॥ कं० ॥ १३८ ॥

कहि ततार गहि बगं । बसो क्करोज अजर हो ग्रेहं ॥

रोज पंच मिलि सयनं । करि सुबसि सिंघ चहुआनं ॥ कं० ॥ १३९ ॥

कहिष साहि वर वत्तं । सुनि तत्तार सह तुम साजं ॥

अरि आघात समर्थ्यं । सडि सुसिद्धि निड कज्जायं ॥ कं० ॥ १४० ॥

शाह की सेना का धूम धाम से कूच करना ।

कंद पडरी ॥ चठि तमकि चळ्यौ गोरी सहाव । उल्लथ्यौ जानि सायरन आव ॥

पुठि प्रवाह मिलि चलिग सेन । विधि विधि प्रवाह सर भरि जलेन ॥ कं० ॥ १४१ ॥

द्वादसह कोस किन्नौ मुकांम । डेरा सुदीन नारौल गांम ॥

मिलि पुठि आइ सब सेन भार । है लष्य मीर गरुअत्त गार ॥ कं० ॥ १४२ ॥

बाजिच बीर बज्जत बिसाल । नारह नंचि तिन भुकुटि ताल ॥

विक्ती चियाम उगग्यौ सूर । दल चळ्यौ सत्त जनु सिंधु पूर ॥ कं० ॥ १४३ ॥

संक्रमन सेन हूअौ हुलास । चलि विषम सुषम देराह भास ॥

घुर धूरि पूरि धूं धरिय भांन । गहवर सुवत्त सुनियै न कांन ॥ कं० ॥ १४४ ॥

दर कूच कूच उत्तरिय सिंध । दल विषम वृत्त उर साहि विड्ड ॥

किन्नौ मुकांम आवार आर । डेरा सुदीन दल उंच ठार ॥ कं० ॥ १४५ ॥

भंडे अनंत गडि विविध रंग । फुल्ल्यौ वसंत बनराइ चंग ॥

चर चले धरनि दिखी सुथानं । दल कचै चरित पुरसानं ॥ कं० ॥ १४६ ॥

दूहा ॥ कचै चरित सुरतांन सौं । जे देषे तिन दूत ॥

घुरि निसानं भद्रव भरिय । इम दिष्यिय अदभूत ॥ कं० ॥ १४७ ॥

कंद भुजंगी ॥ घुरै नह नीसांन उगंत सूर । बरं बीर बाजिच बज्जे करुरं ॥
 घनं पछरे बाज दंती सद्यन् । दलं रुज्जि सन्नाहयं अल्लदन् ॥ १४८ ॥
 रहियं पैज भरं हों कठु साहं । तहां चौर मौरं गुरं गज्ज गाहं ॥
 तहां बिहियं दंति जमत्त मत्तं । तहां कच रंगं चियंगे टरंतं ॥ १४९ ॥
 तहां बीर माही उमाही सुरानी । तहां ढाल बहु रंग अंगी डुरानी ॥
 दिसा बांम तत्तारगोरी सु अन्नी । दिसा दाहिनी घांन पुरसांन रन्नी ॥ १५० ॥
 मुषं अग बेटंड सेरंन घांनं । रतं बैरषं रत्त गज गाह ठानं ॥
 तिनै रत्त उच्छारि कारत्त ठारं । रजं रत्त भंडं तरं ताल ह्यालं ॥ १५१ ॥
 अनी साहि पुठे विचें साहि साजं । अगें अग बाजी हथं नारि साजं ॥
 अगें बांन गीरं सजे जुद्ध सारं ।मुषै मारमारं ॥ १५२ ॥
 सुरं दीन दीनं कलिं कूक फुही । भरं आइ कालं भरी जुद्ध घही ॥
 उडी डंबरं अंबरं रेनु पूरं । बरं बाज आघात बज्जे करुरं ॥ १५३ ॥

शाह की दो लाख सेना का सिंधु के पार उतरना ।

दूहा ॥ गज्जनेस सब सेन जुरि । आयौ सिंधु उलंघि ॥

कूच कूच आतुर परिग । दोइ लष दल संधि ॥ १५४ ॥

पृथ्वीराज का यह समाचार सुनकर अपने सरदारों से परामर्श करना

कवित्त ॥ सुनिय बत्त पृथिराज । बोलि कैमास मंच वर ॥

कन्ह काइ^१ चहुआन । विरदि बज्जेति^२ नाह नर ॥

रा पज्जून पवित्त । सलष पमार जैत सम ॥

जांम देव जहों जुवान । पर संग राव प्रम ॥

पुंडीर सेन चंदह सुमति । लोहांनौ आजान भुअ ॥

मिलि सकल मंत पूकिय प्रथुक । सनमानिय सोमैस सुअ ॥ १५५ ॥

कैमास का मत देना कि हम लोग आगे से बढ़कर रोक्के ।

कहिय मंत कयमास । सुनौ सामंत सब्ब भर ॥

गज्जनेस आयौ सु सज्जि । सब सेन अप्प पर ॥

कूच कूच उभार । सुन्धौ उत्तार सिंधु नद ॥

सिंध मंत सुभ रच्यौ । फौज चंपी न होइ छद ॥

आयौ सुराव चावंड तब । कदा विरम रच्यौ सयल ॥

इह मंत सिनह सज्जे सहलि । चढि रन चंपहु दुष्ट पल ॥ कं० ॥ १५६ ॥

इस मंत को सब का मानना ।

दूहा ॥ मांनि मंत सामंत सब । हरषि राज प्रथिराज ॥

बत्त परद्विय गेह गय । अप्य अप्य जुस साज ॥ कं० ॥ १५७ ॥

पृथ्वीराज का सबेरे उठ कर कूच करना ।

अरुनो है बैरां विहसि । बज्जि निसांन निहाइ ॥

चढ्यौ राज चहुआंन तब । चिंति अप्य जुध चाइ ॥ कं० ॥ १५८ ॥

कवित्त ॥ तपत सुरंग सुरंग । सुरन भ्रमांन हृथ्य लिषि ॥

सांम दांन अरु भेद । दंड निरनै विसेष सिषि ॥

इहत काल इह घरिय । साहि सज्जे चतुरंगिय ॥

सुनि अवाज सुरतांन । हिंदू करिहै रन जंगिय ॥

प्रति कूच कूचनि करि प्रसति । चाहुआंन न करै विषम ॥

मो मत्ति मांनि माधव सुकथ । सुबर वीर बज्जे सुषम ॥ कं० ॥ १५९ ॥

चढ्यौ राज प्रथिराज । करन मुक्क्यौ प्रति साजिय ॥

बाइ गंठि बंधईय । सुबर मानंक सु ताजिय ॥

मंच बंधि कैमास । कन्ह चहुआंन सु निडुर ॥

अहत बत्त सज्जे । सूर सामंत तत्त गुर ॥

विधि रूप भूप जानन सकल । तत्त मंत बत्तह सुबर ॥

संग्राम सूर साधै सकल । पग भिल्ल बजी सुकर ॥ कं० ॥ १६० ॥

दूहा ॥ चढ्यौ राज प्रथिराज वर । सजि सुभह अप्पांन ॥

विकसे अंबुज बीर वर । काइर कंपत प्रान ॥ कं० ॥ १६१ ॥

कवित्त ॥ चढ्यौ राज प्रथिराज । मंगि गज रूप सुताजिय ॥

षिचिय जाति सुभाति । हेम नग साकति साजिय ॥

बंधि सत्त सै तोन । बांन तीषे सुभाल जल ॥

बोलि कन्ह चहुआंन । मंच कैमास बुद्धि बल ॥

बोले सु सब्ब सामंत भर । अरु जु सूर सथ्यें सयन ॥

आए सुराज अग्या सुसजि । चले जुह सिर सजि गयन ॥ कं० ॥ १६२ ॥

पृथ्वीराज की सेना का वर्णन ।

छंद चोटक ॥ चढि राज चल्थौ सब सेन सजं । उडि घेह रजं रुकि अंब रजं ॥
 सुर चंबक रोर तहच हयं । सहनाइय सिंधु बसंन हियं ॥ कं० ॥ १६३ ॥
 बिकसे अरुबिंद जुबीर उरं । किन नंकिय कातर नारि नरं ॥
 दल संग जु ग्रिह पयांन सजं । हरपै नचि जुगिनि जुइ रजं ॥ कं० ॥ १६४ ॥
 दह सत्त सहं सदलं मिलियं । नव कोस सुनन्त मिलान दियं ॥
 अति कूचह कूच दलं परियं । जल पंथह जाइ सु उत्तरियं ॥ कं० ॥ १६५ ॥

युद्धारंभ होना ।

द्रुहा ॥ कूच कूच गोरी सयन । जकि आयौ जल पंथ ॥
 सुदि वैसाप मृग मृगु दसै । सज्ज्यौ जुइ समंथ ॥ कं० ॥ १६६ ॥
 दिष्यि रेन डंबर डहर । चढिय चाइ चहुआन ॥
 सुर आनंद अनंद किय । काइर कंपि पुलान ॥ कं० ॥ १६७ ॥

युद्ध वर्णन ।

छंद मुकुंद डामर ॥ ठलकंतिय ठाल निसान नहि सिय चंचल सूर चढे कसियं ॥
 चक टोप सहप रंगा दह हथ्यल जोप सनाह विधिं जरियं ॥
 रुस मंस उक्रंसत मुंक् तिरकिय दान सगानत न्हान कियं ॥
 नचि नारद तुंमर अंबर आनंद ईस सु सिंगिय नह दियं ॥ कं० ॥ १६८ ॥
 चढि अच्छरि ईसय सीस निरष्यन बीर जु जुइ विनोद नचं ॥
 सुर रक्षिय रथ्य अयास सुवासिय गोद चवट्टिय मांनि सचं ॥
 नृप रक्षिय फौज सुपंच प्रपंचिय गज्जिय गेन सिरं धरियं ॥
 भरमंनिय अय्य सु जैत प्रकासिय बंदि विरह प्रती परियं ॥ कं० ॥ १६९ ॥
 बर साइय सुभर जीव कलपिय मंनि अनंत सु सीस भुअं ॥
 पल वारि पलहर ओन सकतिय डिंभु अगिडिय चित्त धुअं ॥
 सुष नैन मुरतिय ओन सुरतह मुंक्ह भोंह उभं धुकजं ॥
 नृप दिष्यिय सुभर सूर अनंदिय के कसि बोरति फौज सजं ॥ कं० ॥ १७० ॥
 कवित्त ॥ इत रचिग सेन सामंत । जुइ माह रा भष्यन ॥
 मोर व्यूह आकार । अय्य दुर्जन दल दगन ॥

एक पंष निडुर नरिंद । सथ्य कैमास रांम भर ॥
 दुतिय पंष अत ताइ । बलिय बलिभद्र सार भर ॥
 पिंड पाइ नष राज हुअ । रचइ पुंछ पज्जून भर ॥
 पुंडीर चंच कीनै नृपति । महन रंभ मच्चौ सुथर ॥ कं० ॥ १७१ ॥
 दक्षिन दिसि कैमास । बांम दिसि कन्हति सज्जिय ॥
 चार सहस सेना सजंत । नील फर हर ठल रज्जिय ॥
 सकट व्यूह सजि सुभर । कग चामंड अगग कारि ॥
 मंच राज टंठरिय । ठंठ माहू महन धरि ॥
 चंदैल माल भौंछा सुभर । उभय चक्र सज्जे उभय ॥
 प्रथिराज अनी दक्षिन दिसा । विप्रम बीर सज्ज्यौ सुरय ॥ कं० ॥ १७२ ॥
 अवर अनी सामंत । परे नव वीय महाभर ॥
 सोलंकी रन बीर । सुतन विंभह सुराज बर ॥
 धीची राव प्रसंग । हीर पम्मार सहथ्यं ॥
 सुवर बीर अवसान । करन प्राक्रम अकथ्यं ॥
 पंम्मार दोइ सिंघह सुअन । सुअ प्रसंग सागर बरन ॥
 बघघेल भीम लप्यन सुअन । रांम वांम हय हभभरन ॥ कं० ॥ १७३ ॥
 बांई दिसि चहुआन । कन्ह सज्ज्यौ दल बहल ॥
 सहस तीस सजि सेन । मध्य सामंत अठवल ॥
 हर सिंघह बर सिंघ । हभभ हंमीर गंभीरह ॥
 मंडली कमल नाल । भांन भटी बर नीरह ॥
 उदिग पगार विरदैत बर । सोलंकी सारंग उर ॥
 सिर कन्ह कच सज्यो नृपति । भार सयनह जुद्ध भर ॥ कं० ॥ १७४ ॥
 मुष अगौं पम्मार । सलष सम जैत सु सज्जिय ॥
 लोहानौ आजान । तिन मद्धि विरज्जिय ॥
 सहस पंच सेना समथ्य । पंम्मार सिंघ स ॥
 मध्य सूर सामलौ । भीम चालुक्क पर जम ॥
 ठंठरी टांक चाटा चपल । धवल जसह लौहान सुअ ॥
 लौहान बंध केसरि समथ । अग्र भाग सब सूर हुअ ॥ कं० ॥ १७५ ॥

मध्य भाग प्रथिराज । सहस्र सेना सु च्यारि सजि ॥
 चंद्र सेन पुंडीर । राइ पर सिंघ सिंघ गजि ॥
 विंभू राज लखन बघेल । राइ रामह कनकू सम ॥
 कूरंभह पज्जन । भीम चहुआन भीम क्रम ॥
 भाषरह दास मंधे समथ । चाहुआन नृप कन्ह सुअ ॥
 गोइंद्र राव भुज हथ्य नृप । जुइ पथ्य जै वज्र भुअ ॥ कं० ॥ १७६ ॥
 जांम देव जहों जुवांन । नृप पुठि सु रज्जिय ॥
 स्थाम चमर पष्यरह । स्थाम गज ढाल सु सज्जिय ॥
 लंगी लंगर राव । अल्ह परिहार सूर वर ॥
 अचल अटल चहुआन । सिंह वारड अभंग भर ॥
 जंघाल राइ भीमह सुवर । सागर गुर रिन भूरि बल ॥
 सामंत सकल सज्जे समय । कज्ज राज प्रथिराज दल ॥ कं० ॥ १७७ ॥
 उत गोरी सुरतांन । सज्ज्यौं सेन अध चंद्रं ॥
 अर्द्धचंद्र तत्तार । पांन पुरसान सु वृंदं ॥
 अर्द्धचंद्र वर सार । पांन पीरोज स इंदं ॥
 मधि कलंक जलाल । बीर रस बीर समंदं ॥
 उज्जल निसंक दोउ कोर वर । तेज ताप सुरतांन डर ॥
 चहुआन राह लगन फिस्त्यौ । पूरन पुनिमासी सगुर ॥ कं० ॥ १७८ ॥
 कंद भुजंगी ॥ इसी लीन जो गिंद जो गिंद भासै । उड़ी गिह पच्छै मनो मोन भासै ॥
 कहै नह नंदीं सुनारह वीरं । मनो जोग जोगाधि को अंत नीरं ॥ कं० ॥ १७९ ॥
 करकेंत बानं धरकेंति बेनं । गए लज्ज पांबी फटे पक्क पेनं ॥
 मयं मत्त दंतीन की पंति सोभै । तिनं देषते इंद के चित्त लोभै ॥ कं० ॥ १८० ॥
 भटकंत दंती सुपंती प्रकारं । बलाकंति पंती बगं मेघ सारं ॥
 भरं डंमरं रेन रुकि भूर नभं । कलापंत पंतीन की सत्त सभं ॥ कं० ॥ १८१ ॥
 दूहा ॥ दिषिय रैन डंमर डहर । चढ्यौ चाय चहुआन ॥
 सूर अनंद अनंद किय । कायर कंपि परान ॥ कं० ॥ १८२ ॥
 सज्ज्यौ सेन जंगल सु पहु । जिम बहल आकास ॥
 ठलकि ठाल ढिल्ली मिली । बिषम बीर रस रास ॥ कं० ॥ १८३ ॥

घोर युद्ध होना, सुलतान की सेना का भागना ॥

कंद भुजंगी ॥ ढलक्की मिली ढाल ढालं दुसेनं । चढे देव देवै रचै रथ्य गेनं ॥

हकै हक्क बज्जी गजै तार^१ नारं । महा जुद्ध लगौ उद्यौ धोम

धारं ॥ कं० ॥ १८४ ॥

कुटै बांन हच्चाइ^२ अप्पार भारं । जगी दामिनी इंद्र भादों सुठारं ॥

मिली कन्ह अनी पुरासान अनी । महा घेत मत्तौ गजं गाह रन्नी ॥

कं० ॥ १८५ ॥

कुटै बांन कम्मान रुक्यौ सुगेनं । उवं जुद्ध दिठुं न प्राचार नेनं ॥

उभै जुद्ध मंडौ महा भार भारं । भरं दून भगो धरं धार धारं ॥

कं० ॥ १८६ ॥

गिरें उत्तमंगं धरं सूर नंचै । भरं सीस कंमालियं माल संचै ॥

करै जोगिनी जोग उच्चार बीरं । पिये ओन धारं अपारं सुधीरं ॥

कं० ॥ १८७ ॥

मिले घेत पुरसांन पां कन्ह धायौ । उरं झारि सींगी अपुठुं गिरायौ ॥

पख्यौ भूमि पुरसांन पांनं सुघाए । अनी भगि गय और सुरतांन ठाए ॥

कं० ॥ १८८ ॥

परे सहस दो पांन कठि घेत साजं । बजी जैत देषी प्रथीराज राजं ॥

भगी फौज सुलतांन देषी बिहालं । कुप्यो साहि पुरसांन किय नैन लालं ॥

कं० ॥ १८९ ॥

फौज को भागते देखकर सुलतान का क्रोध करना ।

दूहा ॥ भगी फौज सुरतांन दिषि । कोप्यौ साहि सहाब ॥

बहुरि मिलत जनु मेघ घुरि । सावन बहल आव ॥ कं० ॥ १९० ॥

सेना को ललकार शाह का फिर जोर बांधना ।

कवित्त ॥ हक्कि सूर सुरतान । साहि बंध्यौ बल भारी ॥

अगौई चौरंग । राज रष्यन अधिकारी ॥

(१) मो.-नारि ।

(२) मो.-हवाय ।

सुनै साहि सुरतान । साहि जीवन सुरतानं ॥

सुबर वीर हिंदवान । कलह चंपै हिंदवानं ॥

दीजै न दान दुर्जन घरह । दइ दुवाह ऊभौ नृपति ॥

मुरि भग्यौ साहि सुरतानं कैां । साल रहै जीवत सुपति ॥ कं० ॥ १८१ ॥

**तातारखां का मारा जाना, सुलतान का हिम्मत हारना,
पृथ्वीराज की विजय ।**

तव कही घांन तत्तार । साह मंगी परिमानं ॥

रुप्यौ साहि नरिंद । साहि पुरसांन सबानं ॥

घरी एक आवड । बीर बीरह रस सथ्या ॥

षेत परे तत्तार । साह गोरी गई सथ्या ॥

मुह मेल साह चहुआंन हुअ । दैथपरि दौरे असुर ॥

चामंड राइ दाहर तनय । जै सबह उचरंत उर ॥ कं० ॥ १८२ ॥

दूहा ॥ दंतिपत्ति हस्त्रिय विहर । जलद कि पब्बय पाइ ॥

बाइ सचाई कै अनल । कै ग्रीषम लगि लाइ ॥ कं० ॥ १८३ ॥

कंद माधुर्य ॥ दव दवरि दवरित सैन उंमरित गज्ज गहरित सहयं ।

विरहंत भदव जलद हदव कीच मच्चित भदयं ॥ कं० ॥ १८४ ॥

गिरि पंषि उल्लसि उडय दस दिसि बाय बेग करि करें ।

देषंत मन गति होत पंगुर दांन बरषत गिरि भरें ॥ कं० ॥ १८५ ॥

गज पंति दंतिन कंति उज्जल बग पंति कि राजण ।

रवि किरन बहल मध्य मानहु अन्य सोभ सु साजण ॥ कं० ॥ १८६ ॥

बर करत अनतह पगग पुल्लत उडत किरच सुषंडि कै ।

इल चंद मांनहु कोपि उडगन अइ रयनीय कंडि कै ॥ कं० ॥ १८७ ॥

हल मलिय है दल दलित पैदल सैल सिषरह फटियं ।

गोपीय कन्हं जनु अगन्हं सार मार उहटियं ॥ कं० ॥ १८८ ॥

दूहा ॥ गज्जन समवर रोस रस । बज्जिग मार अपार ॥

षोलि पगग सैभरि बलिय । जनुपाइक पुंतार ॥ कं० ॥ १८९ ॥

कंद रसावला ॥ करी मत्त भारो बहै सार धारी । दुहृथ्यं करारी । तुटै दंत जारी ॥

कं० ॥ २०० ॥

रदं किच्च भारी । माने मच्छ वारी ॥ लगे बांन भारी । गिरं टिड्डि चारी ॥

कं० ॥ २०१ ॥

लगे संग भारी । मनें ब्रज तारी ॥ उठे कंद धारी । मनें धूम भारी ॥

कं० ॥ २०२ ॥

लगे केक टारी । धनुं चंद्र धारी ॥ लगी दंति अंती । मिनाली सुहंती ॥ कं० ॥ २०३ ॥

भरंके उकारै । बके मार मारै ॥ ठहै गज्ज जारी । गिरं अंग सारी ॥ कं० ॥ २०४ ॥

दूहा ॥ गज्जन गज गज्जै सुभट । रहै रोक रन रंग ॥

किति कज्जै किची इसे । जिसे भीम अनभंग ॥ कं० ॥ २०५ ॥

कंद पद्धरी ॥ अति उड्ड जुड्ड अनवड्ड सूर । बलवंत मंत दीसै कहूर ॥

भलमलहि संग फुटि परहि तुच्छ । उप्पमा चंद जंपै सुअच्छ ॥ कं० ॥ २०६ ॥

दल स्याम हृदय सोभै प्रमान । माने कि पंचमो भाग भान ॥

वर संग फुटि सिप्पर प्रमान । कर स्याम राह सुभै समांन ॥ कं० ॥ २०७ ॥

माने कि राह ग्रहि ससिय आइ । कुही कि किरन बटल नचाइ ॥

किरवांन बंक बट्टी बिसाल । ससि बनिय डोरि करि चक्र चाल ॥ कं० ॥ २०८ ॥

सिप्पर सुस्याम हेमह सुहंत । माने कि चक्र हरि धरिय संत ॥

लै संगि अंग है हनि उठाइ । उप्पमा चंद जंपै सुभाइ ॥ कं० ॥ २०९ ॥

माने कि हथ्य हथिनापुरेस । पंचै सु बलिय बलिभद्र भेस ॥

प्रथिराज करिय करि संग सुड्ड । लांगत भेस दीसंत उड्ड ॥ कं० ॥ २१० ॥

माने कि रांम कांमह प्रमान । पंचैति ट्रोान हनमंत जान ॥

ठाहि पखो गज्ज वर घेत भूमि । माने सुअ सुरनिय अंत भूमि ॥ कं० ॥ २११ ॥

दूहा ॥ चक्र रूप दोइ दीन दल । बल अभूत बलवंत ॥

जानि जुगंतह जम लरै । करन प्रथीपुर अंत ॥ कं० ॥ २१२ ॥

कंद विअप्परी ॥ पूरन ससि सुरतांन नरिंद । भारथ राह भिरै भर दंद ॥

चींदू सेन चढे रिन घेत । जित्तन दल पुरसान सुहेत ॥ कं० ॥ २१३ ॥

डोह हथ्य डवै कर डवै । सींधू राग अरै सुर गावै ॥

नंचै वर बेताल चिघाइ । नारद नह करै किलकाई ॥ कं० ॥ २१४ ॥

सुर रत्तं सुर बीर प्रमान । उडै उकंग अरिन निडान ॥

दाहिंमौ दाहिर अधिकारी । गहन साह गोरी षग रारी ॥ कं० ॥ २१५ ॥

जंपै मेक् कुसाद कुसादे । पारसीय मीरं रसवादे ॥

षां ततार घुरसांन पषानं । गहैं सूर संमुह रन वानं ॥ कं० ॥ २१६ ॥

पंच बांन वह ते अधकोसं । सझो नाह नरिंद सरोसं ॥

रुझौ दिष्य साहि सब षानं । गहिय तेग अनमित्त जुवानं ॥ कं० ॥ २१७ ॥

दूहा ॥ मिले खेत रन रंग रस । षां ततार कैमास ॥

विषम रुद्र रत्नौ बिहसि । मनो तेग रस रास ॥ कं० ॥ २१८ ॥

कंद मोतीदाम ॥ मनो रस रासय तेगय तार । करकर बज्जिय रीठ करार ॥

चलंतह बांन सुभांन क्वान । निरष्यत अछरि व्योम विमानं ॥ कं० ॥ २१९ ॥

कुटै गज बाज अनंदिय जात । मनो लगि गोम उदोत उदात ॥

भिरैं भय धोम सु धूंधय भार । लषै न को सूरति एक दुरार ॥ कं० ॥ २२० ॥

फिरैं धर वज्जिय भार करार । ठिलें नठिलाइ न मन्निय हार ॥

नटं भति जोगिनि नंचिय बीर । मिटी सिर मालह संकर पीर ॥ कं० ॥ २२१ ॥

मिले कयमास ततार सुअंग । हन्यो कयमासह जांनुय संग ॥

फुटी जुग जंग तुरंग समेत । पखौ हय मुच्छ ततार सुषेत ॥ कं० ॥ २२२ ॥

बिना सिर नंचिय सठि कमंध । चले असि टेकि सु तुहिय रंध्र ॥

बिलै विक मंध कमंध सुबीर । सहस्सह पंच परे रन मीर ॥ कं० ॥ २२३ ॥

भगी रन फौज सु चंडह साहि । जिते रन हिंदुअ ठठ सुठाहि ॥ कं० ॥ २२४ ॥

पृथ्वीराज का सुलतान की सेना का पीछा करना ।

दूहा ॥ भगी अनी ततार लषि । दल परमारह चंप ॥

धप्यौ राज प्रथिराज तब । लेहु लेहु मुष जंप ॥ कं० ॥ २२५ ॥

कंद पद्धरी ॥ धप्यौ सुराज प्रथिराज हक्कि । उर रोहि सेन उप्परें धक्कि ॥

मिनि फौज अठकिय एक ठांम । आघात रीठ मत्ती उरांम ॥ कं० ॥ २२६ ॥

किलकार हक्क बज्जी करार । आवइ तुह मुष धार धार ॥

चंय्यौ पटाटि चामुंड राव । हल हल्ल हूक मते हलाव ॥ कं० ॥ २२७ ॥

बीभच्छ मंत विय भर अरुर । आवइ जांम मच्यौ कहर ॥

संगें सुसंग असि असी घाइ । पटा सुपट बज्जे निहाइ ॥ कं० ॥ २२८ ॥

जम दट्ट दट्ट जुहें विरांम । कुलिका सुधाव जुहे सुजांम ॥

पाटू सुढीक परहार पार । मिले लथ्य बथ्य भुंभे भुभार ॥ कं० ॥ २२८ ॥
 कर केस केस एकद अलुभक्त । कुरिका सअनि बाहें सुलभक्त ॥
 तुहंत अंत चंपंत पाइ । तुहंत सीस जनु विषम वाइ ॥ कं० ॥ १३० ॥
 किन नतं परत दंती सभार । है परें विहँड पंडै सधार ॥
 है गै परंत धर पूरि पारि । घन ओन अंब पूख्यौ सवारि ॥ कं० ॥ २३१ ॥
 लग्गे ससंग नेजा सुढाल । सोहंत पाल तरवर सुहाल ॥
 कच्छपह सीस गजराज नूप । धर परे हय गय मगर रूप ॥ कं० ॥ २३२ ॥
 तुहे सुबांह मनुं मीन पांन । सोहंत मीन वर विविध जांन ॥
 सोहंत सीस अंबुजह सूर । से बाल चिकुर रज्जे बिरुर ॥ कं० ॥ २३३ ॥
 विगसंत नैन सुरंगी न दिट्ठ । अंबुज निसांनि मधुकर बयट्ठ ॥
 षप्पर सुभरै कालिका वारि । विन हंस सूर उड्डै उभारि ॥ कं० ॥ २३४ ॥
 पढाटि पख्यौ चामंड धाइ । विहरंत विषम बज्यौ सुघाइ ॥
 दिष्ट्यौ सुघाइ साहाव दिट्ठ । आवड मंत मत्ती सुरिट्ठ ॥ कं० ॥ २३५ ॥
 मिल्यौ सुघाइ चामंड राइ । हय हये उंन उन्नं उनाइ ॥
 हय परै बथ्य लग्गेव सूर । थल घाव रिट्ठ मत्ती कहर ॥ कं० ॥ २३६ ॥
 चंपे सुमीर उप्परह धक्कि । सामंत सूर लग्गे विहक्कि ॥
 धर परे घेत तहां दस्स मीर । सामंत पंच परि घेत तीर ॥ कं० ॥ २३७ ॥
 धरि लियो साहि चामंड राइ । नव सहस मीर तुहे सुघाइ ॥
 चामंड राव हय दिय षवास । सादूल नाम पावार तास ॥ कं० ॥ २३८ ॥
 भगौ सुषेत सुरतान सेन । जै जया सह सुर सह गेन ॥
 जे परे मीर सामंत घेत । वरदाय चंद ते गनिव हेत ॥ कं० ॥ २३९ ॥

कवित्त ॥ पख्यौ भीम चहुआंन । बंध भाषरह महाभर ॥

सांमदास चय बंध । सुतन चहुआंन नाह नर ॥

पख्यौ घेत जस धवल । सुअन लौहान समथ्यं ॥

केसर केहरि रूप । बंध लौहान सुतथ्यं ॥

रन परे पंच सामंत बर । घेत रीठ मत्ती भरन ॥

चामंड राइ दाहर तनय । गहत साहि पख्यल सुरन ॥ कं० ॥ २४० ॥

पखो घांन सेरंन । वितंड मुलतांन घांन धर ॥
 माछु मीर सुभीर । मीर जेघांन महाभर ॥
 मीर जमुन गजनीय । घांन मछमुंद मीर वर ॥
 फतेजंग मीरह सुभीर । हासंन रु अनर ॥
 काली बलाइ विरदैत बर । मीर अवन्न सुजुझ मन ॥
 दस परें घेत वानेत तब । गहत साहि पण्णल सुरन ॥ कं० ॥ २४१ ॥
 अवर अनी सांमत । परे रन मीर महाभर ॥
 सोलंकी रन बीर । सुतन वीभूह सुराज बर ॥
 पीचो राव प्रसंग । सुतन सागरह समथ्यं ॥
 मडंन बंध प्रसंग । हीर पामार सु हथ्यं ॥
 पामार नीरध्वज सिंधु सुअ । सुत प्रसंग सागर सुअन ॥
 बघघेल भीम लण्णन सुवन । राम वाम दड्य डरन ॥ कं० ॥ २४२ ॥

दूहा ॥ सहस एक हिंदू अवर । परे घाइ रिन घेत ॥
 सहस आठरह असुर दल । परे सुबंधन नेत ॥ कं० ॥ २४३ ॥
 सहस सात हय घेत रहि । परे पंच से दंति ॥
 लुथि कोस पंचह प्रचर । परे सुपाइल अंति ॥ कं० ॥ २४४ ॥
 घेचर भूचर हंसचर । पलचर रुधिर चार ॥
 नप आनंदिय राजकहुं । चलि जै जंपि उचार ॥ कं० ॥ २४५ ॥
 सूरन सीस जु ईस जुरि । सुर रज्जे बर रथ्य ॥
 रजि अच्छरि आसिष्य दिय । बर लडे बर हथ्य ॥ कं० ॥ २४६ ॥

चामंडराय का सुलतान को पकड़कर पृथ्वीराज
 के हाथ समर्पण करना ।

कवित्त ॥ बंधि साह चामंड । दिव्यौ प्रथिराज सुहथ्यह ॥
 राज मांनि पतिसाह । आनि मुष्यासन तथ्यह ॥
 कियौ दंड पतिसाह । सहस अठह हय सुब्बर ॥
 सोइ अइ प्रथिराज । दिव्यौ चामंड महाभर ॥

मुक्यौ सुराज सुरतांन गहि । रोहि सुवासन पठ्य घर ॥
 जित्यौ सुराज प्रथिराज रिन । जय जै सहय सुर अमर ॥ कं० ॥ २४७ ॥
सुलतान को एक महीना दिल्ली में रखकर छोड़ देना ॥

बंधि साह सुरतांन । राज दिल्लीपुर पत्तौ ॥
 दंड मंडि सुबिहान । राज जस जस गुन रत्तौ ॥
 चामर कच रपत्त । सकल लुटे सुरतांन ॥
 मास एक बर बीर । रषि मुक्यौ सुबिहानं ॥
 जय जय सुमत्त कित्तिय कवित । डोला राज नरिंद बर ॥
 सामंत सूर प्रथिराज सम । भयौ न को रवि चक्र तर ॥ कं० ॥ २४८ ॥
 दूहा ॥ माधौ भट सुमंत कथ । सुमत चित्त परमान ॥

सुवर साहि गोरी नृपति । बंधि कंडि उनमान ॥ कं० ॥ २४९ ॥

**इस विजय पर दिल्ली में आनंद मनाया जाना,
 बहुत कुछ दान दिया जाना ।**

बँटि बधाय दिल्ली सहर । जीते आवत राज ॥
 द्रव्य पटंबर विविध दिय । बज्जा जीत सु बाज ॥ कं० ॥ २५० ॥
 दुजिय सुबहिय प्रति दुजह । प्रिथ्या व्याह विगति ॥
 किमि फिर बंध्यौ साह रिन । किम धन लड्ड सुमत्ति ॥ कं० ॥ २५१ ॥
**इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके माधौ भाट कथा
 पातिसाह ग्रहन राजाविजय नाम उनविंसमो
 प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १६ ॥**





अथ पद्मावती समय लिख्यते ।

(बीसवां समय ।)

पूर्वदिशा में समुद्रशिषर गढ़ के यादवराजा विजय- पाल का वर्णन ।

दूहा ॥ पूरब दिस गढ गढनपति । समुद्र सिषर अति द्रुग ।
तहँ सु विजय सुर राज पति । जादू कुलह अभग ॥ कं० ॥ १ ॥
हसम हयगय देस अति । पति सायर मज्जाद ॥
प्रबल भूप सेवहिँ सकल । धुनि निसाँन बहु साद ॥ कं० ॥ २ ॥

विजयपाल की सेना, कोष, दस बेटे, बेटा का वर्णन ।

कवित्त ॥ धुनि^१ निसान बहु साद । नाद सुरपंच बजत दिन ॥
दस हजार हय चढ़त । हेम नग जटित साज तिन ॥
गज असंघ गजपतिय । मुहर सेना तिय संषह ॥
इक नायक कर धरी । पिनाक धरभर रज रष्यह ॥
दस पुत्र पुत्रिय एक सम । रथ सुरङ्ग उंमर उमर^२ ॥
भंडार लक्ष्य अगनित पदम । सो पदम सेन कूँवर सुघर ॥ कं० ॥ ३ ॥

कुँअर पद्मसेन की बेटा पद्मावती के रूप गुण आदि का वर्णन ।

दूहा ॥ पदम सेन कूँवर सुघर । ता घर नारि सुजाँन ॥
ता उर इक पुत्री प्रगट । मनहुँ कला ससिभाँन ॥ कं० ॥ ४ ॥
कवित्त ॥ मनहुँ कला ससिभाँन । कला सोलह सो बन्निय ॥
बाल बेस ससिता समीप । अंम्रित रस पिन्निय ॥
बिगसि कमल म्रिग भमर । बैन घंजन मृग लुट्टिय ॥
हीर कीर अरु बिंब । मोति नष सिष अहि घुट्टिय ॥
कचपति गयंद हरि हंस गति । विह बनाय संचै सचिय ॥
पदमिनिय रूप पदमावतिय । मनहुँ काम कामिनि रचिय ॥ कं० ॥ ५ ॥

(१) छ-घन ।

(२) को-भमर ।

दूहा ॥ मनहु काम कामिनि रचिय । रचिय रूप की रास ॥

पसु पंकी सब मोहनी । सुर नर मुनियर पास ॥ कं० ॥ ६ ॥

सामुद्रिक लच्छन सकल । चौसठि कला सुजान ॥

जानि चतुर दस अंग षट । रति वसंत परमान ॥ कं० ॥ ७ ॥

पद्मावती एक दिन खेलते समय एक सुगगे को देख
कर मोहित हो गई और उसने उसे पकड़ लिया
और महल में पिँजरे में रक्खा ।

सधियन संग खेलत फिरत । महलनि बाग निवास ॥

कीर इक दिष्यि नयन । तब मन भयौ हुलास ॥ कं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ मन अति भयौ हुलास । विगसि जनु कोक किरन रवि ॥

अरुन अधर तिय सधर । बिंब फल जानि कीर कवि ॥

यह चाहत चष चक्रित । उहजु तक्रिय भरपि भर ॥

चंच चहुदिय लोभ । लियौ तब गहित अप्य कर ॥

हरषत अनंद मन महि हुलस । लै जु महल भीतर गई ॥

पंजर अनूप नग मनि जटित । सो तिहि मँह रष्यत भई ॥ कं० ॥ ९ ॥

पद्मावती कीर के प्रेम में खेल कूद भूल कर सदा
उसी को पढ़ाया करती ।

दूहा ॥ तिही महल रष्यत भइय । गइय खेल सब भुल ॥

चित्त चहुदयौ कीर सौ । राम पढ़ावत फुल ॥ कं० ॥ १० ॥

पद्मावती के रूप को देख कर सुगगे का मन में विचार

करना कि इसको पृथ्वीराज पति मिले तो ठीक है ।

कीर कुँवरि तन निरषि दिषि । नष सिष लौं यह रूप ॥

करता करी बनाय कै । यह पदमिनी सहप ॥ कं० ॥ ११ ॥

कवित्त ॥ कुहिल केस सुदेस । पौह परचियत पिक सद ॥

कमल गंध वय संध । हंस गति चलत मंद मद ॥

सेत वस्त्र सोहै सरीर । नष स्वाति बंद जस ॥

भमर भंवहि भुल्लहि सुभाव । मकरंद वास रस ॥

नैन निरषि सुष पाय सुक । यह सदिन भरति रचिय ॥

उमा प्रसाद हर हेरियत । मिलहि राज प्रथिराज जिय ॥ कं० ॥ १२ ॥

पद्मावती का सुगमे से पूछना कि तुम्हारा देश कौन है ।

दूहा ॥ सुक समीप मन कुँवरि कै । लग्यो बचन कै हेत ॥

अति विचित्र पंडित सुआ । कथत जु कथा अमेत ॥ कं० ॥ १३ ॥

गाथा ॥ पुच्छत बयन सुबाले । उच्चरिय कीर सच्च सचाये ॥

कवन नाम तुम देस । कवन यंद करै परवेस ॥ कं० ॥ १४ ॥

सुगमे का उत्तर देना कि मैं दिल्ली का हूँ वहाँ का

राजा पृथ्वीराज मानो इंद्र का अवतार है ।

उच्चरिय कीर सुनि बयनं । हिंदवान दिल्ली गढ अयनं ॥

तहाँ इंद्र अवतार चहुवानं । तहं प्रथिराजह सूर सुभारं ॥ कं० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज के रूप, गुण और चरित्र का विस्तार से वर्णन करना ।

कंद पद्धरी ॥ पद्मावतिहि कुँवरी सँघत । दुज कथा कहत सुनि सुनि सुवत्त ॥

हिंदवानं थान उत्तम सुदेस । तहँ उदत द्रुग दिल्ली सुदेस ॥ कं० ॥ १६ ॥

संभरि नरेस चहुआन थान । प्रथिराज तहाँ राजंत भान ॥

बैसह बरीस षोडस नरिंद । आजानबाहु भुअ लोक यंद ॥ कं० ॥ १७ ॥

*संभरि नरेस सोमेश पूत । देवंत रूप अवतार धूत ॥

सामंत सूर सबै अपार । भूजान भीम जिम सार भार ॥ कं० ॥ १८ ॥

जिहि पकरि साह साचाब लीन । तिहुँ बेर करिय पानीप चीन ॥

सिंगिनि सुसह गुन चढ़ि जँजीर । चुकै न सबद बेधंत तीर ॥ कं० ॥ १९ ॥

बल बैन करन जिम दौन पान । सत सहस सील हरिचंद समान ॥

साहस सुक्रम विक्रम जुवीर । दौनव सुमत्त अवतार धीर ॥ कं० ॥ २० ॥

दिस चार जांनि सब कला भूप । कंद्रप्य जांनि अवतार रूप ॥ कं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ कामदेव अवतार हुअ । सुअ सोमेश्वर नंद ॥

सहस किरन भल चल कमल । रिति समीप वर विंद ॥ कं० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का रूप, गुण सुन कर पद्मावती का मोहित हो जाना ।

सुनत अवन प्रथिराज जस । उमग बाल विधि अंग ॥

तन मन चित चहुवाँन पर । बस्यौ सु रत्तह रंग ॥ ६० ॥ २३ ॥

कुँवरी के स्यानी होने पर विवाह करने के लिये मा

बाप का चिंतित होना ।

वेस बिती ससिता सकल । आगम कियौ बसंत ॥

मात पिता चिंता भई । सोधि जुगति कौ कंत ॥ ६० ॥ २४ ॥

राजा का बर ढूँढने के लिये पुरोहित को देश देशांतर भेजना ।

कवित्त ॥ सोधि जुगति कौ कंत । कियौ तब चित्त चहौं दिस ॥

ल्यौ विप्र गुर बोल । कही समभाय बात तस ॥

नर नरिंद नर पती । बड़े गढ़ द्रुग असेसह ॥

सीलवंत कुल सुद्ध । देहु कन्या सुनरेसह ॥

तब चलन देहु दुज्जह लगन । सगुन बंद दिय अप्प तन ॥

आनंद उक्ताह समुदह सिषर । बजत नह नीसाँन घन ॥ ६० ॥ २५ ॥

पुरोहित का कमाऊँ के राजा कुमोदमनि के यहाँ पहुँचना ।

दूहा ॥ सवालष्य उत्तर सयल । कमाऊँ गढ दूरंग ॥

राजत राज कुमोदमनि । हय गय द्विब्ब अभंग ॥ ६० ॥ २६ ॥

पुरोहित ने कन्या के योग्य समझ कर कुमोदमनि

को लगन चढ़ा दिया ।

नारिकेल फल परठि दुज । चौक पूरि मनि मुत्ति ॥

दई जु कन्या बचन बर । अति आनंद करि जुत्ति ॥ ६० ॥ २७ ॥

कुमोदमनि का बड़ी धूम से व्याह के लिये बारात लाना,

पद्मावती का दुखित हो कर सुगगे को पृथ्वीराज के

पास भेजना ।

छंद भुजंगी ॥ विहिसितवरं लगन लिन्नौ नरिंद । बजी द्वार द्वारं सु आनंद दुंद ॥

गठनं गठं पत्ति सब बोलि नुंत्ते । आइयं भूप सब कटु बंस जुत्ते ॥ ६० ॥ २८ ॥

चले दस सहस्रं असव्वार जानं । पूरियं पैदल तेतीसु थानं ॥
 मंत मद गलित सैं पंच दंती । मनौ साँ म पाचार बुग पंति पंती ॥ कं० ॥ २८ ॥
 चलै अगि तेजी जु तत्ते तुषारं । चौवरं चौरासी जु साकति भारं ॥
 कंठ नग नूपं अनोपं सु लालं । रंगं पंच रंगं ठलकंत ढालं ॥ कं० ॥ २९ ॥
 पंच सुर सावह वाजिच वाजं । सहस सहनाथ अगि मोहि राजं ॥
 समुद सिर सिपर उच्छाह काहं । रचित मंडपं तोरनं श्रीयगाहं ॥ कं० ॥ ३१ ॥
 पदमावती विलषि बर बाल बेली । कही कीर सोँ बात तब होइ केली ॥
 भटं जाहु तुम्ह कीर दिखी सुदेसं । बरं चाहुवानं जु अनौ नरेसं ॥ कं० ॥ ३२ ॥

**सुगो से संदेसा कहलाना शीऔर चिट्ठी देना कि रुक्मि
 की तरह मेरा उद्धार कीजिए ।**

दूहा ॥ अनौ तुम्ह चहुवानं बर । अस कहि इहै सँदेस ॥
 सांस सरीरहि जो रहै । प्रिय प्रथिराज नरेस ॥ कं० ॥ ३३ ॥
 कवित्त ॥ प्रिय प्रथिराज नरेस । जोग लिषि कगार दिनौ ॥
 लगु नव रग रचि सरब । दिन द्वादस ससि लिनौ ॥
 सैं अहग्यारह तीस^१ । साष संवत परमानह ॥
 जोविची कुल सुद्ध । बरनि वर रष्यहु प्रानह ॥
 दिष्यंत दिष्ट उच्चरिय^२ वर । इक पलक बिलंब न करिय ॥
 अलगार रयन दिन पंच महि । ज्यौँ रुकमनि कन्हर वरिय ॥ कं० ॥ ३४ ॥

शिव पूजन के समय हरन करने का संकेत लिखना ।

दूहा ॥ ज्यौँ रुकमनि कन्हर वरी । ज्यौँ वरि संभरि कांत ॥
 शिव मंडप पक्कम दिसा । पूजि समय स प्राँत ॥ कं० ॥ ३५ ॥
सुगो का चिट्ठी लेकर आठ पहर में दिल्ली पहुँचना ।
 लै पची सुक थौँ चलयौ । उद्यौ गगनि गहि वाव ॥
 जहँ दिखी प्रथिराज नर । अट्टु जाँम में जाव ॥ कं० ॥ ३६ ॥

(१) को-अनुतीस ।

(२) को-वह घरिय ।

सुगो का पत्र पृथ्वीराज को देना और पृथ्वीराज का
चलने के लिये प्रस्तुत होना ।

दिय कगगर नृप राज कर । पुलि बंचिय प्रथिराज ॥

सुक देखत मन में हँसे । कियौ चलन कौ साज ॥ कं० ॥ ३७ ॥

चामंड राय को दिल्ली में रख कर और सरदारों के साथ
लेकर उसी समय पृथ्वीराज का यात्रा करना ।

कवित्त ॥ उहै घरी उहि पलनि । उहै दिन बेर उहै सजि ॥

सकल सूर सामंत । लिये सब बोलि बंभ बजि ॥

अरु कविचंद अनूप । रूप सरसै बर कह बहु ॥

और सेन सब पच्छ । सहस सेना तिय सष्यहु ॥

चामंड राय दिल्ली धरह । गढपति करि गढ भार दिय ॥

अलगार राज प्रथिराज तब । पूरब दिस तब गमन किय ॥ कं० ॥ ३८ ॥

जिस दिन समुद्र शिषर गढ में बारात पहुँची उसी दिन
पृथ्वीराज भी पहुँच गया और उसी दिन गज़नी में
शहाबुद्दीन को भी समाचार मिला ।

जा दिन सिषर बरात गय । ता दिन गय प्रथिराज ॥

ताही दिन पतिसाह कौ । भइ गज्जनै अवाज ॥ कं० ॥ ३९ ॥

यह समाचार पाते ही अपने उमरावों के साथ शहाबुद्दीन
ने पृथ्वीराज का रास्ता आगे बढ़ कर रोका और
इधर इसकी सूचना चंद ने पृथ्वीराज को दी ।

कवित्त ॥ सुनि गज्जनै अवाज । चढ्यौ साहाब दीन बर ॥

पुरासाँ न सुखतान । कास काविलिय मीर धुर ॥

जंग जुरन जालिम जुझार । भुज सार भार भुअ ॥

धर धमंकि भजि सेस । गगन रवि लुप्पि रैन हुअ ॥

उलटि प्रवाह मनौं सिंधु सर । रुक्मि राह अड्यौ रहिय ॥

निहि घरिय राज प्रथिराज सौं । चंद वचन इहि विधि कहिय ॥ कं० ॥ ४० ॥

बारात का निकलना, नगर की स्त्रियों का गौष आदि से बारात देखना, पद्मावती का पृथ्वीराज के लिये व्याकुल होना ।

निकट नगर जब जानि । जाय वर विंद उभय भय ॥

समुद्र सिंघर घन नह । इंद दुहुँ ओर घोर गय ॥

अगिवानिय अगिवान । कुँअर बनि बनि हय सज्जति ॥

दिष्पन को चिय सबनि । चढ़ि गौष क्वाजन रज्जति ॥

विलषि अवास कुँवरि वदन । मनौं राह क्वाया सुरत ॥

भँषति गवर्षि पल पल पलकि । दिषत पंथ दिखी सुपति ॥ कं० ॥ ४१ ॥

सुगो का आकर पद्मावती को समाचार देना, उसका प्रसन्न होकर शृङ्गार करना, और सखियों के साथ शिव जी की पूजा को जाना वहाँ पृथ्वीराज का उसे उठाकर अपने पीछे घोड़े पर बैठाकर दिल्ली की ओर रवाना होना, नगर में यह समाचार पहुँचना, राजा की सेना का पीछा करना, पृथ्वीराज के साथ घोर युद्ध होना ।

कं० पद्धरी ॥ दिषत पंथ दिखी दिसेन । सूप भयौ सुक जब मिल्यौ आन ॥

संदेस सुनत आनंद नैन । उमगिय बाल मन मथ्य सैन ॥ कं० ॥ ४२ ॥

तन चिकट चीर डाल्यो उतारि । मज्जन^१ मयंक नव सत सिंगार ॥

भूषन मँगाय नष सिष अनूप । सजि सेन मनौं मनमथ्य भूप ॥ कं० ॥ ४३ ॥

सोवन्न थार सोतिन भराय । झल^२ हल करंत दीपक जराय ॥

संगह सषिय लिय सहस बाल^३ । रुकमनिय जेम मज्जत मराल ॥ कं० ॥ ४४ ॥

पूजिय गवरि शंकर मनाय । दक्कनै अंग कर लगिय पाय ॥

फिर देषि देषि प्रथिराज राज । हस मुझ मुझ चर पह लाज ॥ कं० ॥ ४५ ॥

कर पकर पीठ हय परि चढ़ाय । क^४ चलयौ नृपति दिखी सुराय ॥

भद्र षवरि नगर बाहिर सुनाय । पदमावतीय हरि लीय जाय ॥ कं० ॥ ४६ ॥

बाजी सुबं ब हय गय पलांन । दैरे सुसज्जि दिस्सह दिसांन ॥
 तुम्ह लेहु लेहु मुष जंपि जोध । हन्नाह सूर सब पहरि क्रोध ॥ कं० ॥ ४७ ॥
 अगै जु राज प्रथिराज भूप । पक्कै सु भयौ सब सेन रूप ॥
 पहुँचे सुजाय तत्ते तुरंग । भुअ भिरन भूप जुरि जोध जंग ॥ कं० ॥ ४८ ॥
 उलटी जु राज प्रथिराज वाग । थकि सूर गगन धर धस्त नाग ॥
 सामंत सूर सब काल रूप । गहि लोह कोह वाहै सु भूप ॥ कं० ॥ ४९ ॥
 कम्मांन बाँन कुटहि अपार । लागंत लोह इम सारि धार ॥
 घमसान घान सब बीर घेत । घन ओन बहत अरु रुकत रेत ॥ कं० ॥ ५० ॥
 मारे बरात के जोध जोह । परि रुंड मुंड अरि घेत सोह ॥ कं० ॥ ५१ ॥

पृथ्वीराज का जय करके दिल्ली की ओर बढ़ना ।

दूहा ॥ परे रहत रिन घेत अरि । करि दिखिय मुष रुष ॥
 जीति चल्थौ प्रथिराज रिन । सकल सूर भय सुष ॥ कं० ५२ ॥

पद्मावती के साथ आगे बढ़ने पर शहाबुद्दीन का

समाचार मिलना ।

पदमावति इम लै चल्थौ । हरषि राज प्रथिराज ॥
 एतें परि पतिसाह की । भइ जु आनि अवाज ॥ कं० ॥ ५३ ॥

अवसर जान कर शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज को

पकड़ने के विचार से सेना सजना ।

कवित्त ॥ भई जु आनि अवाज । आय सहाबदीन सूर ॥
 आज गहैं प्रथिराज । बोल बुलंत गजत धुर ॥
 क्रोध जोध जोधा अनंत । करिय पंती अनि गज्जिय ॥
 बाँन नालि हथनालि । तुपक तीरह श्रव सज्जिय ॥
 पवै पहार मनों सार के । भिरि भुजांन गजनेस बल ॥
 आये हकारि हंकार करि । पुरासान सुलतान दल ॥ कं० ॥ ५४ ॥

शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन, पृथ्वीराज को चारों ओर से घेर लेना ।

कं० पद्दरी ॥ पुरासान मुलतान धंधार मीरं । बलक सो बलं तेग अचूक तीरं ॥
 रुहंगी फिरंगी हलंबी समानी । ठटी ठट बल्लोच ढालं निसानी ॥ कं० ॥ ५५ ॥
 मँजारी चषी मुष्य जंबक लारी । हजारी हजारी इकै जोध भारी ॥
 तिनं पष्यरं पीठ हय जीन सालं । फिरंगी कती पास सुकलात लालं ॥ कं० ॥ ५६ ॥
 तहाँ बाध बाधं महुरी रिकोरी । घनं सारसंभूद अरु चौँर भोरी ॥
 शराकी अरब्बी पटी तेज ताजी । तुरकी मद्दाबांन कम्मांन बाजी ॥ कं० ॥ ५७ ॥
 ऐसे असिव असवार अगोल गोलं । भिरे जून जेते सुतत्ते अमोलं ॥
 तिनं मद्धि सुलतांन साद्याव आपं । इसे रूप सोँ फौज वरनाय जापं ॥ कं० ॥ ५८ ॥
 तिनं घोरियं राज प्रथिराज राजं । चिहौ ओर घनघोर नीसांन बाजं ॥ कं० ॥ ५९ ॥

पृथ्वीराज का तेग सँभाल शत्रुओं पर टूटना ।

कवित्त ॥ बज्जिय घोर निसाँन । राँन चौहान चिहौ दिस ॥
 सकल सूर सामंत । समरि बल जंच मंच तस ॥
 उट्टि राज प्रथिराज । वाग मनोँ लग वीर नट ॥
 कदत तेग मनोँ बेग । लगत मनोँ बीज भट्ट घट ॥
 थकि रहे सूर कौतिग गिगन । रगन मगन भद्र ओन धर ॥
 हर हरषि वीर जगगे हुलस । हुरव रंगि नव रत्त वर ॥ कं० ॥ ६० ॥

दिन रात घोर युद्ध हुआ, पर किसी की हार जीत न हुई ।

दूहा ॥ हुरव रंग नव रंत वर । भयौ जुद्ध अति चित्त ॥
 निस वासुर समुक्ति न परत । न को हार नह जित्त ॥ कं० ॥ ६१ ॥

युद्ध का वर्णन ।

कवित्त ॥ न को हार नह जित्त । रहेइ न रहहि सूरवर ॥
 धर उप्पर भर परत । करत अति जुद्ध महाभर ॥
 कहैँ कमध कहैँ मथ्य । कहैँ कर चरन अंत हरि ॥
 कहैँ कंध वहि तेग । कहैँ सिर जुहि फुटि उर ॥

कहैं दंत मंत हय धुर धुपरि । कुंभ असुंडह रुंड सब ॥

हिंदवान रान भयभान मुष । गहिय तेग चहुवान जब ॥ कं० ॥ ६२ ॥

पृथ्वीराज की बीरता का वर्णन, शहाबुद्दीन को कमान डाल

पृथ्वीराज का पकड़ लेना और अपने साथ लेकर चलना ।

कंद भुजंगी ॥ गही तेन चहुवान हिंदवान रान । गजं जूथ परि कोप केहरि समान ॥

करे रुंड मुंड करी कुंभ फारे । बरं सूर सामंत हुकि गर्ज भारे ॥ कं० ॥ ६३ ॥

करी चीह चिक्कार करि कलप भगो । मदं तंजियं लाज^१ जमंग भगो ॥

दौरि गज अंध चहुआन केरो । घेरियं^२ गिरहं चिहौ चक्क फेरो ॥ कं० ॥ ६४ ॥

गिरहं उडी भान अंधार रैन । गई सूधि सुभै नहौं मभिक नैन ॥

सिरं^३ नाय कम्मान प्रथिराज राजं । पकरियै साहि जिम कुलिंगवाजं ॥

कं० ॥ ६५ ॥

लै चल्थौ सिताबी करी फारि फौजं^४ । परे मीर सै पंच तहँ घेत चौजं ॥

रजपुत पंचास भुभक्ते अमोरं । बजै जीत के नह नीसान घोरं ॥ कं० ॥ ६६ ॥

पृथ्वीराज का जीत कर गंगा पार कर दिल्ली आना ।

दूहा ॥ जीति भई प्रथिराज की । पकरि साह लै संग ॥

दिल्ली दिसि मारगि लगौ । उतरि घाट गिर गंग ॥ कं० ॥ ६७ ॥

पद्मावती को वर कर गोरी शाह को पकड़ कर दिल्ली के

निकट चत्रभुजा के स्थान में पृथ्वीराज का पहुँचना ॥

वर गोरी पद्मावती । गहि गोरी सुरतान ॥

निकट नगर दिल्ली गये । चभुजा चहुआन ॥ कं० ॥ ६८ ॥

लग्न साध कर धूम धाम से विवाह करना ।

कवित्त ॥ बोलि विप्र सोधे लग्न । सुध घरी परट्टिय ॥

हर बांसह मंडप बनाय । करि भांवरि गंठिय ॥

ब्रह्म वेद उचरहि । होम चैरी जु प्रत्ति वर ॥

पद्मावति दुलदिन अनूप । दुल्लह प्रथिराज राज नर ॥

(१) क-जाल ।

(२) क-करीयं ।

(३) को-तब ।

(४) को-में "लै चल्थौ निकसि सब फारि फौजं" लिखा है ।

मंडयौ^१ साह साहाबदी । अट्ट सहस्र है वर सुवर ॥

दौ दौन मौन षट भेष कौ । चढ़े राज द्रुगगा हुजर ॥ कं० ॥ ६८ ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को छोड़ देना और दुलहिन के साथ
अपने महल में आना ।

कवित्त ॥ चढ़िय राज प्रथिराज । छाड़ि साहाबदीन सुर ॥

निपत सूर सामंत । बजत नीसैन गजत धुर ॥

चंद्र वदनि मृग नयनि । कल ले सिर सनमुष्य जुष ॥

कनक थार अति बनाय । मोतिन बँधाय सुष ॥

मंडल मयंक वर नार सब । आनंद कंठह गादयव ॥

ढोरंत चवर किकर करहि । मुकट सीस तिक जु दियव ॥ कं० ॥ ७० ॥

महल में पहुँचने पर आनंद मनाया जाना ।

दूहा ॥ चढ़े राज द्रुगगह निपति । सुमत राज प्रथिराज ॥

अति अनंद अनंद सै । हिंदवान सिर ताज ॥ कं० ॥ ७१ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथीराज रासके श्री प्रिथीराज

समुद सिषर गढ़ पद्मावती पाँणि ग्रहणं जुहु पश्चात् पाति-

साह प्रिथीराज जुहुं श्री प्रिथीराज जुहु विजय पाति-

साह ग्रहनं मोषनं नाम विंशति प्रस्ताव

संपूर्णम् ॥



अथ प्रिया व्याह वर्णनं लिप्यते ॥

(सक्कीसवां समय ।)

चित्तौर के रावल समर के साथ सोमेश्वर की बेटी के
बिबाह की सूचना ।

कवित्त ॥ चिच कोट रावर नरिंद । सा सिंघ तुल्य बल ॥
सोमेश्वर संभरिय । राव मानिक सुभग कुल ॥
मुष मंची कैमास । पांन अवलंबन मंडिय ॥
मास जेठ तेरसि सुमधि । ऐन उत्तर दिसि हिंडिय ॥
सुकवार सुकल तेरसि घरह । धर लिचौ तिन बर घरह ॥
सुकलंक लगन मेवार धर । समर सिंघ रावर बरह ॥ कं० ॥ १ ॥
सोमेश्वर का अपनी कन्या समर सिंह को देने का
विचार करके पत्र भेजना ।

दूहा ॥ उत्तर दिसि आहुठ कैं । दे कगद लिपि बत्त ॥
सोमेश्वर कीनौ मतौ । भगिनि दिये प्रथु पुत्त ॥ कं० ॥ २ ॥
समरसिंह के गुणों का वर्णन ।

चौपाई ॥ प्रवत्तवै पहुमी बल राजं । अरु जोगिंद सवन सिरतांज ॥
समर सिंघ रावर चिंत्तिजै । पुचि प्रिया चिचंग सुदिजै ॥ कं० ॥ ३ ॥
कवित्त ॥ बर प्रब्वत बैराज । नरव उत्तिम चिचंगी ॥
बर आहुठ नरेस । समर सादस अनभंगी ॥
बर मालव गुज्जर नरिंद । सार बंधौ बर अड्डौ ॥
उंच सगपन कियै । पुत्त आवै घन अड्डौ ॥
बर बीर धीर जाजुलति नप२ । शिवप्रसाद अविचल घरह ॥
प्रियकज्ज अज्ज मन संभरौ । सुनि संमर कीजै बरह ॥ कं० ॥ ४ ॥
दूहा ॥ सोमेश्वर नंदन मतौ । पुच्छि कन्ह चहुआन ॥
आदि भ्रम धर पंथ ए । हिंदवान कुल भान ॥ कं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ हिंदवान कुल भान । ध्रम रष्यन सुवेद बर ॥
 लै मुंजांनी ठाल । जुभक्त संग्राम सार गुर ॥
 सो चिचंग नरिंद । प्रिथा दीनी प्रथिराजं ॥
 ह्वेम हयं गय अथि । देन दिखीय सब साजं ॥
 गह अत्त बत्त गहिजौत गुर । सिंगी नाद निसांन बर ॥
 कालंक राइ कृप्यन बिरद । मदन रंभ चाहंत धर ॥ कं० ॥ ६ ॥
 दूहा ॥ सो भगिनी दीनी प्रिथा । सकल रूप गुन लखि ॥
 चिचंगी रावर समर । अंगन अवृत सु अखि ॥ कं० ॥ ७ ॥

पत्र लेकर गुरुराम पुरोहित और कन्ह चौहान का जाना ।

कुंडलिया ॥ बाल बेस भगिनी प्रिथा । अरु समर केलि चिचंग ॥
 राज गुरु गुरुराम सम । ताजी तेरह तुंग ॥
 ताजी तेरह तुंग । मुत्ति नग माल सुरंगी ॥
 बर दाहिम कैमास । बीर बंधव मुकि रंगी ॥
 नृप कगद गहि हथ्य । कन्ह अग्या बर एसं ॥
 नर उत्तिम चिचंग । दई बर बाल सुवेसं ॥ कं० ॥ ८ ॥

पृथा कुँअरि के रूप का वर्णन ।

दूहा ॥ बर बरनत भगिनी प्रिथा । कहि न परै कवि चंद ॥
 मानौ रति कौ रूप लै । धरि आई मुष इंद ॥ कं० ॥ ९ ॥
 चौपाई ॥ सुफल दियौ फल लहौ नाहि । इंद्र सुबल बलि नवला वांछि ॥
 सीस सूर मुष अगनि कुबेर । इन समांनह सुंदर हेर ॥ कं० ॥ १० ॥

पृथा कुँअरि और समरसिंह के उपयुक्त दम्पति
 होने का वर्णन ।

कवित्त ॥ स्वाहा ज्यौं ग्रह अगनि । सीय ग्रह राम काम रति ॥
 नख दमयंत संयोग । द्रुपद कन्या अरजुनपति ॥
 इंद्र सूची वा जोग । जोग गवरिय अरु शंकर ॥
 भांनर नास्तिनि कन्ह । सोम रोहिणी नारि घर ॥

फल अण्य हथ्य सो दीन नृप । लच्छि सहज लच्छी सुतन ॥
 दुज राज राम ग्रह लगन लिषि । सद्धि महरत चिंति मब ॥ कं० ॥ ११ ॥
 इंद्र जोग पंचमी । सुबर पंचमि अधिकारी ॥
 भोम बीय नृप थान । सूर ग्रह केत उचारी ॥
 इम सुमंत ग्रह लगन । व्याह दंपति दंपति गन ॥
 और सबै सुभ जोग । होइ सुष जात धान घन ॥
 इक मास लगन बर थपि कै । दिखी वै दिखी गयौ ॥
 सुरतांन दंड लीनौ सुकर । सुकर भ्रम कारज ठयौ ॥ कं० ॥ १२ ॥

लगन का शोधा जाना ।

दूहा ॥ थपि सु लगनह राज ग्रह । मोधि पुरान उरान ॥
 बाजपेय मुष उड्डरे । मिथा व्याह उनमान ॥ कं० ॥ १३ ॥
 कवि चंद कहता है कि मैं पूरा वर्णन तो कर नहीं
 सकता पर जहां तक बनैगा उठा न रक्खूंगा ।
 बहुत मोहि कहत न बनै । बरनत कविन कठोर ॥
 गुन मैं घोरिन अपि हैं । ककु बरनिहैं सुथोर ॥ कं० ॥ १४ ॥

स्त्रियों के शरीर की उपमाओं का वर्णन ।

कवित्त विधानजाति ॥ अहि ससि सन उतंग । पिक्क उर केहरि करिवर ॥
 अलक वयन चष चंच । जीह कटि जघन बराबर ॥
 किन्न सकल चल अचल । अदिठ अलसंत चलंतह ॥
 चंदन नभ वन भवन । अंब गिरि व्यंक्त बसंतह ॥
 सुमनि सरद भय भीत निसि । रति पति लंघत मंदगति ॥
 अबला सुअंग ओपम इतिय । कही चंद इन परि विगति ॥
 कं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ को कवि ओपम बाल की । कहिबे कों समरथ्य ॥
 सब संयोग बनाइ कै । काम चक्षौ मनुरथ्य ॥ कं० ॥ १६ ॥

पृथा कुंअरि के रूप तथा नव यौवनावस्था का वर्णन ।

कंद मोतीदाम ॥ बरनों ससि जुब्बन की बय संधि । तिनं उपमा बरनी बल बंधि ॥
 मिली सिसरं रिति राजह जोर । चंघ्यौ न तनं विपनं नह कोर ॥ कं० ॥ १७ ॥

कवै चलि चंचलता चलि जाइ । धरै कबहूँ धन धीरज पाइ ॥
 तिनं उपमा बरनी कविचाई । पढ़ावन कांम नई गत ताई ॥ कं० ॥ १८ ॥
 करं सिर ठंकि सँवारत बार । सिषावन कांम मनो चट सार ॥
 दुती उपमा बरनै कवि चंद । चलै घट रूप दिषावन इंद ॥ कं० ॥ १९ ॥
 चती उपमा बरनी कवि चाह । लरै दुअ कोर मनो ससि राह ॥
 उठे थन थोर विराजत वाम । धरै मनु चाटक सालिग राम ॥ कं० ॥ २० ॥
 किधों फल तिंदुअ कंचन जान । धरै मनु अंग सुधा रस पान ॥
 तुकं हूम राजिय राजत वाम । पपीलकि सेवन पंभ विश्राम ॥ कं० ॥ २१ ॥
 जु बंकिय भोह न तुच्छ गहर । उठे मनु मच्छ धनक अंकुर ॥
 सुबालय उष्टत मोर सुदीस । मिले जनु मंगल द्वै ससि रीस ॥ कं० ॥ २२ ॥
 कहूँ उठि लागित मोर सुसीर । उठे मनु अंकुर कांम सरीर ॥
 तुकं द्रग सोभत कज्जल ताम । चढ़े जनु बाहन बल्लिय काम ॥ कं० ॥ २३ ॥
 दुहूँ कुच बीच सुरोमय तह । लगी मृग मध्य कीन सुघह ॥
 तिनं उपमा बरनी कवि रंग । पिये जनु कालिय के सुतभंग ॥ कं० ॥ २४ ॥
 कवै मिलि आनं द्विगस्तु लेहि । मनो सिसु जुब्बन तारिय देहि ॥
 स विधम चाह उभारित चक्र । इमं द्विग इष्य कटाच्छ सुवक्र ॥ कं० ॥ २५ ॥
 इते गुन लच्छिन तच्छिन बाल । करी मनो काम सिरी रति माल ॥
 भई जव बाल चढंतय बेस । दई तव पिथ्य नरिंद गिरेस ॥ कं० ॥ २६ ॥

रावल समर सिंह का गुण वर्णन ।

दूहा ॥ नर नरिंद जोगिंद पति । मुंजी ठाल विरह ॥
 उडगन निकट नरिंद विय । सेवत रहत गिरह ॥ कं० ॥ २७ ॥*
 कवित्त ॥ सिंगी रा अवधूत । वीर चिचंग नरिंद ॥
 कमल पानि सारथ्य । अरुन तेज कहि चंद ॥
 बर कप्यन कालकं । विरद साहन सुरतानं ॥
 बर प्रब्वत वैराज । भोग जोगह बड़ दानं ॥
 सो महन रंभ आरंभवै । एक रंग रत्नौ रहै ॥
 कलिकाल घाम कियै नही । भलहलंत दुज्जन दहै ॥ कं० ॥ २८ ॥

* यह दोहा मो. में नहीं है ।

श्रीफल देकर पुरोहित को तिलक चढ़ाने को भेजना और
इस संबन्ध से अपने को बड़ भागी मानना ।

दूहा ॥ फल श्रीफल दुज दृश्य कै । जाइ सैंपतौ देव ॥

आज चन्दे पाप हम । मिलि चिचंगी सेव ॥ कं० ॥ २८ ॥

भोजन भाव अनंत किय । दिसि उत्तर ग्रह रषि ॥

पाप जन्म चहुआन कै । गय दुज राज सु इषि ॥ कं० ॥ २९ ॥

पुरोहित का चित्तौर में पहुँचकर बसंत पंचमी को तिलक देना ।

कवित्त ॥ आज चन्दे पाप । समर संमुह ग्रह भगो ॥

वय अक्रम मन नटुए^१ । क्रम सुकृत^२ फल जगो ॥

पंच दिवस रहि थांन । जंपि दुज राज सु आइय ॥

बर बसंत बैसाष । लगन पंचमि थिर पाइय ॥

चतुरंग लच्छि चिचंग दिय । कुयन राम विप्रह सुतह ॥

जाने कि अगि समसान की । देषि सुतन लगो सु जंह ॥ कं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज के विवाह की तयारी करने का वर्णन ।

बाजपेय राज सू । होइ कलजुग भ्रम गुर ॥

और जगनि ना होइ । व्याह मंडो सुभ्रम धुर ॥

रथ चौसठि प्रमान । रथ बर जोग प्रमानं ॥

बार बार पर बाज । बीर सुजो उनमानं ॥

सा इक्क इक्क कर ना किरनि । सत्त सत्त सो बेद^३ विधि ॥

चिचंग राव रावर सुभ्रम । करन मतौ प्रथिराज सिधि ॥ कं० ॥ ३२ ॥

हेम द्यं गय जुगति । सचे मिष्टान पान बर ॥

बर कुबेर लभैन । पार प्रथिराज राज नर ॥

चाव दिसि बर गांन । दांन चाव दिसि अषै ॥

ब्रह्म बेद क्रम केद । सूर नहि सोरथ थपै ॥

जे जोग भोग जोगिंद नव । सो उगत महि भुखई ॥

प्रथिराज राज राजन बली । बलिन जग सम तुखई ॥ कं० ॥ ३३ ॥

(१) क. मो.—अक्रम नटुए ।

(२) को. क. ए.—अकृत ।

(३) मो.—देव ।

दूहा ॥ धरम सुथिर राजन बली । देव दैव दुति चाव ॥

चाव हिसि सो देषियै । लच्छि मोल लषि भाव ॥ कं० ॥ ३४ ॥

कंद मोतीदाम ॥ जयं जय कंद जयं गुन रूप । कटावत हेम सु बारह भूप ॥

दिसं दिसि पूरि नृपं नृप थांन । मनों विधि जग कि देवन थांन ॥ कं० ॥ ३५ ॥

रसं रस तोरन बंधत बार । मनो नट वत्त कला गुन चार ॥

सुभै अति सोभ सुभद्रह हेम । मनो बर मेर बिराजत तेम ॥ कं० ॥ ३६ ॥

सबै बर बीर फिरै जिहि पास । मनो बर भांन कलान प्रकास ॥

कढ़ै गर सुंदरि नान प्रकार । मनो ससि भांन उगे इक बार ॥ कं० ॥ ३७ ॥

बिराजत मुत्तिन बंदरवार । मनो भुअ आंन मयूष प्रचार ॥

ग्रहं ग्रह उंच सु पंति विसाल । मनो कयलासय सोभति चाल ॥ कं० ॥ ३८ ॥

कथा कविचंद सु उप्पम थोर । बिराजत पंतिय कंतिय चौर ॥

धरै धर अंश्रत पंच प्रकार । जचे तिन देत सेंतोष अहार ॥ कं० ॥ ३९ ॥

टगं टग लगिय दिष्ट प्रकार । दिषे चहुआंन कलाधर सार ॥

भली विधि रूप प्रकार प्रकार । सुभै जनु इंद्र सु जातिह द्वार ॥ कं० ॥ ४० ॥

कवित्त ॥ नहिन हेम पर भास । लच्छि कुबेर लच्छि गुन ॥

थांन थांन नवनिद्ध । देव जंघे सुदेव मन ॥

अनिम महिम गरिमास । लभि देवात महिधिय ॥

अष्ट सिद्धि नव निद्धि । राज द्वारह बर बंधिय ॥

जीतिय जितीक सुरतांन निधि । प्रिया व्याह न्निंमत करै ॥

धनि धनि धन नव पंड हुअ । लंक पंक गड्डिय डरै ॥ कं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज ने ऐसी तयारी की मानो इन्द्रपूरी है ।

साटक ॥ हेम हेमय द्वार दाहन गनं । दीसंत लच्छी बरं ॥

पंच हून सु चारि रत्न गुन ए । सिद्धांत सारं गुरं ॥

संभया वारुन तारु नैव तनयं । धन पौर संधं गुनं ॥

जानिजौ सुर लोक इंद्र उदितं । धामं सचीवं बरं ॥ कं० ॥ ४२ ॥

पृथ्वीराज का चारो दिशा में निमन्त्रण भेजना, घर घर में तयारी होना ।

कंद वनूफाल ॥ धनि ध्रंम धनि प्रथिराज । गुन दच्छि लच्छि विराज ॥
 मधि जमुन में यों धांम । सुर नाक सुर विश्राम ॥ कं० ॥ ४३ ॥
 धज इंच फरहर रूप । सुरतान पठय भूप ॥
 चैलोक न्योते काज । मनो देव व्याह विराज ॥ कं० ॥ ४४ ॥
 विधि वरन वरन सु धाम । कुब्जेर वरपिय काम ॥
 वर ध्रंम जगि प्रकार । सम दांन विनयह सार ॥ कं० ॥ ४५ ॥
 फिरि राज राजन चाल । लक्खि देव एवति पाल ॥
 षट पाल कै प्रथु पाल । ॥ कं० ॥ ४६ ॥
 मति ध्रंम भूपति साज । आनंद उक्ख विराज ॥
 जगि जोग जुगनि नैर । उच्छाह घर घर कैर ॥ कं० ॥ ४७ ॥
 विधि भांन सुरपति भांन । चहुआंन तिन सम मांन ॥
 नव नेह ग्रह ग्रह दान । कवि करै कौन बषान ॥ कं० ॥ ४८ ॥
 वर जीह फनपति होइ । चहुआन व्याहक जोइ ॥ कं० ॥ ४९ ॥

हाथी घोड़े सेना आदि की तयारी का वर्णन ।

कंद वृद्धनाराच ॥ परठि सेन सज्जि बीर बज्जण निसानयं ॥
 नाराच कंद चंद जंपि पिंगलं प्रमानयं ।
 गजं गजं हिलं मलं चला चलं गरिठयं ॥
 कसंमसं उकस्सि सेस कच्छ पिठ उठयं ॥ कं० ॥ ५० ॥
 पस्सौ सुभोम भार सो वराह कंध उन्नयं ॥
 चले सयन्न वंधि भूप चंद जंपि बोलयं ॥
 मनो दसंति काज सेन मेलि इंद्र तोलयं ॥
 दुरंत चोर गज्ज सीसता सिंदूर राजयं ॥ कं० ॥ ५१ ॥
 मनो चिजाम कंठ सूर चंद वंधि लाजयं ॥

.....
 फिरंत डोरि कुंडली सुबाज राज दिष्यही ॥

कै हथ्य भोर चंद कब्बि ता समंत पिष्यहीं ॥ कं० ॥ ५२ ॥

सु नष्यई सुरंग धाप बाज ताज उठुहीं ॥

मनों कि डोरि चकरी सुहथ्य हथ्य नष्यहीं ॥

सुबीयता सुरंग चंद उष्यमा सु रहई ॥

मनोकि तार नभतेय काल तेज तुटई ॥ कं० ॥ ५३ ॥

लजै भजै मनं गतीय पुब्बता^१ कबी कहै ॥

सु अंधिका कुरंग गति भांन देषिता रहै ॥

रजं रजं जराइ राइ क्षित्तयं किरावल ॥

उपम चंद कब्बिता कही तहां उतावल ॥ कं० ॥ ५४ ॥

पृथ्वीराज के सामंतेों की तयारी का वर्णन ।

कवित्त ॥ पंच राइ पंचाल । लिम्र बैराट बद्ध वर ॥

जैत सींच भोँचा भुआल । का कन्ह नाइ नर ॥

रा पज्जून नरिंद^२ । पांन ठंठरिय सिंघनग ॥

दह रावत आजांन । बाइ बंधव सुवन्न अग ॥

बंधन सुमैर मेवार पति । अति उक्काइ आनंद धरि ॥

संजुरिय^३ जान कचन सहस । सहस अइ बज्जन सुघरि ॥ कं० ॥ ५५ ॥

दूहा ॥ जस बेली वर हथ्य लै । फल पुच्छै चित रंग ॥

वर सोमैसर हथ्य दै । ग्रह सज्जै रस जंग ॥ कं० ॥ ५६ ॥

रावल समर सिंह का ब्याह के लिये पहुंचना,

रावल की शोभा वर्णन ।

आयो वर रावर समर । तोरन संभरि वार ॥

बाल देस बनिता बनी । मनो संग रति मार ॥ कं० ॥ ५७ ॥

सूर रूप रावर समर । बेस बाल सुत पच ॥

प्रीत चंद कमनिय कुमुद । परस सरस सित^४ रत्न ॥ कं० ॥ ५८ ॥

(१) क. मो.—पुब्बका ।

(२) क. ए.—रा पज्जून पूरन ।

(३) मो.—संमिलिय ।

(४) मो.—हिततच ।

नगर में स्त्रियों की शोभा देखने की शोभा का वर्णन ।

कंद मोतीदाम ॥ चढ़ी घर जाह्नन बाल^१ विसाल । रही लघुबेस लगी चिचसाल ॥
 तनं सुध बालय अंचल जेहिं । चषं चपला कुलटा गति केहिं ॥कं॥५८
 हलावत चंचल अंचल नारि । मनो विधि देहि कटाच्छन गारि ॥
 बंधे सुर नारि कयं सुर रंग । उरिं निरखें घन विद्युत अंग^२ ॥कं॥६०॥
 भ्रमं भ्रम होइ सुहेम किरन् । ससी पर होइ मयूष अरुन्^३ ॥
 मची बर बीरन पीकह^४ कीच । बरष्य कि मंगल सूर सु बीच ॥कं॥६१॥
 भ्रमं भ्रम होत करं नष पान । परी कवि होइ रवी ससि जानि ॥
 तिनं मुष यौ नष में भलकाइ । न दिष्यहि उंच रहै ललचाय ॥कं॥६२॥
 दिपै नग चीर चिराकन वांम । रचै अनु दीपक कामय स्यांम ॥
 सु उज्जल भोमं चिराकनि जोति । फिरै तहां बाल जराइन कोति ॥कं॥६३॥
 उदै जनु लिच्छमी कंति^५ त्रिगास । किधौ तप तेज किराज विलास ॥
 कहै कवि चंद उधम्म प्रकास । बन्धौ जनु प्रपन्न^६ तेज विलास ॥कं॥६४॥

समरसिंह के पहुंचने पर मंगलाचार होना ।

कवित्त ॥ बर कलस्स बर बंदि । बंदि तरुनिय सर लिन्नौ ॥
 ग्रह सुरंग कवि चंद । तहां उप्पम बर दिन्नौ ॥
 घन चंदन बर पठु । सिद्धिय सोभा सुफटिक मनि ॥
 घन प्रवाल पुंभिय विलास^१ । सिर सोभ सुरंग फुनि ॥
 उत्तरिय वीर रावर समर । बर जोगिंद नरिंद गति ॥
 शृंगार बाल भूषन कहौ । जु ककु चंद बरदाइ मति ॥कं॥६५॥
 दूहा ॥ स्यांम बेस नन बालभय । घटि न ककूब किसोर ॥
 दोष बाल बरनत कविय । भयौ भेर घर चौर ॥कं॥६६॥
 बर सुबस्त्र तजि बाल नें । सैसब^२ मिस सुंजारि ॥
 अब भूषन जब ग्रह करहि । जोवन चढत सवारि ॥कं॥६७॥

(१) मो.—बाम ।

(३) मो.—अरंग ।

(५) ए.—विद्यास ।

(७) मो.—विसाल ।

(२) ए. क. को.—दुरि देखत मेघ तड़ित्त सु अंग ।

(४) मो.—बीरह पीकन ।

(६) मो.—दर्पन ।

(८) मो.—शोशव ।

शृंगार का वर्णन ।

कंद चोटक ॥ तजि मज्जन सज्जि सिंगार अली । प्रगटी जनु कंद्रप जौति कली ॥
 जुसँवारिय केस सुरंग सुगंध । तिनं वर गुंथि प्रसून सु बंधि ॥ ६८ ॥
 तिनं उपमा सु कहै कवि सुद्ध । लग्यौ ससि राह अधर्मय^१ जुद्ध ॥
 चले अलकें अलि चंचल घट । लगी जुनु कालिय नागिनि पट ॥ ६९ ॥
 जस्यौ ससि फूल धर्यौ मनिबद्ध । उग्यौ गुर देव किधौं निसि अद्ध ॥
 बियं उपमा कबरी सु अलप्य । चढे मनु^२ मेर ससी लय श्रप्य ॥ ७० ॥
 सी मंति सुमुत्तिय बंधि संवारि । तिनं उपमा बरनी सु विचारि ॥
 परी रवि चौड मयूषन तार । भए जनु सिद्ध उधातम धार ॥ ७१ ॥
 बनी कबरी वर पुत्तरि बांम । अध्यातम पाठि पढावत कांम ॥
 धर्यौ वर भाल तिलक मिलाइ । मनो^३ ससि रोहिनि आनि मिलाइ ॥
 ७२ ॥

मनो^३ ससि बीयक तीय समान । तिनं सिरसाइ लिखाट सुजान^३ ॥
 दुती दुतियं बरनो कवि चंद । दुय्यौ कवि देखि सरह कौ इंद ॥ ७३ ॥
 बनी वर भोंह सु बंकिय एह । मनो^३ धनु कांम धरं विन जेह ॥
 कहौं वर नासिक ओपम एह । सु काम भवन्न कि दीपक तेह ॥ ७४ ॥
 द्रगं उपमा दुति यौं दमकै । सु मनो^३ सुत पंजन के चमकै ॥
 जु दिषै वर भाइ दुलोचन कोर । मुचावत कांम कमान के जोर ॥ ७५ ॥
 चाटंकन की उपमा इतनी । जु कही कवि चंद सुरंग घनी ॥
 जु सुन्यौ रवि राह ग्रह्यौ ससि है । सु फिरै दुहु बीच सहायक है ॥ ७६ ॥
 उपमा सु कपोलन की चिलकै । जु मनो^३ ससि है रवि में भलकै ॥
 जुटि गंठिग मुत्तिय पंतिन की । तिनकी उपमा कवि नै मनकी ॥ ७७ ॥
 दुअ पास कपोलन तेज कुय्यौ । मनो^३ तारक है ससि उगि उय्यौ ॥
 जु चिबुकन की उपमा हिलज्यौं । मनो^३ धंग सुता सितपच तज्यौं ॥
 ७८ ॥

(१) मो.—अधर्मय ।

(२) मो.—मनो ।

(३) ए० कृ.—सुजानि ।

कल ग्रीव चिवलिय रेष वनं । सु ग्रह्यौ मनु कन्धर पंच जनं ॥
 विय बाल सुमालन लाल सजै । सुध सी जनु भारति नभ तजै ॥ कं० ॥ ७८ ॥
 गुंथी पट स्याम सु मुत्तिय माल । भयौ जनु तीरथ राज बिसाल^१ ॥
 उठी पट कुटिय कंचुकि वाम । कि जीयन को चिपुरं चलि काम ॥
 कं० ॥ ८० ॥

ककू कवि कलिय की बरनं । सु रघ्यौ मनों काम तिनं सरनं ॥
 वर लंकिय लंकय सिंघ कितौ । वर मुंढिय मांदि समाइ तितौ ॥ कं० ॥ ८१ ॥
 * पसरे नन द्रष्टि न ठौर रुकै । * मृगतिलह देषि मनों सु चुकै ॥
 कटि मेषल उप्पम एह धरं । मनों नौग्रह सिंघ सदाइ बरं ॥ कं० ॥ ८२ ॥
 सुभंत समुपित अंगुरि तच । मिले गुरु मंगल हस्तनि षच ॥
 बनी कर पौंचिय पट्टय स्याम । तिनं उपमा बरनी वर ताम^२ ॥ कं० ॥ ८३ ॥
 लटकै वर अंग सु फूंदन लाष । भुलै मनु नागिनि चंदन साष ॥
 बरनों मनि बट्टि बढंत नितंब । सुभै जनु उज्जल द्वै रवि बिंब ॥ कं० ॥ ८४ ॥
 सकौमल जंघ सु रंग सुठार । अमी मन चित घरादिय मार ॥
 सजे बहु वार सिंगार सुरत्ति । चली तव हंस उथप्पन गति ॥ कं० ॥ ८५ ॥
 सु एडिय उप्पमता कवि एह । रची जनु कौरिय कुंद नरेह ॥
 बरने बख की उपमा कविता । सुजरे मनु कुंदन मुत्तियता ॥ कं० ॥ ८६ ॥
 † जल बूंद पुह्य कि द्रप्पन दुत्ति । † कि तारकि तेज कि होर प्रभत्ति ॥
 वर गोप्प सुगंध सुजानियनं । प्रगटै वर बास सदेव घनं ॥ कं० ॥ ८७ ॥
 षट दून चवगुन में बरनं । सिनगार अभूषन ए कहनं ॥
 तव सज्जिय बालत मोर मुखं । उपमा कविचंद कक्षी सुरूपं ॥ कं० ॥ ८८ ॥
 इन भाइ सुमुत्तिय गुंज^३ बहोइ । द्विगं अधरं प्रतिविंब सजोइ ॥
 करै रंगरत्त दुकूल सु ओर । भुलै मुष ऊरध पाइ भुकोर ॥ कं० ॥ ८९ ॥
 बन्धो मनवंक मनोरथ जंम । करे जह चंद जु धूरिक क्रम ॥
 मिले कि कंहु अधरा रस पांन । कहै कविचंद सु जीरन जानि ॥ कं० ॥ ९० ॥

(१) को-प्रयाग ।

* ये दो पंक्तियां मो० प्रति में नहीं हैं ।

(२) मो०-कवितांम ।

† ये दो पंक्तियां मो० प्रति में नहीं हैं ।

(३) मो०-गज ।

सु देषि कछौ कविहप अभ्यास । मनों उठई मकरंद सुवास ॥
 सुजे षट दून अभूषन बाल । मनों करि कांम करी रति माल ॥ कं० ॥ ८१ ॥
 सु लज्ज सु संकर सों मन अंध । मनों अरनांमद अगग सुबंध ॥
 धस्यो तन कौरव वस्त्र कुँआरि । मंडी जनु संभ मनमथ रारि ॥ कं० ॥ ८२ ॥

पांच सौ वैदिक पंडित, दो सहस्र कोविद, एक सहस्र
 मागध आदि गुण गाते हुए, ऐसी धूमधाम से
 रावल समरसिंह का मंडप में आना ।

कवित्त ॥ सय सुपंच वर विप्र । वेद मंचं अधिकारिय ॥
 उभय सहस्र कोविद । कंद तक्क^१ अनुसारिय ॥
 सहस्र एक मागध सु । सिक्त पौरांन पविचिय^२ ॥
 सहस्र अठु डाहालगत । गाइन सुर जित्तिय ॥
 उडिरेन धेन गोधूल कछ । सहस्र दोष कहन घरिय ॥
 संभरिय ग्रेह^३ आहुठ पति । मिलि विधान^४ मंडप भरिय ॥ कं० ॥ ८३ ॥

विवाह मंडप की शोभा का वर्णन ।

कंद नाराच ॥ विधान धान मंडपं । जवान जग^५ पन्नयं ॥
 विपष्य चारि कित्तनं । समर्ध दैव रत्तनं^६ ॥ ८४ ॥
 धुनह धुम्म सालियं । अषंड लेन वालियं ॥
 प्रजान पुन्य पानयं । सु पंच कोटि दानयं ॥
 सभूत भेम लच्छिनं । अभूत दांन दच्छिनं ॥ कं० ॥ ८५ ॥
 दमित्त काम लंबरं । कलंक कित्ति रावरं ॥ कं० ॥ ८६ ॥
 अमेन भूमि भारियं । ग्रहंत पांनि धारियं ॥
 कुसंभ चीर गंठियं । प्रथा प्रसंग पठियं ॥ कं० ॥ ८७ ॥
 सु सहियं जयं जयं । सु सह विप्रयं लयं ॥

(१) ए० को० छ०—तर्क ।

(२) मो०—पवित्तिय ।

(३) मो०—एह ।

(५) मो०—जग ।

(४) ए०—विधान ।

(६) यह तक मो० में नहीं है ।

अरुन्नयौ सु उदयं । सिकार सद्यं सयं ॥ ६८ ॥

अचिञ्ज सिद्ध चारनं । विचार बार बारनं ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ परनि बीर रावर समर । बहुत कहूं रस जोइ ॥

कवि वर वरनत ना बनत । और सुभष बहु होइ ॥ १०० ॥

करे चंद बरदाइ दुहुं । बार बार मनुचार ॥

राज राज ढिग ढिग फिरै । मनो समहु रवितार ॥ १०१ ॥

कवि कहता है कि पृथ्वीराज के यहां विवाह मंडप में
इन्द्रादिक देवता जय जय कर रहे हैं और लग्न का
समय ज्यों ज्यों पास आता है आनन्द बढ़ता है ।

कवित्त ॥ चौदानन के ग्रेह । इंद्र जचि होय अग्नि वर ॥

अष्ट देव सत सील । नाम संतोष मंच वर ॥

सहस्र गयन वर राज । धीर ठिखी अधिकारिय ॥

जख देव गंधर्व । जयति जै जै उचारिय ॥

दिव देव लगन आवै घरी । तिम तिम बाढै पेम रस ॥

ज्यों चढे समुद्र चिखोर वर । तिम सु बीर बढति जस ॥ १०२ ॥

दान सकल सामंत । न्यांत अगौ अधिकारिय ॥

इंद्र साज कुम्बेर । इंद्र वासम न विचारिय ॥

वचन रचन सचि कहचि । देव सचि कहै ग्यान सधि ॥

अष्ट जोग भुखै सभोग । निरपंत सकल सिधि ॥

जे जे नरिंद संभरि धनी । संभरि विधि संभरि चरित ॥

भूपाल बीर दरबार वर । तिहित देव लागे सुगत ॥ १०३ ॥

सामंतों और राजाओं ने जो जो दहेज दिया उसका वर्णन ।

चंद भुजंगी ॥ प्रथमं सुकन्दं निवन्धौ सु राजं । कही उप्पमा चंद कब्बीति साजं

शतं एक बाजी करी पंच दूनं । दियौ राज कन्दं निवन्तौ स जनं ॥ १०४ ॥

(१) मो०-जब ।

(२) ए०-नांस ।

(३) मो०-प्रति में "दान वरवत जलधारिण" पाठ है ।

(४) को० क० ए०-सितं ।

लकी वस्त्र हेमं नगं पारि पारं । तिनं देषते देव गत्ती विचारं ॥
 दियं निडुरं राइ रट्टौर राजं । भुजंगादि भुल्लै कदै सब्ब साजं ॥ कं० १०५ ॥
 दियं बंध राजं सलष्यं पवारं । धनं राइ कुब्बेर लभै न पारं ॥
 मचा दंत दंतीन की पंति बंधी । दरब्बार मानों नगं जोति संधी ॥ कं० १०६ ॥
 दियौ जाम जहेां सु लहो जुवानं । सचस्त्रं दसं हेम गज एक पानं ॥
 दियौ राज घौची प्रसंगंति बीरं^(१) । उमै दून हथ्यी हयं सत्त सूरं ॥ कं० १०७ ॥
 रजकी सु वस्त्रं अनेकं प्रकारं । दिषै बीर बीरं मचा बीर सारं ॥
 दियौ राज गौइंद आहुट्टु राजं । दियं तीस हथ्यी मचातेज साजं ॥ कं० १०८ ॥
 इकं माल मुत्ती उतंगं सखपं । तिनं देखतें भानं क्रनं न भूपं ॥
 अतत्ताइ दीयौ लियौ नाहि राजं । हुतौ ईस भक्तं उदै देव साजं ॥ कं० १०९ ॥
 चिया रूप आगें मचा पाप लच्छी । तिनं राज राजं निरष्यी अनकी ॥
 दियौ राम राजं रघुब्बंस बीरं । तिनें पार कुब्बेर लभ न तीरं ॥ कं० ११० ॥
 उमै सत्त बाजी उमै सत्त हथ्यी । तिनं सथ्य एकं किरन्नी विरथ्यी ॥
 उरे एक राजं दियौ एक भानं । दसं तेज राकी पराकी प्रमानं ॥ कं० १११ ॥
 दियं सत्त बंधं कनक्कू बिराजं । उमै सहस हेमं इकं बाज राजं ॥
 कियौ राज न्यौतै अजम्मेर बीरं । सदा सागरं गौरयं लाज नीरं ॥ कं० ११२ ॥
 दिष पंच बाजी सुरंगं तुरक्की । जिने धावतें वाइ की गत्ति थक्की ॥
 दियौ राज चंदं पुँडीरं सु बीरं । मचा हेम सहसं उमै बाज तीरं ॥ कं० ११३ ॥
 दियौ राज कैमास न्यौतौ नरिंदं । घरं पंचमौ भाग लच्छी स व्यंदं ।
 जितौ राज राजं दरब्बार हेमं । तितौ पंचमौ भाग अप्यौ सु तेमं ॥ कं० ११४ ॥
 दियौ चाइ चामंड लच्छि प्रकारं । नवं निड्डि सिद्धं सुलभै न पारं ॥
 रह्यो एक वस्त्रं उमै पंच बाजी । दियौ राजराजिंद राजिंद साजी ॥ कं० ११५ ॥
 दियौ अल्लहं अंग इत्तौ प्रकारं । तिष तात के नग लिल्ले सुधारं ॥
 हयं हेम रूपं गयदं सु लच्छी^(२) । जिनं देषतें इंद्र कै ग्रब्ब गच्छी ॥ कं० ११६ ॥
 दियौ दान सूक्कम्म^(३) सादल्ल सोरी । इकं बाज बीरं रजं पंच कोरी ॥
 दियौ राज चंदेल भोंचा विचारं । तिनं न्यौत कै कोइ लभै न पारं ॥ कं० ११७ ॥

(१) को.—वीरं । (२) ए. को. छ.—में “तिनं अंग अंग विरष्यं सुलच्छी” पाठ है ।

(३) ए. को. छ.—सूक्कम्म ।

नगं पंच मुत्ती इसी अट्ट माला । जिनें द्रव्य कौ छेह आवै न पाला ॥
 बंधे साहि गोरी लखी तस्सबीरं । दई राज चौहान न्योते सरिरं ॥११८॥
 सतं पंच बाजी सतं अट्ट हथ्यी । तिनं देखते तेज कुब्बेर नथ्यी ॥
 दियौ राज जंघाल जहां नरिंदं । तिनें नांम भीमं महातेज कंदं ॥११९॥
 दसं बाज पंच इकं मुत्ति मालं । तिनं तेज आवृत्त रवि किरन भालं ॥
 चसं मीति चारं सयं समरकंदी । गुरं राम दीयौ मनौ राज इंदी ॥
 छं० ॥ १२० ॥

लियौ ना सुराजं कछू नाहिं रथ्यौ । पकै धर्म राजं सु राजं बिसथ्यौ ॥
 दियौ बीर चालुक्क बाबार बीरं । सिरं काज राजं सुभारथ्य भीरं ॥
 छं० ॥ १२१ ॥

नृपं हथ्य देतं सु सेवक मंडै । महा कच कची न कचीन पंडै ॥
 हथ्यौ राज प्रथिराज दै हथ्य तारी । तिनं भारती कौन आवै प्रकारी ॥
 छं० ॥ १२२ ॥

दियौ टांक चाटा चपल प्रकारं । इकं बाज तेजं मनौ अग्नि सारं ॥
 दियौ वगरी देव देवाधि दानं । सहस्रंत बाजी दियं बाइ पानं ॥१२३॥
 दियं अंबरं काव सै पंच दूनं । तिनं तेज आवृत्त देपंत भूनं ॥
 दुल्यौ सर्व सामंत कौ गर्भ भारी । पकै दान सीसं दियं हथ्यतारी ॥
 छं० ॥ १२४ ॥

दियौ राज हमीर चाहुलि इंदं । तहां कब्बि चंदं उपमा सु छंदं ॥
 मृगं नाभि कपूरयं गुंट बाजी । दियौ मुड्ड मुष्टं तनं तेज साजी ॥
 छं० ॥ १२५ ॥

इकं कास मीरं पची संती पंभं । इकं भद्र जातो सु हथ्यी अचंभं ॥
 सबं सट्टि हज्जार भारं प्रमानं । दियौ चारके कष्ट सोभिनं दानं ॥१२६॥
 दइ एक मालं सुमुत्ती सुरंगं । दिनं एक कौ मौल आवै सुभंगं ॥
 दियौ नीति रायं सुविचीय दानं । विभ्यौ राज चहुधान घल्यौ न पानं ॥
 छं० ॥ १२७ ॥

(१) मो.—नगं । (२) को.—जालं । (३) ए.—बीजं ।

(४) ए.—पूतं ।

(५) मो.—धुमीव ।

दई भान भट्टी निधी ताप कारं । उमै एक बाजी तुहं द्रव्य धारं ॥
 दिथी बीर पाचार न्यौतौ प्रमानं । तिनं दान कैमास को आच थानं ॥
 छं० ॥ १२८ ॥

मुरं दोइ बाजी सु तत्तं प्रकारं । दई लष्य दूनं अधं तानि तारं ॥
 दिथं अलहनं दानयं मत्ति घट्टी । इकं बाजरूपं अधं सचस पट्टी ॥ छं० ॥ १२९ ॥
 इतौ अब्बसामंत दीनौ प्रमानं । सगा रथ्यदानं करै को बषानं ॥ छं० ॥ १३० ॥

कवित्त ॥ जालंधर वर बाइ । बीर थहा मुलतानी ॥
 बंग तिलंगी तुच्छ । कारनही निडानी ॥
 वर गोतम दिसि गंग पार । परबत दिसि राजं ॥
 माहू मालव राज । बीर बीरच गति राजं ॥
 कुंकुन सकुंच कालिंग दिसि । कंदलेस कछ अच्यु गति ॥
 नृपराज राज राजन बली । सुबर बीर जा बीर मति ॥ छं० ॥ १३१ ॥
 पृथ्वीराज और चित्तौर के रावल का सम्बन्ध बराबरी का है
 दोनों की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ बलिय राज प्रथिराज । सुधत सगपन सु द्रष्ट गति ॥
 बल्लब कै बल राच । सबर बीरच सुबीर मति ॥
 सुत्त मत्त रजपूत । फिरे चाव दिसि धारं ॥
 अंग अंग तनु कुत्तै । क्रम सा क्रमय सारं ॥
 मति गरुव राज राजन बली । धरै अभ लभ सुधर ॥
 चिचंग राव रावर बली । उंच सगपन तत्त वर ॥ छं० ॥ १३२ ॥

कवित्त । अति उदार पट्टु पंग । सुनिय जग बत्त अवन्नं ॥
 बलिय भाव आदरन । पर्व सम पवित समन्नं ॥
 बहुरि गरुच तोअर चिनेत । मानव मातुल गुर ॥
 तिचित्त राज चित्तयौ । भ्रम नूरति विवाच धुर ॥
 इक मात पुच आनंग वर । दै भगनी दै पुच जनि ॥
 संसार संभरिय राज गुर । भए सलष या परि सुभनि ॥ छं० ॥ १३३ ॥

पृथ्वीराज और पृथाबाई के नाना अनंगपाल का वर्णन ।

अनंग पाल तोंअर सु । भ्रम धारन उद्धारन ॥
 बंस बीय मातुलह । भए द्वै बीर सुभारन ॥
 कलि तारन अरि देह । जुगनि किन्ती विस्तारन ॥
 चाहुआन कमधज्ज । बंस मातुल गुर पारन ॥
 प्रथीराज दिल्ली नृपति । चिचंगी बर चिंतयौ ॥
 पंचमि विवाह पंचमि घरिय । भौ मुहूरत में भयौ ॥ १३४ ॥

कवित्त ॥ व्याह मदि करनेस । जग्य मधें चित डोलै ॥
 इतौ पाप कविबंध । देव देवासुर बोलै ॥
 ज्यौ चारन घर निंद । जाइ भुक्त अनुधारी ॥
 सा सुरिंद संग्रहै । दोष लगै जुग भारी ॥
 ग्यार सें अन भषह सुदृत । महा दोष अति बी सुबर ॥
 बडबंध होइ निग्रह घरन । लघु बंधव हुअ नरक पर ॥ १३५ ॥

विवाह का देव विधि से होना, बहुत सा दान दहेज देना ।

छंद पद्धरी ॥ तिन मध्य विराजत राज राज । निर्मलिय कला रवितेज साज ।
 ज्युं जुगति जूबवर करन भोग । आए सु राज राजन सुभोग ॥ १३६ ॥
 आए सुराज तिस्तुत नरिंद । हाडाल क्रन क्रनह सुभ्यंद ॥
 पंचाल देस सोमेस सूर । भलकंत मुष्य नमल सनूर ॥ १३७ ॥
 आए सु बीर क्रिन्नाट कर्न । धूमह सुदेव धूमह सुपन ॥
 एलची देस भांडेर बीर । आए सु कोटि मुष तिनह नीर ॥ १३८ ॥
 देवत्य व्याह चहुआन कीन । दंध्यं सु व्याह सम बरह चीन्ह ॥
 अप्पी सु पुचि सिवरह सु ग्रेह । कल बढी कला जिन लीन देह ॥ १३९ ॥
 अप्पे सु एक सिव ग्रह प्रमान । आवन व्याह द्रुगह निधान ॥
 मै मत्त मत्ति मंतह सु कीन । सिंगार सार सत सचस दीन ॥ १४० ॥
 हुअ व्याह जनक सीता प्रकार । मिलि जग्य राज राजन सुभार ॥
 संभरि नरेस सोमेस पुत्त । रस मानि बीर अब धूत धुत्त ॥ १४१ ॥

साटक ॥ ऐ सोमेस सुब्रंन संभरि जयं । तारंग सूरं बरं ॥
 सा दुज्जं दुज भ्रंम देवति धरा । ग्राहं ग्रहंजं षलं ॥
 तामध्यं नृप अंस सोम नृपयं । नामं नरिंदं धुरं ॥
 प्रिथ्यू नाथ सनाथ जग्य करनं । राज्यंद राजं गुरं ॥ कं० ॥ १४२ ॥

व्याह के पीछे दरबार में आना ।

कवित्त ॥ दलन मंच सब राज । आइ दरबार सु इंदं ॥
 ज्यों नक्किच विंटयौ । सरद सोहै अति इंदं ॥
 कनक पंति नग व्यंट । भांन विंथ्यौ सुमेर वर ॥
 जस विंथ्यौ बल लोई । ईस विंथ्यौ सु जटहर ॥
 यों विंथ्यौ राइ सेमेस सुअ । सबल राज राजन गरुअ ॥
 आरत्ति बीर देषति नृपति । भांन चंद लगै हरुअ ॥ ॥ कं० ॥ १४३ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ।

दूहा ॥ हरुअ सु लगग सुअर गिरि । गरुअ लगै प्रथिराज ॥
 चावहिसि लक्की सु जन । काजन मुक्किय काज ॥ कं० ॥ १४४ ॥
 दूहा ॥ लयौ जनम या कज्ज नृप । धर धर धरपति काम ॥
 चाव हिसि भूपति सुभे । जु ककु भूमि पर धाम ॥ कं० ॥ १४५ ॥
 कन्द पड्वरी ॥ जो ककु राज राजन नरिंद । सो भये काम प्रथमीस इंद ॥
 नर वर नृपत्ति दीसै प्रमानं । उज्जले गंग ज्यों भ्रंम ध्यान ॥ कं० ॥ १४६ ॥
 वर सुबर बीर पग मुक्कि धीर । बहु द्रव्य इंद्र राजन सरौर ॥
 नव लच्छि अंग ग्रह ग्रह प्रमानं । उच्छास लोइ मंडै निधान ॥ कं० ॥ १४७ ॥
 कनवज्ज बीर मुक्की सु लच्छि । तिहि देषि इंद्र कौ ग्रव्व गच्छि ॥
 कुब्बेर कोपि अंतह निरषि । सो ब्रंन धार ग्रह ग्रह वरषि ॥ कं० ॥ १४८ ॥
 बहु बंधि संधि मनु देव काज । मंगल सु जोर नीसांन बाज ॥ कं० ॥ १४९ ॥

राबल का रनिवास में जाना ।

दूहा । बर बंदे सुंदरि सकल । चावहिसि फिरि पंति ॥
 मनुं अंग अंग अन्नंगनह । रति वर राजति कंति ॥ कं० ॥ १५० ॥

कवित्त ॥ वरति चारु उप्पर । उतंड अछित मुत्ताहल ॥
 ससि उप्पर ससि किरनि । धीर सुषे गुन चाहल ॥
 चावहिसि अंगनां । अंगनं मित गुन मंडहि ॥
 एक एक कों मिलत । एक लज्या तन पंडहि ॥
 प्रिया दिषि भंषि चिचंगपति । अछित मंचह विक्रति ॥
 ओडन ओट ओटन कियै । अनय नारि नषै सुहत ॥ कं० ॥ १५१ ॥

तिलक होना, और भांवरी फिरना ।

कंद भुजंगी ॥ विथं अंग अंगति अंगं तिरंगं । बुले बेद बेदं सुजं मचं भंगं ॥
 कला की अनेकं प्रकारं व्याहं । तरै लगन साहं महं मंत राहं ॥ कं० ॥ १५२ ॥
 दियं हस्त थालं तिलकंति राजं । तहां चंद कच्ची उपमाति साजं ॥
 मनो क क मोदंत ज्यौं इंद साजं । मिल्यौ जाइ चंदं सु मुत्तीति पाजं ॥
 कं० ॥ १५३ ॥

दिसा देव मंचं अमंचंति धारें । नृपं भ्रम सोधै विधी देव टारें ॥
 बुले विप्र अंगं सु विद्धी सुवेदं । मनो देवता अग भूले सषेदं ॥ कं० ॥ १५४ ॥
 नृपं राह दिहं कहरंति टारै । फिरै भावरी भांन सुम्मेर सारै ॥ कं० ॥ १५५ ॥

ऋषीकेश वैद्य और चन्द के बेटे जल्ह आदि को दिया

तब रावल फेरा फिरे ।

कवित्त ॥ श्री पति साह सुजान । देस थंभह सँग दिन्नो ॥
 अरु प्रोहित गुर राम । ताहि अग्या नृप किन्नो ॥
 रिषिकेश दिय ब्रह्म । ताहि धनंतर पद सोहै ॥
 चंद सुतन कवि जल्ह । असुर सुर नर मन मेहै ॥
 कवि चंद कहै बर दाय बर । फिरि सुराज अग्या करिय ॥
 करि जोरि कह्यो पीथल नृपति । रावर सुत भावरि फिरिय ॥ कं० ॥ १५६ ॥
 दोहा ॥ निगम बोध गोतंम रिष । थिरि जेहि दिखी थान ॥
 दास भगवती नाम दे । प्रिथीराज चहुवांन ॥ कं० ॥ १५७ ॥
 रिषिकेश अरु राम रिष । बहु विध देकर मान ॥
 प्रिया कुंवरि परनाय कै । संगि चलायै जान ॥ कं० ॥ १५८ ॥

प्रत्येक भांवरी में बहुत कुछ दान देना ।

कवित ॥ एक फिरत भांवरी । साठि सेवात गांम दिय ॥

दुतीय फिरत भांवरी । दुरद दस एक अगारिय ॥

चितिय फिरत भांवरी । दयौ संभरि उदक्क कर ॥

सैथी भांवरि फिरत । द्रव्य दीनौ अनंत बर ॥

चहुवांन चतुठ चावहिसां । हिंदवान बर भांन बिधि ॥

गुन रूप सहज लच्छी सुवर । सहज बीर बंधी जु सिधि ॥ कं० ॥ १५८ ॥

रावल समरसिंह के पुरुषों को चित्तौर मिलने का इतिहास वर्णन
कंद भुजंगी ॥ अनेकं अनेकं प्रकारं सब्बी । करै राज भ्रमं रुतं भ्रम कब्बी ॥

मिजे सर्व छिची इते व्याह राजं । तिलभै नहीं नेक राजं सुसाजं ॥ कं० ॥ १६० ॥

महं भाजनं रंग रामं प्रकारं । कला अहु मानें सु दृश्यं पसारं ॥

रतं नील रेनं किते म्याम सेतं । तहां ओपमा चंद बरनै सहेतं ॥ कं० ॥ १६१ ॥

गुरं भांन चंदं अरी राह राजै । मनें एक नषिच सज्जे विसाजै ॥

उडंतं अवीरं घनं सार रंगं । तिनं देवता वास भूलंत अंगं ॥ कं० ॥ १६२ ॥

किते भेद भेदं मिष्टांन रूपं । तिनं वास देवं लगै सोम भूपं ॥

बिधं कुंड मंडप्य मंडे उतंगं । तिनं वास भौरं अली भूलि संगं ॥ कं० ॥ १६३ ॥

जिती विह चिचंग गावै अपारं । दियै विप्र गारी सब भक्ति सारं ॥

तुमं महि छिची न जानंत तत्तं । तिनं वंस कोनं सु पुक्कै अभीतं ॥ कं० ॥ १६४ ॥

रसं रचि कच्छी बडी पगग डठी । तिनं दुंढि दुंढात नीके लिपही ॥

बडे राज देवत बीसल्ल नारी । सराधार भारं बली सचु हारी ॥ कं० ॥ १६५ ॥

तुमैं चित्त चिचंग चित्तं विचारं । तुमं ब्रह्म वंसं चरै सचु भारं ॥

दियौ राज चारीत रिषं प्रमानं । कयौ तप्य एकं गए कंग पानं ॥ कं० ॥ १६६ ॥

सिवं लिंग बिभे तुयो सो अघाटं । तिनं टांम नामं धयो भेद पाटं ॥

रमै विप्र सायं सु चारीत रिष्यं । करै सेव वालं स आदत्त सिष्यं ॥ कं० ॥ १६७ ॥

किते क्हेद भेदं किते गान गावै । किते देवता सेव पुष्यं चढ़ावै ॥

करै रष्य तप्यं दिनं गंग न्हावै । तहां उज्जलं गंगधं नीर धावै ॥ कं० ॥ १६८ ॥

करै अंग कष्टं सधै पंच अगगी । महा तेज कीनं तनं पंच नगगी ॥

कियं पूरनं तप्य तस्थं स अगंगं । लियं लष्य चारी अचारी सु मगंगं ॥ कं० ॥ १६९ ॥

जिती काल बेसं वचै बाल पत्या । तिनं देखिकै सह जाजुल्य गत्या ॥
 रिषं उंच तेनं धिनं मोल चायं । नहीं मुष्य मंड्यौ लियौ भेलि पायं ॥ कं० ॥ १७० ॥
 चल्थौ अइ सीसं किये उइ पायं । महा तेज दुःखं दिध्यौ रिष्य रायं ॥
 नमो मंच मंची नमो घौसपालं । दिथौ राज बंसं जमं कौ बिसालं ॥ कं० ॥ १७१ ॥
 रयं मंच प्रम्मान दिध्यौ सुरिष्यं । दई भूमि जुगं जुगंतं विसष्यं ॥
 तिनं बंस चिचंग चिचं सु राजं । परं नीतिबीरं प्रिथा बाल काजं ॥ कं० ॥ १७२ ॥

कंद गीता मालची ॥ ठलकंत बैनिय बाल सैनिय म्रग नेनिय गावईं ।

मधुरं सबहं रहसि बहं चहं चहं भावईं ॥

बै स्याम सोरं गुनति गोरं चिच सोरं सोहईं ।

गुञ्जतं थोरं उठे कोरं बेस भोरं सोहईं ॥ कं० ॥ १७३ ॥

बिवाह की शोभा का वर्णन ।

कवित्त ॥ विधि अंगार रस बीर । हास करुना तन चारिय ॥

रुद्र भयानक मंत । करी करुना ता वारिय ॥

करुना तजि रस अट्ट । भयौ नृप राज बिवाह ॥

सुष सनेह धन ग्रेह । राज जोगिंदति साह ॥

सुष व्याह सजन सम वृत रवन । गई नट्टि चय जांम निशि ॥

सहदेव देव देषन चलह । भुगति मुगति धन राज बशि ॥ कं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ सा सुंदरि सुंदरि सुकथ । रस^२ दरसन परिमान ॥

मनों देव देवाल बजि । बर दुंदभी निसान ॥ कं० ॥ १७५ ॥

कंद भुजंगी । बजे दुंदभी भेरि देवाल थानं । करे युक्ति रूप अनेकं प्रमानं ॥

न्रिपं भीर औसीं दरब्बार थानं । मिले षंड षंड सुराजान जानं ॥ कं० ॥ १७६ ॥

प्रिथा रूप अगै प्रथी कौन औसी । जनकं सुदारं सिया रूप कैसी ॥

भुगत्ती मुगत्ती चितं ताइ कारं । सबै दिषियं राज राजं दआरं ॥ कं० ॥ १७७ ॥

महा भोजनं ते प्रकारं विलासं । तिनं खाद ते देव कंडे न पासं ॥

रचै अग्नि खाहा सुदेपति होज । महा जग्य जापं अहतंत सोज ॥

कं० ॥ १७८ ॥

क्विन क्विन्न लंका सपत्नौ विराजै । दिनं अष्ट ग्रेहं रचै द्वार साजै ॥
सुई राज लच्छी न पूजै सुकंती । जये देवता जगय में जीमवंती ॥ कं० ॥ १७८ ॥

कवित्त ॥ बहुत मंसधन सार । असन बलमीन समंछत ॥

अनैंग जोग फल अनत । पान मिष्टान असंछत ॥

क्विति क्विची विधि सजहि । देइ लज्जी लक्खि रुपं ॥

रंक रंक गति कंति । होइ राजिंद सुभूपं ॥

नवनीत सुनीत पुनीत प्रभु । चाहुआन रंजे सुभर ॥

जानियै राज राजन कै । सुरा थान माया सुधर ॥ कं० ॥ १८० ॥

अग्र दीप धनसार । बंटी मृगमद पान रस ॥

बहुत सरस रस राज । दिषि प्रतिव्यंब अप्प जस ॥

अरति व्यंद अरविंद । कमल कैरव ससि सागर ॥

भुगति मुगति संग्रहै । मुकति भंजै अति आगर ॥

मय मंत कूअ^१ अष्ठा अषम । लपिन बतीस सुवंधि गुन ॥

तिहि काज भोज राजन करत । उक्काहं प्रथिराज मन ॥ कं० ॥ १८१ ॥

दूहा ॥ माया सोष^२ सु देषि कै । गति भूले चलाहि^३ ॥

माने मंच सुमंति^४ गति । बर ब्रह्मा वस भांछि ॥ कं० ॥ १८२ ॥

पृथ्वीराज के दान दहेज देने का वर्णन ।

कवित्त ॥ एक एक रन जोग । गरुअ हरुअत्त चित्त विधि ॥

सांम दान लघुमंति कंति मग्गीति संति सिधि ॥

अबलि बाज गज एक । उमै अप्पै नर वस्त्रं ॥

हेम हीर रजकीय । पार पावै ना मंत^५ ॥

गरुअत्त गरुअ भय अत्त सेां । सत हस्थिय करनिय जुगति ॥

प्रथिराज राज राजन वलिय । देव दान राजन भुगति ॥ कं० ॥ १८३ ॥

कवित्त ॥ राज दान विधि देत । लगि आचिज्ज थान चिय ॥

नाग लोक सुर लोक । रवी मंडल नर नर हिय ॥

(१) मो.-कूआ ।

(२) मो.-सोभ । को.-सोख ।

(३) मो.-छ.-को.-चलाहि ।

(४) ए.-को.-छ.-मंत ।

(५) मो.-मंच ।

हयति कंति कंतिथति । हथ्य पंतिय रवि राजै ॥
 सु कवि चंद बर दाइ । देषि देवाधि सु लाजै ॥
 बदि राज धान संभरि धनी । किहि बिधि लकी लकै गुनौ ॥
 बैह सुगंग उडगनति नभ । पत्त तरोवर गिर घनौ ॥ कं० ॥ १८४ ॥

दूहा ॥ दान मान निरमान गुन । भगति रत्ति नृप जोर ॥
 कदा दिष्य कोइ लेइ निधि । भयौ भरे^२ घर चोर ॥ कं० ॥ १८५ ॥

दूहा ॥ तन अगौ मन चलत है । मन अगो तन जाइ ॥
 जिहि बिधि दान सु उच्चरै । तिहि बिधि पाप सु जाइ ॥ कं० ॥ १८६ ॥

दूहा ॥ क्रमसु अति विधिनां रची । अंग रोर सिर पान ॥
 तिन भंजन सोयेसु सुअ । धनि संभरि चहुआन ॥ कं० ॥ १८७ ॥

चौपाई ॥ दिसि दिसि पूरिय चय गय राज । प्रिथीराज सुरपुर सम साज ॥
 बाजै पंच सबद बनि रंग । रचबनि दादस सूर अभंग ॥ कं० ॥ १८८ ॥

कवित्त ॥ एक दीह निडूरह । राज रष्यो चिचंगी ॥
 * दुतिय दीह सामंत । गरुअ गोविन्द अभंगी ॥
 चितिय दीह पञ्जन । बलि कूरंभ सुधारी ॥
 चतुर दीह नर नाह । कन्ह कीनी किति भारी ॥
 पंचमै दिवस कैमास बलि । बलि सुराइ सम जग्य किय ॥
 छहै सु दीह पुंडीर धनि । धीर रष्य कीरति लिय ॥ कं० ॥ १८९ ॥

कवित्त ॥ सत्तम दिन रघुवंस । राम करनी कर मेरं ॥
 जिहि नंदी पुर भंजि । समर मनुहारि सुवेरं ॥
 अठम दिन अचलेस । अचल कीरति जिन रष्यी ॥
 नवम दिवस पाहार । जगत दारिह सु नंधी ॥
 दसमै पवार धाराधि पति । सलष सु लषि पूरन विधि ॥
 दिन एक एक रष्ये सवन । पंच चार लुहाय निधि ॥ कं० ॥ १९० ॥

(१) ए० क० को०-उडनति । (२) मो०-भयो ।

* ए० को० क० प्रति में “दुतिय गोविन्द सु दीह । गरुअ सामंत अभंगी” पाठ है ।

रावल का बारह दिन तक बारह सामतों ने अपने
अपने यहां नेवता किया ।

कुंडलिया ॥ रषि उभय षट् वीर वर । वर जंधारो भीम ॥
जिहि ओलें प्रथिराज की । को अरि चंपे सीम ॥
को अरि चंप सीम । देव दुज्जन अधिकारिय ॥
तिहि रष्यौ चिचंग । समर रावर ग्रह चारिय ॥
विधि विधानं निम्मान । द्रव्य अर्चन करि चष्यौ ॥
रावर समर नरिंद । न्याति दादस दिन रष्यौ ॥ कं० ॥ १८१ ॥

बारह दिन तक रहकर रावल का कूच की तयारी करना ।

दूहा ॥ षट वीय द्यौस रषौ सु नृप । भर सु भाति बहु राज ॥
दिन बारह चिचंग पति । बज्जे बज्जन बाज ॥ कं० ॥ १८२ ॥

कवित्त । बजि बाजन अनुराग । सबर उच्छव वर धारिय ॥
नूर धूप तें अक्क । पंड हथिनापुर सारिय ॥
हुअ उक्काह दिल्लीस । बंधि गुडिय ग्रह^२ धारं ॥
मनौ सोम कल कोट^३ । करिय कल बल बिस्तारं ॥
धन ग्रहति ग्रह उच्छाह हुअ । चाहुआन रवि बट्यौ ॥
वेनिय^४ सुजस्त पुरषातनह । बल अनंत घट चटुयौ ॥ कं० ॥ १८४ ॥

बरात लौटने की शोभा का वर्णन ।

कं० मोतीदाम ॥ इति कंद सुकंद सुचंद प्रकार । सु मुत्तियदाम पयं पय चार ॥
परे गजनां जिहि कंकन चार । इसो गुन पिंगल नाम उचार ॥ कं० ॥ १८५ ॥
दसों दिहि पूरि नृपत्तिय सेन । बिराजय राज अनंद सु अैन ॥
सुधिं सुधि वीर प्रकार प्रकार । चलें संग दंपति ज्यों रति मार ॥ कं० ॥ १८६ ॥
ठनंकिय घंटनि हथिय पूर । किनं किय बाजिय साजिय सूर ॥
इकं इक हथिय दासिय पंच । इसी सरसं गुन रक्षिय संच ॥ कं० ॥ १८७ ॥

(१) ए०-कू०-वर ।

(२) मो०-घर द्वारं ।

(३) मो०-कोटि ।

(४) ए० कू०-विलिय ।

विधिं विधि पूरन पत्तिय सोम । तिनं किय उज्जल सज्जल व्योम ॥

रहं रह राजत साजत सेन । मनों दिव देव दिवाधिय तेन ॥ १८८ ॥

तुरंगनि तुंगनि की प्रति दींस । लगै तिन मंद सुखं दह ईस ॥ १८९ ॥

दूहा ॥ ईस मंद संकर उदित । ब्रह्म ध्यान सिव पान ॥

संभरि घर चिचंगपति । को सन मानन जान ॥ १९० ॥

कवित्त ॥ बर सु बुद्धि साधन सरीर । जोगह अधिकारी ॥

कर अदगग जग दगग । सरन रष्यन जुगचारी ॥

माया सों नहि लिपत । नीर नीरज समान बर ॥

यो चिचंग नरिंद । चतुर विद्या कोविद नर ॥

गोरी सु बंध सुरतान रन । जस लेयन जै जैति बर ॥

सा लच्छि रूप भगनी प्रिया । परनि राज पत्तौ सुघर ॥ १९१ ॥

दूहा ॥ जहां परनि चिचंगपति । करी उलटि बिपरीति ॥

सिर अप्पौ जुगिगनि नृपत । देव लोक दिवजीति ॥ १९२ ॥

अनंगपाल का बहुत कुछ दान देना ।

कवित्त ॥ बाजे बीर सु बाजि । राज बज्जा सो बज्जा ॥

जस बज्जा बज्जात । दम्भ क्रमं चित रज्जा ॥

सम न कोई चिचंग । गरुअ गहिलोत गरुअ मति ॥

धनि सुधम्म अरु दान । दियै दिखीस बहु भँति ॥

भर मंडि बीर बुट्ट दिषस । सत्त अट्ट अरु पंच भति ॥

अगगरे बांन बर काम छत्त । इक्क वार घट्टइ सुगति ॥ १९३ ॥

रोल्हा ॥ जो दिन रही दिखी प्रति मानिय देव गति ॥

रति संपति सुख ग्रेष भार आर अति

दुहुं तन सुमन निरखिय लोइ बर ॥

मानों सची सँजोग सुरपति आपु धर ॥ १९४ ॥

दूहा ॥ कनक क्रीड सुषे जयति । रतिन कहै कवि चंद ॥

बर जानै कै दंपती । कै दीपक कै चंद ॥ १९५ ॥

कवित्त । मति मध्या भय बाल । विनौ प्रौढा अधिकारी ॥
 लच्छी सोज सहज्ज । रूप रति बरन सु सारी ॥
 धीरं तन सिय सार । विरह मंदोदरि नारी ॥
 पति सु वृता रुकमनी । गिनी^१ हूँधिनि अधिकारी ॥
 सा प्रथीराज भगनी प्रिया । देव जग्य सम जग्य क्रिय ॥
 आनंद रूप आनंद कथ । सोम नंद जस बंद लिय ॥ कं० ॥ २०६ ॥

कवित्त ॥ अरुन तहन उदयंत । सिद्ध सिक्कर फिक्कारिय ॥
 दिसि उत्तर ईसान । दिसा दस दसन उकारिय ॥
 बिमल नाग वल्लिय विनोद । केलिय अबिलंबिय ॥
 वागवान दरिमीय । रवन राजन कर संमिय ॥
 संचार सुमन सौरभ बर । अमर रोरि रंगिय करिय ॥
 आगम अरंभ बर बरष फल । जगति जोति व्यासह धरिय ॥ कं० ॥ २०७ ॥

व्यास जगजोति की भविष्यद्वाणी ।

कहत व्यास जगजोति । नयर नागोर वसंतह ॥
 जोइ नंदै सोइ नंद । हसै सो रचौ हसंतह ॥
 इंद्रपथ्य पुर आदि । राज राजन चहुआनह ॥
 अमर बेलि कीरति । अकेह साधन सुरतानह ॥
 आचिज्ज बत्त हिंदुअ तुरक । हमल हेल हसै भुअन ॥
 प्रथमंग पुब्ब पच्छिम पथिर । होत बत्त गंधव सुअन ॥ कं० ॥ २०८ ॥
 कवित्त ॥ रुधिर अकनित न्हान । कच पुब्बह पच्छिम पर ॥
 कोलाहल कमिनिय । कज्ज हारम्य देव हरि ॥
 समर सून्य^२ मँडलीय । अमर विचार बार^३ क्रिय ॥
 द्रुपद राय पंचाल । दुसह द्रोपदिय चीर लिय ॥
 * सोइ समय वरष इकईस मय । हरषवंत जुगनि कहिय ॥
 बंचै विचार हिंदू तुरक । इक्क अचल कीरति रहिय ॥ कं० ॥ २०९ ॥

(१) ए-को-ह-गिति ।

(२) ए-सून्य । (३) मो-सार ।

* मो-प्रति में "सोई समय अमय षष्ठ विय वरष" पाठ है ।

सभों का अपने अपने घर लौटना ।

कवित्त । * “अप अप ग्रेह गुरंम्य” । राज राजन संपत्ते ॥

भोरा राव भिमंग । बत्त पुच्छै जग जित्ते ॥

पामारिय प्रारंभ । सोर संभरि^१ आदानह ॥

सा रुं^२ सोमेस । पुत्त बंधन सुरतानह ॥

हेला हमीर हमीर सेां । विजय राज कमधज्ज किय ॥

अच्छर अचम्भेगल्हां गरुअ । धरनि पंच चहुआन लिय ॥ कं० ॥ २१० ॥

कवित्त ॥ धरनि पंच चहुआनि । आनि फेरिय कर जित्तौ ॥

ता पक्क हिंदू तुरक । सबै^३ बीतक ज्यौं वित्यौ ॥

धीर मीर संग्रहिग । भीर भंजिय भिरि राजन^४ ॥

जै जै तन चहुवान । देव दुंदुभि धन बाजन ॥

जिहि ग्रहन पानि रावर समर । दूअ आगम जोतिग कहै ॥

अप अप्प क्रम केलिय कहल । लिष लिलाट तित्तौ लहै ॥ कं० ॥ २११ ॥

दूहा ॥ सत्तरि सत तिय अग करि । रज रज अप्प ब्रह्मस ॥

लीन सगोरी दंड धपि । षट् सित्त पंचास ॥ कं० ॥ २१२ ॥

शाह गोरी का रावल को दहेज देना ।

कवित्त ॥ सत्तरि सत तिय अग । बीर गज राज सु अप्पिय ॥

ते लीनों सुरतान । साहि गोरी गोरी किय ॥

पंच सित्त पंचास । एक सौ तुंग तुरंगम ॥

सौ दासी चतुरंग । सत्त डोलिय अचंभम ॥

चतुरंग लछ्छि चिचंग दे । बर सोमेसर थपियै ॥

बुल्लाह^५ सजन रावर समर । पंच कोस मिलि जंपियै ॥ कं० ॥ २१३ ॥

* मो. प्रति में यह पंक्ति नहीं है ।

(१) ए. को. छ.—संभि ।

(२) ए.—अबंध ।

(३) ए. को. छ. प्रति में नहीं है ।

(४) ए. को. छ.—रावन ।

(५) छ.—बौलार्द ।

प्रथा व्याह की फल स्तुति ।

सुनै ग्रहै उग्रहै । बत्त बिय सम उच्चरै ॥

लिषै दिषै अरु सुनै । सुद्ध मंची सुद्धारै ॥

प्रथा व्याह संभरै । पंच भौ अंचन लग्गै ॥

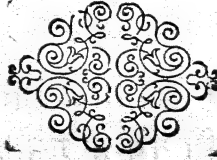
सेस फनंमित सुभट । काल पंसी नन लग्गै ॥

साधवी सीय भगनी प्रिथा । प्रथा बरन चिचंग पर ॥

इन सम न कोइ भुवनह भयौ । नन हैहै रवि चक्र तर ॥ ६० ॥ २१४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके प्रिथा विवाह

वर्णनं नाम एकविंसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २१ ॥



अथ होली कथा' लिख्यते ॥

[बाइसवां समय ।]

पृथ्वीराज का चन्द से पूछना कि होली में लोग लज्जा
और छोटे बड़े का विचार छोड़कर अबोल बकते
हैं इसका वृत्तान्त कहो ।

दूहा ॥ इक दिन प्रियु नृप पुच्छयो । कहि कविचंद विचारि ॥
नर नारी लज्जा गई । फागुन मास मभार ॥ कं० ॥ १ ॥
बाल वृद्ध जुव्वन पुरुष । बुखै बोल अबोल ॥
मात पिता गुर ना गिनै । निकसै टोला टोल ॥ कं० ॥ २ ॥
चार वरन इक्कत मिल । कलह रूप कलहंत ॥
षाधि अपाधि न जानहीं । ज्यों मन नहिं विलसंत ॥ कं० ॥ ३ ॥
या पुच्छी कविचंद कौं । हिय हरष सुषदाय ॥
जु ककु भयौ सु कहौ तुम । तुम वानी बरदाय ॥ कं० ॥ ४ ॥
चन्द का कहना कि चौहान वंश का हुंढा नामक एक
राजस था उसकी छोटी बहिन हुंढिका थी ।
हुंढा नाम राघस हुतौ । चहुवाना कुल मभित्त ॥
तस लघु भगिनी हुंढिका । जोंवन रै सुष संभित्त ॥ ५ ॥
हुंढा ने काशी में जाकर सौ वर्ष तप किया, यह सुन
हुंढिका भी भाई के पास गई, हुंढा भस्म हो
गया तौ भी हुंढिका बैठी रही, उसे सौ
वर्ष योंही सेवा करते बीता ।
हुंढि गयौ वानारसी । सत्त वरस तप किन्न ॥
तब हुंढी सुनकै गई । रची आत सुष चिन्ह ॥ कं० ॥ ६ ॥

(१) मो. और को. प्रति में यह (होली) समय नहीं है ।

(२) ए.-माहि ।

हुंढै तन मन जग्य मैं । बाल कियौ भसमंत ॥

प्रिथीराज चहुवान भय । भए सूर सामंत ॥ कं० ॥ ७ ॥

तब हुंढी बैठी रही । सत्त वरष-जग जान ॥

पवन खाय सेवा करै । ताको सुनौ बषान ॥ कं० ॥ ८ ॥

तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर हुंढिका से कहा कि
मैं प्रसन्न हूं वर मांग ।

तब गिरिजा सु प्रसन्न भय । मैगि हुंढी वरदान ॥

हम सहै तब सह करनि । भषि करै नर जान ॥ कं० ॥ ९ ॥

हुंढिका ने कहा कि यह वर दो कि बाल वृद्ध सब
को मैं भक्षण कर सकूं ।

बाल वृद्ध भष्यन करौं । हम को दै महमाय ॥

यह बानी सुनि सामुही । रष्या करनी राय ॥ कं० ॥ १० ॥

गिरिजा ने शिव जी से कहा कि ऐसा उपाय कीजिए कि हुंढिका
की बात रहै और वह नर भक्षण न कर सकै ।

तब गिरिजा पति मौं कछौ । हुंढी रष्य सु वत्त ॥

हुंढी नर भष्यन करै । सोय विचारौ मत्त ॥ कं० ॥ ११ ॥

गिरिजा शिव मिलि यौं कहै । एक अपूरब वत्त ॥

जोगी जंगम बाहुरै । मे राषे नित नित ॥ कं० ॥ १२ ॥

शिवजी ने आज्ञा दी कि फागुन में तीन दिन जो लोग गाली
बकैं, गदहे पर चढ़ैं, तरह तरह के स्वांग बनावैं उनको
छोड़ और जिसको पावै वह भक्षण करै ।

विहल विकल बानी असुर । बोलहिं बोल अनन्त ॥

एता नर सारीत जवि । अवरनि कौ करि अंत ॥ कं० ॥ १३ ॥

सिव अग्या पवनह दई । प्रिथमी घर सहु अंग ॥

फागुन मासह तीन दिन । करौ अनेरौ रंग ॥ कं० ॥ १४ ॥

रासभ परि चढ़ि चढ़ि हसहिं । सूप सीस धर लेहु ॥

गोसा बंधै गलि फिरै । हो हो सबद करेहु ॥ कं० ॥ १५ ॥

हुंढिका ने जब आकर देखा तो सभों को गाली बकते, पागल से बने, गाते, बजाते, आग जलाते, धूल राख उड़ाते पाया ।

हुंढी आइ जहां तहां । दिष्ये लोग अजान ॥

हो हो करि रासभ चढ़ै । ए कवि कहै बषान ॥ कं० ॥ १६ ॥

चटक चटक दिन प्रति भयै । मद मादक अपमान ॥

नर नारी सब मति गई । ए पन मन अनुमान ॥ कं० ॥ १७ ॥

सिंधू राग बजावहीं । गावहिं नवला गीत ॥

हो हो करि हा हा करै । ए मंडी विपरीत ॥ कं० ॥ १८ ॥

घरि घरि अगनि प्रजारहीं । उभिक धूर अरु राष ॥

नाचै गावै परस्पर । चिया दिषावन काष ॥ कं० ॥ १९ ॥

इहि विधि बाउ जवाविउ । फगुन मास सों भाव ॥

लज्ज भज्ज विघघन गई । भावै षाव सुषाव ॥ कं० ॥ २० ॥

इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति को टाला, चैत का महीना आया घर घर आनन्द हो गया ।

इहि विधि दुरित निवारियौ । मिथ्यौ सबी उर दंद ॥

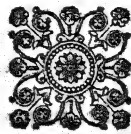
आयौ चैत सुहामनौ । गृह गृह भयौ अनंद ॥ कं० ॥ २१ ॥

जाड़ा बीतने और बसंत के आगमन पर लोग होलिका की पूजा करते और हुंढिका की स्तुति करते हैं ।

श्लोक ॥ गतेन पार समये । वसंते च समागमे ॥

होलिका प्रव्व पूज्यंते । हुंढा देवी नमोस्तु ते ॥ कं० ॥ २२ ॥

इति श्री कवि चंद बिरचिते प्रिथीराज रासके होली कथा समय नाम बावीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ।



अथ दीपमालिका कथा लिख्यते ।

(तेइसवां समय ।)

पृथ्वीराज ने फिर चन्द से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका
पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहे ।

दूहा ॥ फिर पूछी पृथ्वीराज नृप । कहे चंद कवि सब्ब ॥

हैतु सुकार्तिक मास महिं । दीप मालिका प्रब्व ॥ कं० ॥ १ ॥

चन्द का दीपमालिका की उत्पत्ति कहना ।

कहि कविचंद नरिंद सुनि । जो पुच्छौ कथ मोहि ॥

दीपमालिका उत्पत्ति सब । कहै सुनाजं तोहि ॥ कं० ॥ २ ॥

सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का बेटा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी था,
सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष
था, सब लोग उससे प्रसन्न थे ।

सत्ययुग सतव्रत राजसय । प्रलय दिषायौ देव ॥

तासुत सोमेश्वर कहिय । सुर नर करत सुसेव ॥ कं० ॥ ३ ॥

बहुत पुष्प पालै प्रजा । रिद्ध दिद्ध मंडान ॥

चार वर्न चंडु आश्रमहि । दान मान परिधान ॥ कं० ॥ ४ ॥

उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग़ लगे थे वहां एक
वैदिक ब्राह्मण रहता था, उसकी स्त्री छल रहित थी ।

ता नगरी सत्यावती । सरित समुद्रच तहि ॥

बारी बाग विचित्र नर । ग्यान ध्यान घटि घटि ॥ कं० ॥ ५ ॥

तहां वसे सतश्रम द्विज । वेदवंत बल बुद्धि ॥

ताकी नारी नागरी । ताकर नाहीं रिद्धि ॥ कं० ॥ ६ ॥

स्त्री ने पति से कहा कि धनहीन दशा में जीना और दुःख भोगने
से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करो ।

अवर न कोई नर दुषी । सुष भोगवै अनंत ॥

नारी कहि जिसु रष्य सम । त्रिथा जीव तुम कंत ॥ कं० ॥ ७ ॥

विथ्या जीवन मनुष कैा । जो धन नाहीं पास ॥

ताते को? उपचार कर । करै रहै बन वास ॥ कं० ॥ ८ ॥

सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञान ध्यान की ओर चित्त दिया ।

तब सतिश्रम आदर करिय । ग्यान ध्यान चित देषि ॥

जीवन जनम विथा गयो । पाप उदय तन देखि ॥ कं० ॥ ९ ॥

गाथा ॥ सपनो अथ्य विहूनौ । सेवेरने न भाषयौ दीनौ ॥

मंगह मरन मद्द गोन । बीकि नेम न मानि कित ॥ कं० ॥ १० ॥

**सत्याश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने
ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा
कि माया को प्रसन्न करो हमारा सब
काम वही करती है ।**

देहा ॥ सत्ति सरम सत वरष लो । सेये विष्णु नरंत ।

विष्णु बतायौ ब्रह्मा कैा । ताको पार न अंत ॥ कं० ॥ ११ ॥

तब ब्रह्मा सु प्रसन्न भय । रुद्र बतायौ ताम ॥

रुद्र कह्यौ माया बरहु । करै हमारौ काम ॥ कं० ॥ १२ ॥

**तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई
और उसने चौदह रत्न दिए ॥**

चियन बरस चिय मास दिन । चीय घटी पल उन्न ॥

सु प्रसन्न भइ सा कामिनी । दिय चौदहौ रतन्न ॥ कं० ॥ १३ ॥

**सत्यश्रम ने विचार किया कि राजा की सेवा करनी चाहिए,
ऋद्धि सिद्धि से क्या होता है ।**

तब सतिश्रम ऐसी कही । कहा रिद्ध अरु सिद्धि ॥

सेवौ नरपति नाह को । एह बातएहु तिद्ध ॥ कं० ॥ १४ ॥

दिन पहर बुधि उप्पजी । दिन विहसि बुधि जाइ ॥

अथ दीपमालिका कथा लिख्यते ।

(तेइसवां समय ।)

पृथ्वीराज ने फिर चन्द से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका
पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहो ।

दूहा ॥ फिर पूछी पृथ्वीराज नृप । कहो चंद कवि सब्ब ॥

चैतु सुकातिक मास महिं । दीप मालिका प्रब्व ॥ कं० ॥ १ ॥

चन्द का दीपमालिका की उत्पत्ति कहना ।

कहि कविचंद नरिंद सुनि । जो पुच्छौ कथ मोहि ॥

दीपमालिका उत्पत्ति सब । कहै सुनाऊं तोहि ॥ कं० ॥ २ ॥

सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का बेटा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी था,
सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष
था, सब लोग उससे प्रसन्न थे ।

सत्ययुग सतव्रत राजसय । प्रलय दिषायौ देव ॥

तासुत सोमेश्वर कहिय । सुर नर करत सुसेव ॥ कं० ॥ ३ ॥

बहुत पुष्प पालै प्रजा । रिद्ध दिद्ध मंडान ॥

चार वर्न चहु आश्रमहि । दान मान परिधान ॥ कं० ॥ ४ ॥

उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग लगे थे वहां एक
वैदिक ब्राह्मण रहता था, उसकी स्त्री छल रहित थी ।

ता नगरी सत्यावती । सरित समुद्रह तहि ॥

बारी बाग विचित्र नर । ग्यान ध्यान घटि घटि ॥ कं० ॥ ५ ॥

तहां वसे सतश्रम द्विज । वेदवंत बल बुद्धि ॥

ताकी नारी नागरी । ताकर नाहीं रिद्धि ॥ कं० ॥ ६ ॥

स्त्री ने पति से कहा कि धनहीन दशा में जीना और दुःख भोगने
से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करो ।

अवर न कोई नर दुषी । सुष भोगवौ अनंत ॥

नारी कहि जिसु रष्य सम । त्रिथा जीव तुम कंत ॥ कं० ॥ ७ ॥

विथ्या जीवन मनुष कौ । जो धन नाहीं पास ॥

ताते को? उपचार कर । करै रहै बन वास ॥ कं० ॥ ८ ॥

सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञान ध्यान की ओर चित्त दिया ।

तब सतिश्रम आदर करिय । ग्यान ध्यान चित देषि ॥

जीवन जनम विथा गयो । पाप उदय तन देखि ॥ कं० ॥ ९ ॥

गाथा ॥ सपनो अथ्य विहूनौ । सेवेरने न भाषयौ दीनौ ॥

मंगह मरन मह गोन । बीक्रि नेम न मानि कित ॥ कं० ॥ १० ॥

**सत्याश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने
ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा
कि माया को प्रसन्न करो हमारा सब
काम वही करती है ।**

देहा ॥ सति सरम सत वरष लो । सेये विष्णु नरंत ।

विष्णु बतायौ ब्रह्म कौ । ताको पार न अंत ॥ कं० ॥ ११ ॥

तब ब्रह्मा सु प्रसन्न भय । रुद्र बतायौ ताम ॥

रुद्र कह्यौ माया बरहु । करै हमारौ काम ॥ कं० ॥ १२ ॥

**तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई
और उसने चौदह रत्न दिए ॥**

चियन बरस चिय मास दिन । चीय घटी पल उन्न ॥

सु प्रसन्न भइ सा कामिनी । दिय चौदहौ रतन्न ॥ कं० ॥ १३ ॥

**सत्यश्रम ने विचार किया कि राजा की सेवा करनी चाहिए,
ऋद्धि सिद्धि से क्या होता है ।**

तब सतिश्रम ऐसी कही । कछा रिद्ध अरु सिद्धि ॥

सेवौ नरपति नाह को । एह बातएहु तिद्ध ॥ कं० ॥ १४ ॥

दिन पडर बुधि उप्पजी । दिन विहसि बुधि जाइ ॥

दीप दिपायौ बुद्धि वर । वृभै दीप लखि जाइ ॥ कं० ॥ १५ ॥
 गाहा । को कौन पथीयौ । को कौन जची ॥
 कह कहन नामियं सीस । दुभर^१ गअर चक्र औ किन्नयं किन कायवं ॥
 कं० ॥ १६ ॥

**ब्राह्मण की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि कार्तिक की अमावस
 सोमवार को लक्ष्मी उसके पास आती है ।**

दोहा ॥ वंभन बुद्धि विनास हुइ । तहं दिष्यै लक्खिवास ॥
 कार्तिक मावस सोम दिन । लखि आवहि तिहि पास ॥ कं० ॥ १७ ॥
 लच्छी जल निधि ही वसी । निकसि तिहू दिन दिन ॥
 अगर कपूर सुदीप दर । जहां पान उर विन्न ॥ कं० ॥ १८ ॥

**ब्राह्मण को चार वर्ष राजा की सेवा करते बीता तब
 राजा ने कहा कि वर मांग ।**

वंभन राजा सेवौ । वरस भये दुअ चार ॥
 तब राजा वरदान दिय । मंगौ मन्नि विचार ॥ कं० ॥ १९ ॥

**ब्राह्मण ने दीपदान वर माँगा अर्थात् कार्तिक की अमावस
 को उसके अतिरिक्त संसार में दीपक न जलै ।**

तब वंभन ऐसी मँगी । दीपहु दान विचारि ॥
 कार्तिक मास समुद्ध दिन । दीप नवै संसारि ॥ कं० ॥ २० ॥
 अच्छे लोयन अक्कि तहां । अच्छे लोयन निपान ॥
 नर नारी उहिम रहै । पीक परी तिहिपान ॥ कं० ॥ २१ ॥

**राजा ने कहा कि तुमने क्या माँगा ब्राह्मणों की पिछली बुद्धि
 होती है, अन्न धन गाँव माँगना था, अस्तु अब घर जाओ ।**

कहा मँगी तुम देवता । पश्चिम बुद्धी विप्र ॥
 अन धन गाँव गंमार मगि । घर जाओ तुम विप्र ॥ कं० ॥ २२ ॥

ब्राह्मण ने घर आकर एक मन तेल और सवा सेर रुई मंगाई ।

अपने घर तब आय करि । तेन लियौ मन एक ॥

रुई सेर सवा लई । इह तन की जु विवेक ॥ कं० ॥ २३ ॥

कार्तिक आया, ब्राह्मण ने उत्साह के साथ राजा से
कहा कि जो मांगा था सो दीजिए ।

कार्तिक आयौ कलपतरु । विग्रह भयौ उकाह ॥

मंग्यो हतौ सु देउ प्रभु । पड़ह बाज बहु नाय ॥ कं० ॥ २४ ॥

राजा ने आज्ञा प्रचार कर दी कि उस दिन कोई दीपक न बाले ।

तब आयस नरपति कियौ । कोय न बालै दीप ॥

आज्ञा भंग जो को करै । ताहि बँधाऊँ चीप ॥ कं० ॥ २५ ॥

लक्ष्मी समुद्र से निकली तो उसने सारे नगर में अंधेरा पाया
केवल ब्राह्मण के घर दीपक देखकर वहीं आई और
विचार किया कि यहीं सदा रहना चाहिए ।

लच्छि समंदं निस्सरी । आई नगरहु तथ्य ॥

अंधारौ अहि पूरजे । सु दीपक दिठौ जथ्य ॥ कं० ॥ २६ ॥

बंभन कै घरि दिषि करि । आइ सही दरबार ॥

अह निसि वासै हम वसै । लच्छी कहै विचार ॥ कं० ॥ २७ ॥

लच्छी बच्छी क्या करै । दारिद्र दहि मुहि मत्त ॥

तू पाजा घर थान रहि । सदा दुचित्तै चित्त ॥ कं० ॥ २८ ॥

मो संगि सथ्य जु निरबहौ । नदी पवनि गिर दंद ॥

रात दिठु वासौ वसौ । सं कंड्यौ मति दंद ॥ कं० ॥ २९ ॥

लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर उसका दारिद्र काट कर वर दिया कि
सात जन्म में तेरे घर बसूंगी ।

तब लच्छी सु प्रसन्न हुइ । कहे रोर करंक ॥

सात जनम तुरि घर वसौ । एक वसत अकलंक ॥ कं० ॥ ३० ॥

तब दारिद्र भागा ब्राह्मण ने उसे पकड़ा कि मैं तुझे न जाने दूंगा ।

तब दारिद्र जु भजि चलयौ । बंभन पकस्यौ धाय ॥

इक कोरी तुम पुब्ब सों । लच्छिक देव न जाय ॥ कं० ॥ ३१ ॥
 दरिद्र ने वाक्य दिया कि मुझे जाने दो मैं कभी इस
 नगर में न आऊंगा ।

तब दरिद्र वाचा दी । सो कूं तूं दे जान ।
 बहुरि न आऊँ इह पुरी । औसो कहैं बषान ॥ कं० ॥ ३२ ॥

उसी घड़ी से उसके यहाँ आनन्द हो गया हाथी घोड़े भूमने
 लगे । उसी दिन से यह दीपमालिका चली ।

घरि लच्छी आनंद मन । हय गय मान महंत ॥
 दीपमालिका तदिन तैं । एह चली महि वंत ॥ कं० ॥ ३३ ॥

चारे दिशा में दीप मालिका का मान्य है । यह कथा
 कवि चन्द ने कह सुनाई ॥

पुब्ब पक्खि उत्तर दक्खिन । दीपमालिका मान ॥
 पान पान परिमान मन । काम मनोरथ थान ॥ कं० ॥ ३४ ॥

कही चंद आनंद सों । पुच्छी नृप प्रिथीराज ॥
 दीपमालिका प्रगट हुइ । घरि घरि मंगल साज ॥ कं० ॥ ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रिथीराज रासके दीपमालिका
 पर्व कथा समय नाम तेवीसमों प्रस्ताव संपूरणम् ॥



अथ धन कथा लिप्यते ।



(चौबीसवां समय ।)

खट्टू वन में शिकार खेलने और नागौर में शाह गोरी
के कैद करने की सूचना ।

दूहा ॥ षट्टू आघेटक रमै । महिम मुरस्थल^१ थांन ॥

नागौरै गोरी ग्रहण । सय त्रिमल परधान ॥ कं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का कैमास की वीरता, बुद्धिमत्ता आदि की
प्रशंसा करके प्रश्न करना ॥

कवित्त ॥ मंच जोग कयमास । मंच प्रथिराज सु पुच्छन ॥

तू मंची मंचंग । मंच जानहि सुभ लच्छन ॥

सांम दान अरु भेद । डंड निरनै करि लष्यै ॥

बहु मंचह उप्पाइ । राज मंचह करि रष्यै ॥

मंचह सुमंच मन अनुसरै । अरु मंच भेद जानै सकल ॥

अदभुत चरित्त पाषांन लिपि । बंचिन किन आवै अकल ॥ कं० ॥ २ ॥

तू मंची कयमास । मंच पय पय उप्पावहि ॥

तू मंची मंचंग । मंच मंचीन दिषावहि ॥

तू मंची सामंन । * स्वांम धम्मं विचारै ॥

धर समूह संग्रहै । मंच करि अरिन विडारै ॥

तुम जोग मंच मंची न कोइ । सह बत्तन उचार कै ॥

संसार सार मंचह प्रवल । कहौ मंच विचारि कै ॥ कं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का प्रश्न करना कि तालाब के ऊपर एक विचित्र
पुतली है जिसके सिर पर एक वाक्य खुदा है,
इसके अर्थ करने में सब भटकते हैं

तो तुम इसका अर्थ करो ।

(१) मो.—मरस्थल छ.—मुरस्थल ।

* मो प्रति में “सांमि धम्मं सुविचारै” पाठ है ।

कवित्त ॥ सलिल सुवर पाषाण । मध्य पूतली अचंभं ॥

सलिल मत्त तन जा विसाल । उष्म रिस रंभं ॥

ता उष्मर बिय नाम । प्रगट प्राकार उचारै ॥

भूलि भूलि अमि लोइ । मुझ मनसा करि डारै ॥

बंचौ सु वीर कैमास तुम । बियौ बंच नाही बनिय ॥

भूतह भविष्य अह व्रतमन । इह अपुष्य में कथ सुनिय ॥ कं० ॥ ४ ॥

पुतली के सिर का लेख "सिर कटने से धन मिले

सिर रहने से धन जाय" ।

दूहा ॥ सिर कहै धन संग्रहै । सिर सज्जै धन जाइ ॥

हो मंची कैमास तूं । मंचहि करै उपाइ ॥ कं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का मंत्री के कर्तव्यों का वर्णन करके
कैमास से परामर्श करना ।

कवित्त ॥ अवन राज हग रत्त^१ । अवन जानहि परिमानन^२ ॥

वेद दिष्ट देखै सु । भेद अभेद सु ग्यानन ॥

पसुअ नयन आचरहि । धनह परिमान सु लष्यइ^३ ॥

विपति लोइ संसार । सार द्विग इक्य दिष्यइ ॥

मंचीन दिष्ट मंचं तनी । मंच भेद अनुसर सरति ॥

नमान^४ वीर जाने सकल । छूट ग्यांन प्रौढ़ह सुमति ॥ कं० ॥ ६ ॥

कवित्त ॥ तिष्ण तरंगन पश्यौ^५ । मंच तारक हरि सुद्धरि ॥

बहरि^६ अंध कलार । राज दंडह लिय उद्धरि ॥

सारषंष जक जीव । नयन त्रिघात धात जुरि ॥

अषिष्ठ अषेटक भूखि । डुखि जब चित्त मित्त परि ॥

भुखहि सुदान जिम्मान गति । मरन मन्त्र^७ नहि लिष्यवै ॥

मंची न मंच भुखै तवै । विधि विचार विधि दिष्यवै ॥ कं० ॥ ७ ॥

(१) मो.-रत्त ।

(२) मो.-को प्रति में "अव जानन परि मानन" पाठहै

(३) मो.-लखहि ।

(४) ए.-वमान ।

(५)-मो.-पश्यौ ।

(६) मो.-क-बहरि ।

(७) मो.-मन्त्र ।

पृथ्वीराज का कहना कि सुना है कि वीर बाहन कोई राजा
था वह बड़ा प्रजा पीड़क था और धन बटोरता था
सब प्रजा ने उसे शाप दिया कि तू निर्वंश मरेगा
और राक्षस होगा सो यह उसी का धन है ।

कंद पढ़ी॥ अब कहैं मंच तुम पुच्छ लोइ । मनि ग्रहैं नैम जिन करौ सोइ ॥
पाषाण अंक में लिखे राइ । वृत्तंत सोइ सब कहु सुनाइ ॥ कं० ॥ ८ ॥
बाहन सुवीर कोइ भयो राइ । तिहि पाप क्रम लीनी उपाइ ॥
संसार सकल तिहि दुष्य दीन । सेवकन सेवनिह द्रव्य कीन ॥ कं० ॥ ९ ॥
प्रज पीड़ माल संग्रह्यौ कोरि । भरि जनम बढ भंडार जोरि ॥
संसार सकल तिन दुष्य पाइ । सब आप दीन इह अगति जाइ ॥ कं० ॥ १० ॥
विन वंस छंस इह तजै देह । इम प्रजा सकल कहि अप्यग्रेह ॥
कितनेक दिवस तिन तज्यौ और । भंडार पाहि बह सुनौ वीर ॥ कं० ॥ ११ ॥

कैमास का कहना कि इस काम में अकेले हाथ न डालिए चित्तौर
के रावल समरसिंह को बुलवा लीजिए क्योंकि जयचन्द,
शहाबुद्दीन, भीमदेव आदि शत्रु चारों ओर हैं ।
अप पास कढ़न नहिं जाइ राइ । चिचंग राव लिजै बुलाइ ॥
मिलि सुभट तास कट्यौ भंडार । तिन बिना दंद मचै अपार ॥ कं० ॥ १२ ॥
कनवज्ज राव जैचंद देव । नर असी लष्य तिन करत सेव ॥
गज्जन नरेस साहाब साह । दस लष्य मेच्छ सेवंत ताह ॥ कं० ॥ १३ ॥
गुज्जर नरिंद भीमंग देव । तिन अप्य अब्ब^१ परिकंक केव ॥
ढिल्लीस तेज तूअर नरिंद । तस बढ्यो वैर उपजै^२ सु दंद ॥ कं० ॥ १४ ॥
अप तुच्छ सेन इह मत्त मानि । मिलि समर सय्य पुछि लच्छवानि ॥ कं० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज का कैमास को इस सलाह को मानकर उसको
सिरपाव देना और उसकी बड़ाई करना ।

चौपाई ॥ राजा ढिग कैमास बुलाइय । पहराइय सुउच्च सिरपाइय ॥
बगलि अप्य आरोहन बाजन । करी सुपारस सुसर कि राजन ॥ कं० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ हरषि राज प्रथिराज कहि । मति कैमास दै नाम ॥

मति कैमास^१ कैमास तुम । सकल सुमति के धाम ॥ कं० ॥ १७ ॥

दूहा ॥ जां मंचह पूकत नृपति । साई अंग सु कांम ॥

समर सिंघ रावर मिले । धन काढ़े अभिरांम ॥ कं० ॥ १८ ॥

पृथ्वीराज का चन्द पुंडीर को बुलाकर चिट्ठी दे
समरसिंह के पास भेजना ।

मांनि मंच चहुआंन इह । बोलिय चंद पुंडीर ॥

समर सिंघ रावर दिसा । दै कगद मति धीर ॥ कं० ॥ १९ ॥

रावल की भेट को घोड़े हाथी आदि भेजना ।

दूहा ॥ दस हैबर इक बग वर । अरु दिय सिंगिनि पांनि ॥

कहि जुहार विधि जंपियौ । नृप पुच्छिय कुसलांनि ॥ कं० ॥ २० ॥

चन्द पुंडीर का रावल के पास पहुंच कर पत्र देना और गड़े
धन के निकालने में सहायता के लिये रावल से कहना,

क्योंकि पृथ्वीराज के शत्रु चारों ओर हैं ।

कवित्त ॥ लै कगद प्रथिराज । वीर पुंडीर संपन्नौ ॥

सुवर जोर साहाव । मंडि गोरी धर थन्नौ ॥

बर भोरा भीमंग । चंपि चालुक्क बिलगगा ॥

नाहर राउ नरिंद । सेन लष्पां असि दग्गा ॥

आषंड द्रव्य दिखी धरां । सुनि चहुे द्रिगपाल सजि ॥

कट्टियै मंच मंची अपुन । बर बिभूति लच्छी सुरजि ॥ कं० ॥ २१ ॥

रावल समरसिंह के योगाभ्यास और जल कमल की तरह
राज्य करने की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ समरसिंघ रावर नरिंद । समर सह संभर जित्तन ॥

अरु जोगिंद नरिंद । चित्त जोगिंद समत्तन ॥

कमल माल सो भत्ति । चंद लिह्लाट वीय दुति ॥

नयन रंभ आरंभ । जोग पारंभ सिंभ मति ॥

मुंजीव ढाल जीपन विरद । नाग मुषी सिस्मार बनि ॥

सा चिच कोट ओटह नृपति । मदन रंभ मंडहि सुमनि ॥ कं० ॥ २२ ॥

पत्र पढ़कर समरसिंह ने हंसकर चन्द पुंडीर से कहा कि संसार
की यही गति है कि मांस के एक लोथड़े को एक गिहु
लाता है और दूसरा खाता है, कोई कमाता है
कोई भोगता है यह देव गति है ।

द्रुहा ॥ बंछि बीर कगद नृपति । हसिय चित्त बर बंक ॥

ककु लज्जा सगपन सु हित । रष्य पुंडीरां संक ॥ कं० ॥ २३ ॥

कवित्त ॥ हसि जोगिंद नरिंद । वत्त सें मुष उचारिय ॥

*एक ग्रध्र संभूह । मंस लड्यौ पल हारिय ॥

अब्व ग्रिद्ध विंटयौ । मंस चप्पौ जै कारिय ॥

तब सुमंत उप्पनौ । मंस लड्यौ गहि डारिय ॥

भुगवैति कोइ गड्डैति कोइ । कोइक पढ़ कोइ लभ्यवै ॥

दैवान दुसंकह दैवगति । जो निम्मान सु निम्मवै ॥ कं० ॥ २४ ॥

चन्द पुंडीर ने कहा कि आपने ठीक कहा पर पृथ्वीराज
आपका बड़ा भरोसा रखते हैं सो चलिए ।

कवित्त ॥ सुनि रुवत्त पुंडीर । वत्त जंपी सुतत्त जोइ ॥

तुम जोगिंद नरिंद । मत्त जंपौ सुतत्त होइ ॥

सुअ सोमैस नरिंद । सुवत सगपन मिस पुच्छिय ॥

तुन चहुआना^१ गहअ । मुष्य कट्टौ किम ओक्खिय ॥

सामंत नाथ सामंत बल । मेर ठेलि दच्छिन धरहि ॥

प्रथिराज आज राजिंद गुर । इंद फुनिंद न सो डरहि ॥ कं० ॥ २५ ॥

शहाबुद्दीन आदि पृथ्वीराज के प्रचंड शत्रुओं का सामना है
इस लिये सहायता में आपको चलना चाहिए ।

* यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है ।

(१) मो. को.-लहुआना ।

कवित्त ॥ अगगौह रावर समर । करन साहस चहुवानिय ॥
 हलहल अगग प्रचंड । संभ सोभै गर बानिय ॥
 *अगगौं अगग जुगिंद । अगगि लगगै विरुभानिय ॥
 अगग सिंध निडुर नरिंद । उठु चंपै परवानिय ॥
 अगगे व काल सुनियै दुसहु । सह पिच्छै फिरि ठडुयै^१ ॥
 चिचंग राव रावर समर । संभरि वै दिसि चहुयै ॥ ६० ॥ २६ ॥

रावल समरसिंह का सेना आदि सजकर चलना
 सेना की तैयारी का वर्णन ।

रिंगयो सबर^२ नरिंद । सज्जि है गै चतुरंगिय ॥
 हय गय दल चतुरंग । जंपि माहा भर जंगिय ॥
 महा सुभर गज्जंत । ध्रुंदि पुरधर आहुदिय ॥
 सेस सहस फन फहि । सकलि^३ सल मलि साहुदिय ॥
 फय्यौ सु सेस फन चंद कहि । तब फूंकर करि जगयै ॥
 फन किन्न उड्ड कुंडल करिय । तब सु सेस बल भगयै ॥ ६० ॥ २७ ॥
 छंद भुजंगी ॥ बरं बिंटियं समर साहस नरिंद । मनों बिंटियं उडगनं अभ्र चंदं ॥
 किधो इंद्र पासं सब देव राजै । किधौ मेरतीरं सु पब्बै विराजै ॥ ६० ॥ २८ ॥
 उय्यौ कच सीसं विराजै कला की । मनों इंद्र इंदी बरं चंद^४ जाकी ॥
 दुतीता उपमा कवी का वषानं । मनों हेम के दंड पर चंद जानं ॥ ६० ॥ २९ ॥
 ककू स्याम पाटं विराजै करारी । मनो कटई सोम कालंक कारी ॥
 मयंमइ गज्जं सबहं सु उठै । वरष्यंत दानं मनो मेघ बुठै ॥ ६० ॥ ३० ॥
 बजै ता जंजीरं अनेकं सबहं । मनों बुल्लियं भिंगुरं मास भहं ॥
 धजं धज्ज हलै विराजै फिरंती । मनों मंडियं बग घन मभिक्त पंती ॥ ६० ॥ ३१ ॥
 गजं उप्परं ढाल सोहै ठलकै^५ । मनों केलि उगगी गिरं कज्जलकै^६ ॥

* यह पंक्ति मो.—प्रति में नहीं है ।

(१) मो.—उठ्यो ।

(२) मो.—समर ।

(३) मो.—सफल ।

(४) मो.—बन्द ।

(५) मो.—ठलकं ।

(६) मो.—कज्जलकं ।

सितं अद्भुतं चत्वारिंशौ नरिंदं । तिनं उष्यमा दिष्मि जंपी सु चंदं ॥ ३२ ॥

सवै सेन चतुरंग सज्जी अनेकं । मनें पारसं भांन ग्रह एक एकं ॥ ३३ ॥

**परामर्श करके रावल समरसिंह पृथ्वीराज के
पास नागौर को चले ।**

दूहा ॥ करि मतो चहु नृपति । समर राव चहूवानं ॥

नागौरच आए धरा । मडि कडि मेलानं ॥ ३४ ॥ *

**धर्मायन कायस्थ ने यह समाचार चुपचाप दूत भेजकर शहा-
बुद्दीन को दिया कि दिल्लीश और चित्तौरपति धन
निकालने नागौर आए हैं ।**

अंमाधन कायथ लभे । परठि दूत पतसाह ॥

दिखि बै चित्तौर पति । धन कहै धरमाहि ॥ ३५ ॥ *

**समरसिंह का दिल्ली के पास पहुंचना और दूत का
पृथ्वीराज को समाचार देना ।**

कवित्त ॥ जाइ सपत्तौ समर । चंपि दिखी धरवानं ॥

चहुआना रै चथ्य । दूत दीनौ फुरमानं ॥

असम विषम साहसी । रत्त माया अनुरत्तं ॥

कमल पत्त जल जत्त । मध्य अरु न्यारौ जत्तं ॥

छिप्यै न कलक काटन कलक । राज बंध बंध्यौ नर्चीं ॥

दस कोस कोस दिखीय तैं । राज मुक्कि राजन तर्चीं ॥ ३६ ॥

पृथ्वीराज का आध कोस आगे से बढ़कर अगवानी करना ।

कवित्त ॥ राजं दै दरबार । सुबर आनंद उपनौ ॥

पुञ्ज पाप कहनच । समर जित समर संपनौ ॥

सुबर बीर जोगिंद । चंद विरदावलि दिनौ ॥

दिखी तैं अधकोस । राज अगो होइ लिनौ ॥

* छंद ३४-३५ मो.—प्रति में नहीं है और को. प्रति में ये ४० छंद के बाद मिलते हैं ।

मंडरी मंडि देखै सु कवि । मति डंमरि लभै न दुइ ॥

समरह सु ग्रह अरु समर अलि । समर सुबय अरु समर जुइ^१ ॥ कं० ॥ ३७ ॥

**समरसिंह का अनङ्गपाल के घर में डेरा देना, दो दिन रहकर
सब सामतों को इकट्ठा करके सलाह पूछना कि अब धन
निकालने का क्या उपाय करना चाहिए ।**

कवित्त ॥ अनङ्गपाल ग्रह जा विसाल । समर उत्तरिय प्रिया पति ॥

विधि अनेक भोजन सु व्रत । राज उत्तर सु सार भति ॥

उभय दिवस वित्तीय । सब्ब सामंत सु पुच्छिय ॥

सांम दांन अरु भेद । कंक भजि कट्ठौ लच्छिय ॥

कं कइन बंक तुम अनुसरहु । समरसिंघ रावर सुमन ॥

उप्पाइ मिटि सोमंत करि । सु बर बीर कट्ठौ सुधन ॥ कं० ॥ ३८ ॥

**कैमास ने कहा कि मेरी सम्मति है कि शहाबुद्दीन के आने के
रास्ते पर दिल्लीपति रोकें, और भीमदेव चालुक्य का
मुहाना रावल समरसिंह रोकें और तब धन
निकाल लिया जाय ।**

कवित्त ॥ मति सुचारु कयमास । द्रव्य कट्ठन उच्चारिय ॥

सेन मुष्य सुरतांन । राज दिजै प्रथुभारिय ॥

चालुकां चंपै न सीम । रावल मुष दिजै ॥

अप्य अप्य मुष रष्यि । कट्ठि लच्छी बर लिजै ॥

आलाभ जुच्छ^२ पय लाभ तुक् । सु ककु कांम किजै नही ॥

गोइंदराज षीची सुमति । मिलि विभूति कट्ठ गही ॥ कं० ॥ ३९ ॥

**रावल समरसिंह का इस मत को पसंद करना और
मंत्री की प्रशंसा करना ।**

कवित्त ॥ तव चिचंग नरिंद । चंदपुंडीर बरज्जिय ॥

तुम कुमंत बल मंत । मंत जानौ न सरज्जिय ॥

(१) मो.-जुअ ।

(२) मो.-यथ्य ।

ते मंची मंचंग । निगम आगम सब बुझै ॥

अंगन कै कुहंत । घरह सुभझै मन बुझै ॥

अरि अरिन मुष्य रुक्कहि सुभर । तब सु द्रव्य मिलि कट्टियै ॥

सुरतान भीर भंजै समर । सुमन मंत करि चट्टियै ॥ कं० ॥ ४० ॥

**नागौर के पास सब का पहुँचना, सुलतान के रुख पर पृथ्वी-
राज का अड़ना, शाह के चरों का पता लेना ।**

कवित्त ॥ जाइ संपतौ समर । मध्य नागौर प्रमानह ॥

सुरताना रै मुष्य । कोट अड्डो चहुआनह ॥

धन असंघ कट तहां । साह चर वर पगधाइय ॥

चरचि चित्त सब सरित । वित्त करि हथ्य दिपाइय ॥

साहाव सुकर फुरमान दिय । गांभी कल बल लगगया ॥

कट्टी सुलच्छि आहुह पति । मुष चहुआन विलगया ॥ कं० ॥ ४१ ॥

देा देा कोस पर पृथ्वीराज और समरसिंह का डेरा देना ।

कवित्त ॥ उभय दूत नागौर । दूत चहुआन पास दुअ ॥

सब चरित्त धरि वित्त । लषन लथौ सुसेन सुअ ॥

द्वै कोसां चहुआन । कोस चिचंगराज दुअ ॥

अवन गवन जानहु सुवत्त । अनुसरहु पंथ जुअ ॥

मन मध्य कथ्य जानहु सकल । चलहु कगर राज लै ॥

धन भ्रम अर्थ कट्टइ चरित । कहौ वत्त दिष्यै सु लै ॥ कं० ॥ ४२ ॥

**दूत का शाह को समाचार देना कि नागौर में धन निकालने
के लिये दिल्लीपति आगए ।**

दूहा ॥ कलि चरित्त नागौर पहु । दूत सपत्ते आइ ॥

दिल्ली वै कट्टै सुधन । बज्जा बज्जन वाइ ॥ कं० ॥ ४३ ॥

**नागौर के समाचार पाकर सुलतान का उमरा खां के साथ
डङ्गा निशान के सहित पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना ।**

कवित्त ॥ वज्जा वज्जन वाइ । देषि दैवान दुसंकह ॥
 चिचकोट रावर नरिंद । कहन भुज अंकह ॥
 संभरि बै आहुठ । लच्छि वहुन बत्तीसह ॥
 गज्जन बै सुरतांन । दूत लै आइ चरीतह ॥
 सुनि सच्छ नच्छ नीसान किय । बोलि उमरा पांन सह ॥
 सज्जौ सुसज्ज संभरि दिसा । चाहुआन किजै बसह ॥ कं० ॥ ४४ ॥

**शाह का चक्रव्यूह रचना करके चलना, सेना की
 सजावट का वर्णन ।**

कवित्त । साह बढो^१ सुरतांन । चक्का व्यूहं रचि चलिय ॥
 एक एक असवार । विच पाइक तिह मिस्त्रिय ॥
 ता पच्छै गज पंति । पंति असवार समूहं ॥
 जमर जंग औराक । गौर जंबूरति जूहं ॥
 ता पच्छै पंति पुरसांन पां । ता पच्छै बंधी अनिय ॥
 तत्तार पांन निसुरत्ति पां । हांसिमरू घोषर पनि ॥ कं० ॥ ४५ ॥

**पृथ्वीराज को बाईं ओर से बचाता सुलतान धूमधाम से चला,
 शेषनाग को कँपाता पृथ्वी को धसाता रात दिन चलकर
 नागौर से आध कोस पर जा पहुँचा ।**

कवित्त ॥ वाम कोह प्रथिराज । भुक्कि सुरतान सुचल्य ॥
 सज्जि सेन चतुरंग । समर दिसि समर सुहल्य ॥
 भूमि धसिय धस मसिय । सेस कसमस्सि उकस्सिय ॥
 कमठ विमठ हुअ पिठ । दठु कूरंभ करस्सिय ॥
 रिंगयौ सबल पुरसान दल । करि मुकाम सक्यौ न कोइ ॥
 नुर अइ कोस नागौर तें । सज्जि बाज चंपौ सु जोइ ॥ कं० ॥ ४६ ॥
**यह समाचार सुन समरसिंह का धन पर मंत्री कैमास को रख-
 कर आप सुलतान पर क्रोध के साथ चढ़ाई करना ।**

कवित्त ॥ समर सिंघ सुनि अवन । बीर नीसान दिषंदे ॥
 सजि सेन चतुरंग । तरकि^१ तोषार चढंदे ॥
 थिर थप्पौ कैमास । लच्छि उपर गहि रषिय ॥
 तरकि तोन सजि द्रोण । बलिय पारथ सम दिषिय ॥
 भारथ्य कथ्य कवि चंद कहि । समर सार वर चस्रवै ॥
 उक्कारि सेन सुरतान कौ । हय अठ्ठनि करि हस्रवै ॥ कं० ॥ ४७ ॥
 जैसे समुद्र में कमल फूले हैं इस प्रकार से सुलतान
 की सेना ने डेरा दिया ।

* दूहा ॥ साहस कर पत्तिय समुद । कमुद प्रफुल्लिय रंग ॥
 उतरि सेन सुरतान तँह । सह आई समरंग ॥ कं० ॥ ४८ ॥
 सवेरे उठते ही समरसिंह आगे सुलतान के दल की ओर बढ़ा,
 उसकी सेना के चलने से धूल उड़ने लगी ।
 प्रात उदित रवि रत्त रंग । समर समर दिसि जगि ॥
 तब लगि दल सुलतान के । षेह सु उड्डुन लगि ॥ कं० ॥ ४९ ॥
 धूल उड़ने से सब दिशा धूंधरी हो गई, दोनों दलों का हथि-
 यार सज सज कर लड़ने के लिये तैयार हो जाना ।

कवित्त ॥ पच सुषेह डंमरिय । दिसा धूंधरी सुराजै ॥
 अगग मगग उक्करै । चित्त उक्करै पराजै ॥
 पवन बेग संजुरै । अवन लगगा असि मंचं ॥
 रथ कुवेर चढ्ये । बांन बढ्ये सुमंतं ॥
 दोउ दीन कर दुंद दल । लरन लोह सज्जे सु वर ॥
 चप्पौ नरिंद आहुठ पति । अगनि सार उड्डिय दुजर ॥ कं० ॥ ५० ॥
 लड़ाई का आरम्भ होना ।

कवित्त ॥ धन नरिंद सुरतान । पांन दोइ बीच समाहिय ॥
 दोइ मुष्प अरि रुक्कि । सिंघ वन की गति साहिय ॥

(१) रं. को. कं.—तरिक ।

* यह दूहा (छन्द) मो. प्रति में नहीं है ।

धार धार वज्रै प्रहार । नह लगो^१ नीसानं ॥
 संभरि वै सुरतान । मीर उठे भुक्ति पानं ॥
 घरि चारि लगि तरवार भर । बहु उभार लगिगय फरन^२ ॥
 दोउ दीन भीन घट घुमि घन । उक्करि सेन लगो लरन ॥ कं० ॥ ५१ ॥

युद्ध का वर्णन ।

इंद्र पद्वरी ॥ बलवंत सबल पाहार पुंज । कर धरै षग धायौ सु नंज ॥
 लै पच चली कालिका नारि । पर वत्त गहै गय दंत भार ॥ कं० ॥ ५२ ॥
 सिर तीर बुंद बरषंत वारि । सिर नषै वृंद अषित अपार ॥
 षग सेां षग वज्रै करार । घन टहै घाइ जनु मत्त वार ॥ कं० ॥ ५३ ॥
 मस्तंद मीर महुवत्त पान । ढाहनह धीर धायौ परान ॥
 पाहार कुंत क्रिय पुंज राज । समसेल चलै हनि षग गाज ॥ कं० ॥ ५४ ॥
 तुथ्यौ सु भीस संमेत पानि । ढाहे कमंध महुवत्ति पान ॥
 लघु बंधु हस्तमा हनिय सूर । बर माल बरै ले चलीं हूर ॥ कं० ॥ ५५ ॥
 जै जैत सबद जंपै जगत्त । पाहार करी अविगत्त वत्त ॥
 पाहार पुंज हस्तम पान । मुह जुरे मरद हूये उतान ॥ कं० ॥ ५६ ॥
 है हयौ षग हस्तम मरद । बाहयौं षग पुंजा दरद ॥
 तुहयौ सीस सा पुंज राज । अच्छरी वरै करि उड्ड काज ॥ कं० ॥ ५७ ॥
 नारद नह ग्रह इंद्र मद । पलचरी कालिका करै नद ॥
 प्राक्रम सूर देखै पहार । धनि धनि कहै भर सकल सार ॥ ५८ ॥
 ब्रह्म पूरि भेदि गय सूर सार । अति उंच क्रम पामेव वार ॥ कं० ॥ ५९ ॥
 कवित्त ॥ बलिय फौज पाहार । दुतिय भारथ जिन मंड्यौ ॥
 अरि अक्करि बर लीन । धार धारहु तन पंड्यौ ॥
 ईश सीस संग्रह्यौ । इक्क ते हथ्य न मुक्यौ ॥
 सुर सुरीय कँह जानि । सरस सिंगारहु चुक्यौ ॥
 जानयौ गवरि कह मानि किय । कहा जानि नंदी हथ्यौ ॥
 जानयै चंद इय कब्ब करि । चंद लिलाटहते धस्यौ ॥ कं० ॥ ६० ॥

(१) ए० झ० को०-भग्नौ ।

(२) मो० प्रति में “बल उभारिय षग भरन” पाठ है ।

कवित्त ॥ मुक्ति लहत सोमंत । सिद्ध मन डोलन लग्गा ॥
 चुकि समाधि जगि सिंभ । बंभ आराधन भग्गा ॥
 * आपुतुचा तजि सूर । तुचा मृगन आराधी ॥
 तन तुटिग अधि^१ धार । मग नहि अक्करिवाधी ॥
 अचरिज्ज एक आतम गमन । देह मटी मुक्की निमुष^२ ॥
 पंघेरि पाल मुक्किय जगत । सुकर किति चलिय सुरुष ॥ कं० ॥ ६१ ॥
 दूहा ॥ पां ततार रुस्तम सुभर । अरु जे मीर समंद ॥
 सोइ तत्ते गहि तेग परि । वर वीरा रस मंद ॥ कं० ॥ ६२ ॥
 दूहा ॥ चंद बंध पुंडीर वर । लष्यन लष्या सार ॥
 मिले मीर भरदान मुष । धरि कर षग करार ॥ कं० ॥ ६३ ॥
 कवित्त ॥ पां ततार रुस्तम हुजाव । मुस्तफा महंमद ॥
 † है सज्जे वर सार । तथ्य आए मीरंवद ॥
 मार मार कहि धीर । मिले लष्यन लष्येसर ॥
 सार धार वडजंत । भिच्यो मुष हम्मीर गुर ॥
 पुण्डीर सुवर साइस वरह । करिव पुह षहे सुषल ॥
 कौतिग देव देखंत सिर । अरिय भूत नंचे अकल ॥ कं० ॥ ६४ ॥
 कंद चनूफाल ॥ आए सुमीर मसंद । वर षग धारिव इंद ॥
 हक्कंत हक्क करार । वज्जंत कर करतार ॥ कं० ॥ ६५ ॥
 चिघ्घाय षग चिकूट । बहि सार सामत जूट ॥
 पुंडीर लष्यन लोइ । भर मीर आए दोइ ॥ कं० ॥ ६६ ॥
 बाहैं दुसार करार । लरि लष्य लष्यन सार ॥
 भंडे सु षग उभट्टि । तुहे सु भल्लर तटि ॥
 उकि उकि ईस रनह^३ । नारह नंचि उमह ॥
 भमि मीर पुर पुर तार । जुरवंत मीर जुभार ॥ कं० ॥ ६८ ॥

* “षिति संपुट पलभल्यो । तुचा मृगन आराधी” मो.—प्रति में ऐसा पाठ है ।

(१) मो.—असि ।

(२) मो.—निमुष ।

† मो.—प्रति में कृन्द ६४ की प्रथम दो पंक्तियों का पाठ “खां ततार रुस्तम उजाव, खान मुस्तफा महंभर, है सज्जे वर सार, तथ्य आए सर सरवर” है ।

(३) मो.—सुनह । ए.—नरह ।

भज्जंत सेन सहाव । गज्जंत लष्यन गाव ॥
 तत्तार नूरि हुजाव । रुस्तम महुमुद आव ॥ कं० ॥ ६८ ॥
 बाहै सुलष्यन सार । चिसि टोप क्किपर लार ॥
 चौहनी लष्यन धार । परसंसि भीर भुभ्भार ॥ कं० ॥ ७० ॥
 गय सूर मंडल भेदि । भल कहन अछर बेदि ॥ कं० ॥ ७१ ॥
 कवित्त ॥ चंद वंध पुंडीर । नाम लष्यन लष्ये सुर ॥
 दुंद देवि पचार । दियौ हुंकार चक्कि गुर ॥
 ईस सीस आनंद । पिंड गिद्धिन मन भाइय ॥
 दूर सूर अछरि बिमान । चढ़ि देवन आइय ॥
 आतम सोई उतपति चल्थौ । देव धान विश्राम भय ॥
 जम लोअ लोपि बसि ब्रह्म पुर । जंपि सेन दोउ सह जय ॥ कं० ॥ ७२ ॥
 कंद दुमिला ॥ कहु गुर लहु पायं अकिर दायं विचि विचि रायं इंदोई ॥
 दुमिलानय कंदं पढ़य फुनिंदं कहि कवचिंदं गुनगोई ॥
 बज्जै रन तालं असि बर भालं भर भर हालं भंभीरं ॥
 पारस सुविधानं कुटिय थानं चढ़ि मथ्यानं कुटि तीरं ॥ कं० ॥ ७३ ॥
 गंजी जननं जरि भंगै द्विकरि लरि रज उछरि गगनेदं ॥
 धर धीर धरंतं जोग जुगंतं लरि लरि जोरं जरि मेकं ॥
 किरवानं करकै विज्ज तरकै क्किच्छ उक्ककै इन भेसं ॥
 दो उप्पम भासं माधव मासं अति उल्हासं दुति केसं ॥ कं० ॥ ७४ ॥
 उडि सकै न गिद्धं सरबहि विडं हसयति सिद्धं दै तारी ॥
 घप्पर अधिकारी षंड उकारी जै जै कारी किलकारी ॥
 गज दंत न बढै दै पग चढै कुंत सु कढै सिर चढै ॥
 कंदल परि उठै सीस विकुठै चनहि न रढै भर बढै ॥ कं० ॥ ७५ ॥
 दूहा ॥ सस्त्रन सस्त्र न उब्बरिय । मन बर कुटिय नाहि ॥
 ज्यो मथा प्रिय तुच्छ निसि । सेरो सहर समाहि ॥ ७६ ॥
 रावल समरसिंह के युद्ध का वर्णन ।
 कंद रसावला ॥ रोस राजं भरी । विचकोटे सुरी ॥

हथ्य बथ्यं जुरी । जुहि सोहै घुरी ॥ कं० ॥ ७७ ॥

नीच दौनं परी । बीर हक्कै उरी ॥

कुंत कट्टै कुरी । हथ्य बथ्यं करी ॥ कं० ॥ ७८ ॥

दंद कट्टै सरी । कंध सोभै धरी ॥

लुथि आलुथ्यरी २ । जंमता विक्कुरी ॥ कं० ॥ ७९ ॥

देवता संभरी । टिख्ख राजं भरी ॥

जोग मत्ते जुरी । रंभ टूटै वरी ॥ कं० ॥ ८० ॥

वीर जा संभरी । कुहि कुक्कै करी ॥

मात पित्तं उरी । पत्त कन्है नरी ॥ कं० ॥ ८१ ॥

स्वामिता सुइरी । पुप्फ नंघे सुरी ॥

... .. । कित्ति जुगं करी ॥ कं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ कित्ति जोग करनह समथ । मिले सक्क सासेन ॥

आए मीर सुकूह करि । परिय सिंघ सिर जेन ॥ कं० ॥ ८३ ॥

अरिख्ख ॥ कोप्यो रावल राज मद्दाभर । सेना साह सदावह लिय पर ॥

हिंदुअ सेन हक्कि भर उठे । पंच षानं सिर सारह बुठे ॥ कं० ॥ ८४ ॥

कंद भुजंगो ॥ उठे पंच षानं बरं आसुरानं । बजे भेरि नफेरि चंवे ३ निसानं ॥

धमक्कै धरा नाग गज्जै सुगेनं । चढे देव कौतिग देषंत नैनं ॥ कं० ॥ ८५ ॥

मिली अक्कुरी रथ्य अप्पार रंजै । नचै नारदं ईसुरं अप्प कज्ज ॥

करै कूह दौरै भरं आसुरानं । जुटे सूर सामंत लग्गे भरानं ॥ कं० ॥ ८६ ॥

षगं दूअ बाहै भरै टोप मथ्यै । मनो भत्तरं देवलं कूटि हथ्यै ॥

जुरै षानं सामंत दोसार सारं । कहै दीन रामं जपै इष्ट सारं ४ ॥ कं० ॥ ८७ ॥

षडे आइयं अष्य आकूव मीरं । कुटै भ्रंम धीरज्ज कंपै अधीरं ॥

तवै आइ चामंड दाहिंम रायं । हयौ सेल मीरं गहक्कै गुरायं ॥ कं० ॥ ८८ ॥

समं सेल षानं वहै षगभट्टं । पस्यौ अश्व चामंड भगौ सुघटं ॥

उठे चांड रायं गहै षानं सारं । तुटै मंडलं तुहिहै भाग पारं ॥ कं० ॥ ८९ ॥

(१) मो.—खरी ।

(२) मो.—लोथि लोथं परी ।

(३) ए.—को.—अवे ।

(४) मो.—चारं ।

ठह्यौ पांन ह्य्यो सु चामंड रायं । इतै देषि मीरं निकहं सु तायं ॥
 वहै षग ठाहै चह्यौ अप्प सायं । हली पौज साहं चंपे असुरायं ॥ कं० ॥ ८० ॥
 तवै केलियं पान पानां कुलाहं । दुअं धारि षगं तुहै हिंदु थाहं ॥
 तवै आइ अड्डो भरं अत्तताई । लिष सिप्परं घाव तिच्छे सुताई ॥ कं० ॥ ८१ ॥
 वहै दूअ षगं करै मार भहं । मनों रंभयंभं दुअं सीस कहं ॥
 गुरं गज्जते अत्तताई अभंगं । भरक्कै सुसेना सबै मीर भगं ॥ कं० ॥ ८२ ॥
 इकं सेर नंमीर साहब्व पानं । दुअं बंध पुत्तं सु आरब्व जानं ॥
 दुअं धंभ धारी उरं जागियानं । उमै दैरि बंधं लगे आसमानं ॥ कं० ॥ ८३ ॥
 चपे मीर मुष्पं चवै मार वानं । लगे दाव घावं करै षग पानं ॥
 इयं जुद्ध आनुद्ध देख्यौ अपारं । भरं निडुरं देषि धायौ सुभारं ॥ कं० ॥ ८४ ॥
 हए निडुरं संगि हय बंध मीरं । मनों सीर^१ इक्कं वरे दो सरीरं ॥
 हने तेग तुरियं सुकमधज्जरामं । ठह्यौ अंस ओहंस उड्यौ तिसायं ॥ कं० ॥ ८५ ॥
 उठे निडुरं हक्कि रठौर^२ रानं । सिता^३ बीस चौंडं सुषं मानि भानं ॥
 इते आइ दीनो तुरंगं अपानं । चाह्यौ राव हयमीर कमधज्ज मानं ॥ कं० ॥ ८६ ॥
 धये आइ तत्ते करै अप्प पानं । भगे सेन मीरं ठहै पंच पांनं ॥
 बढी जैत देषी वरं हिंदुआनं । ॥ ८७ ॥
 रिक्के नार कंअक्करी गिद्ध सिद्धं । मनं बांकि प्रेमं जयं जस्स लिद्धं ॥
 जयं जंपियं जोगिनी जे गमत्ते । करी कित्ति चंदं गयं गेतं पत्ते ॥ कं० ॥ ८८ ॥

पृथ्वीराज की विजय, शहाबुद्दीन की सेना का भागना ।

कवित्त ॥ घरिय अद्ध दिन रह्यौ । साह साहब बल भगिय ॥

गात पंभ निरघात । ह्य्य सामंतन लगिय ॥

पख्यौ पांन आकूव । जेन सेना ठंढारिय ॥

केलीषां कुंजर कुलाह । तुहि तिन संग^४ विक्कोरिय ॥

चहुआंन सेन चव दंत चढ़ि । तनु तिन रव रनंपयौ ॥

सुरतांन भीन्न पंचौ परत । जलधि मध्य पत्तगंयौ ॥ कं० ॥ ८९ ॥

(१) मो.—शीश ।

(२) मो.—रतारे ।

(३) मो.—हके ।

(४) मो.—तंग ।

सूर्यास्त होना ।

गाथा ॥ अथ वत दीह सुधीरं । साहिब सेरंन हंति निडुरयं ॥
करि प्राक्रम अपारं । जलनिधि मडि गत पतंगं ॥ कं० ॥ १०० ॥

रात होना । सेना का डेरे में आना ।

कवित्त ॥ जल निधि मध्य पतंग । पत्त^१ दिष्य तम आसिय ॥
कायर पंकज मुदिग । कुमुद उघघरि अलि वासिय ॥
तर को चितव विहंग । वाम विरहनि दुष बढिय ॥
संजोगिनि शृंगार । चित्त कामह रथ चढिय ॥
चक्रवाक चित चक्रित हुआ । चोर विटप मन उल्लसिय ॥
औसरे सेन विय उत्तरिय । स्वांमि भ्रम मन में बसिय ॥ कं० ॥ १०१ ॥

गाथा ॥ निसचर वरचित चित्तं । चितं जाग्रत उभय सयनेयं ॥
जामं सर सरि चितं । वामीयं काम सपनायं ॥ कं० ॥ १०२ ॥
अरिस्त ॥ पतत पतंग सुदिष्य अंबं । मानहु सीय सुद्ध प्रति व्यंबं ॥
नष मयूष कोदह उष्यारै । मानो तिमिर जोग जंभारै ॥ कं० ॥ १०३ ॥

चामंडराय आदि सरदारों का रात भर जागकर चौकसी करना ।

कवित्त ॥ जबहि राज प्रथिराज । सेन उत्तरिय रयन गत ॥
तर्वाहि सुराजन कज्ज । रहे सामंत सु जगगत ॥
राचां मंड निडुरकमंध । अत ताइय ईस वर ॥
सु गुरु जैत पामार । अरिय भंजन अलष्य भर ॥
अवरें सु सन्व सामंत भर । चढ़े राज चौकी समथ ॥
गुर लज्ज अवर भर सज्जि रहि । है पष्यर चवरार हथ ॥ कं० ॥ १०४ ॥
अरिस्त ॥ डेरा करि बर राज महाभर । तुक् अंतर मिलि रहै सिंघ गुर ॥
चौकी सेन चढ़े भर सिंघं । एक एक सक सूर अभंगं ॥ कं० ॥ १०५ ॥
दूहा ॥ राम रैन पावार भर । अरु सु कन्ह भत्तीज ॥
फुनि रघुवंसी राज घर । सब चौकी सजि नीज ॥ कं० ॥ १०६ ॥

अरिस्तु ॥ सजि चौकी अप सध्य सकल मिलि । चढ़त सूर भर नप बरज्जि^१ बलि ॥
 गुरु सामंत अयति अप्य गढ़ि । रचै सुचारि दुअं चौकी चढ़ि ॥ कं० ॥ १०७ ॥
 इक चौकी वर सिंघ राज सज । भर दुअ चढ़े अप्य अप्यन कज ॥
 थांन थांन जकि रचे सूर वर । सज्जि सनाह रचे जु हंस नर ॥ कं० ॥ १०८ ॥

शहाबुद्दीन के सरदारों का रात को चौकी देना ।

कंद भुजंगी ॥ चढ़ी साह चौकी सुरत्तान पांन । दोई दीन बज्जै निसानं रिसानं ॥
 चमकै सनाह उपमा सु चंडी । मनो चंदनी रैन प्रति व्यंब मंडी ॥ कं० ॥ १०९ ॥
 फिरै पंति दंती नकी कंति एमं । मनो कज्जलं कूट कंगूर हेमं ॥
 फिरै पघरी पंति कूदंत बाजी । तिन देखते बंदरं द्रोण लाजी ॥ कं० ॥ ११० ॥
 लगे पारसी बोलनं मेक सध्यं । मनो प्रब्वतं बंदरं केलि कथ्यं ॥
 इक एक चित्ते दुअं चित्त नाही । तिन पंचियै^२ सार साध्रंम सांही ॥ कं० ॥ १११ ॥
 पिहै मुष्य बोलै सुरत्तान दोही । करै भूमि दुज्जन पुरं काल कोही ॥
 इसी सेन जोरी सु गोरी नरिंदं । मनो बंटियं पारसं नभ चंदं ॥ कं० ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज की सेना की शोभा का वर्णन ।

अरिस्तु ॥ सिलह सज्जि प्रथिराज महाभर सेन सह ।
 मनो प्रप्यन प्रति व्यंब प्रगहिय जानि ग्रह ॥
 यापर आपम और विचार लो अप्पियै ।
 ज्यो बहर में चंद दुरै ककु दिप्पियै ॥ कं० ॥ ११३ ॥
 घुरि निसानं घन सह स्रवंन न संभरै ।
 हय गय साजिय साज हकते उभरै^३ ॥
 भेरि भनंकिय भंकिन फेरिय नहयं ।
 * एक तबे उत दिप्पि दल बल बहयं ॥ कं० ॥ ११४ ॥

शहाबुद्दीन के सेना का वर्णन ।

कवित्त ॥ पां रुसम तत्तार । पांन चौकी बे लगगा ॥
 पां नूरी हुजाब पां । महमद असि जगगा ॥

(१) मो.-बरज्जि ।

(२) मो.-पंचियं ।

(३) मो.-प्रति में 'है गै बाजिय गाज फूकते उभरै' पाठ है ।

* मो.-प्रति में ए 'इन वे उन दिप्पि' पाठ है ।

केली षां भष्परी । रोम घोषर षां पन्नी ॥
 बर भट्टी मद्ध नंग । स्वामि मंझौ सा अन्नी ॥
 बीरंग बीर वज्जर विरज । बर चरित्त चिहुं दिसि लगे ॥
 सुरतान कांम अरि भंजनौ । सुवर बीर बीरच पगे ॥ कं० ॥ ११५ ॥

सुलतान के सरदारों के क्रम से सजकर खड़े होने का वर्णन ।

कवित्त ॥ अगिगवान उजवक्क । धाइ धावड सुरतानी ॥
 ता पाकै साद्दाब । षान बंध्यौ तुल सानी ॥
 ता पाकै नूरी । छूजाब सेई संचारी ॥
 केलीषां कुंजर कुलाह । किन्नी कुट वारी ॥
 बांनिक विराह दुल्लाह बर । भाई षा भट्टी सु सिर ॥
 प्रिथिराज राज आहुहु ते । बर निसान बज्जै दुसर ॥ कं० ॥ ११६ ॥

घड़ी दिन चढ़े सुलतान का सामना करने के लिये पृथ्वीराज का

आगे बढ़ना, दोनों सेना का साम्हना होना ।

कवित्त ॥ सुलतानां रै मुष्य । समर उत्तछौ नरिंदं ॥
 मनो विद्धि विद्वान । मांड अजाद समुदं ॥
 दोऊ सेन उत्तरिय । भंम अण्य अण्यन उचारिय ॥
 अरि सख्ख करि प्रांन । जुद्ध बर मंडि उकारिय ॥
 पहु फहि निसा पछ फहि कर । घरिय बज्जि घरियार घन ॥
 प्राची सुमंत दिसि वर भिलिय^१ । अमर कित्ति चिंते सुमन ॥ कं० ॥ ११७ ॥

प्रातःकाल के समय दोनों सेनाओं की शोभा का वर्णन ।

कंद गीतामालची ॥ नव नवय प्रातय विरह प्रावय^२ संष दिव धुनि बज्जियं ।
 भलकंत पवनह मधुर गवनह औसु अश्व हरडिजयं ॥
 विकुरंत चंद सुमंत दंदं दिवस ता गम जानयं ॥
 पछ फहि चीरं परिग पीरं तोरि भूषन नाषयं ॥ कं० ॥ ११८ ॥
 नव मिलहिं अलिनी हलै नलिनी सह मंद प्रकासयं ।

(१) मो०—विचारिय ।

(२) क०—सिलिय । ए०—मिलिय ।

(३) मो०—पाटय ।

नय^१ मुदिय कुमुदिय अचित प्रमुदिय सत्त पत्त सुभासयं ॥

जुग जपत अजयं धरत सजयं चित्त मरन विचारयं ।

सामंत सूरय चढ़े नूरय देव तूरय तारयं ॥ कं० ॥ ११८ ॥

घरि अह भानय चढ़ि प्रमानय राज सेनय सज्जियं ।

उभारि बीरय बंधि तीरय अप्प अप्पय गज्जियं ॥ कं० ॥ १२० ॥

कवित्त ॥ अह सूर उगंत । ढाल दुक्की सुरतानिय ।

ठांम ठांम मधगंध । सज्जि चल्है अगवानिय ॥

धर तर गिर धावत समूह । जूह चतुरंग जगाइय ॥

ढिल्ली बै सुरतान । धुक्कि नीसान बजाइय ॥

जा दृथ्य दृथ्य कविचंद कहि । अल्लह देइ सुपाइयै ॥

तत्तार पांन निसुरत्ति पां । सुबर सेनरि गाइयै^२ ॥ कं० ॥ १२१ ॥

रावल समरसिंह का सब सरदारों से पूछना कि क्या हाल है

कोन दूढ़ है और डरता है । सभों का उत्साह

पूर्ण वीरता का उत्तर देना ।

कवित्त ॥ प्रात समर रावर नरिंद । साहस गत पुच्छिय ॥

कहै सब्ब सामंत । मत्ति जंपौ मति अछिय ॥

कोन वीर को धीर । कोन साहस को कातर ॥

कवन दूत अबधूत । जोग काबंध समातर ॥

बंधनह कोन कै बंधियै । अरु किन बंधन तन कुह्यौ ॥

चिचंगराज राजंग गुर । रहसि मंत वर कुह्यौ^३ ॥ कं० ॥ १२२ ॥

रावल का कहना कि ऐसे समय में जो प्राण का मोह छोड़कर

स्वामी का साथ देता है वही सच्चा वीर है ।

इहै वीर अवजोग । प्रांन पति सथ्य न कुहै ॥

चुक्कै न वीर अवसर प्रमांन । जिहि जोग अहुहै ॥

इक बंधन बंधियै । इहत तन बंधन अगौ ॥

(१) मो.—नय ।

(२) ए.—को.—हं.—रंगाइय ।

(३) मो.—कुह्यौ ।

स्वामि संकरें कांडि । स्वांमि हक्कारति भगौ ॥
 सोई बीर धीर साहस सुई । सुइ रन बीर सुबीर हुई ॥
 चिचंग राव रावल चवै । जल बुडतं रन कीर सोइ ॥ कं० ॥ १२३ ॥

दोनों सेनाओं का उत्साह के साथ बढ़ना ।

दूहा ॥ उदित अर्क दिसि पुब्ब पहुँ । जगे सेन दोइ जंग ॥
 अश्व अप्य बल बटुण । बल बजंगी^१ अंग ॥ कं० ॥ १२४ ॥

पृथ्वीराज का सेना के साथ बढ़ना ।

कवित्त ॥ तब प्रथिराज नरिंद । समर उत्तरिय चढ़ाइय ॥
 सजिज सेन चतुरंग । बाम को^२ दाब लसाइय ॥
 स्वांम सेत धजबंधि । नेत निक्कारि निक्काइय ॥
 बंदि बीर विभूत । लुलिय लिह्वाट लगाइय ॥
 नारह दह तुंबर सुचिर । सिव समाधि जगगाय बसि ॥
 अदभुत जुइ दोउ दीन कै । अप्य आन दिष्यै रहसि ॥ कं० ॥ १२५ ॥

सुलतान का रणसज्या से सजकर सवार होना ।

दूहा ॥ सुनि रु वत्त सुरतांन चढ़ि । सजि नषसिष अपसिद्ध ॥
 अरुभर सकल सनाह कसि । चढ़ि अवधूत सनइ ॥ कं० ॥ १२६ ॥

हिन्दुओं के तेज के आगे भीरों का धीर कूटना ।

दूहा ॥ जब हिंदू दल जोर हुआ । कुहि मीर धर भ्रम ॥
 * असमय आर बषांन चलि । करन उइसा क्रम ॥ कं० ॥ १२७ ॥

एक ओर से पृथ्वीराज और दूसरी ओर से रावल

समर सिंह का शत्रुओं पर दूटना ।

दूहा ॥ इत राजन उत समर बर । दुअ दल सज्जि असंघ ॥
 तन तुरंग तिन बर करन । नमिय तेज हय नंघ ॥ कं० ॥ १२८ ॥

(१) मो०-बजंगिय ।

(२) मो०-कोदं ।

* मो० प्रति में “अमरस मय साह करि आखखां प्राक्रम” पाठ है ।

युद्धारम्भ, युद्ध वर्णन, अरब खां का मारा जाना ।

कंद भुजंगी ॥ मिले लोह द्युधुं सु बध्यं हकारे । मनों बाहनी मत्त मै गंध भारे ॥
 दिठी दिठ्ठ दूनं भरं आसुरानं । पलं कूह कज्जै उभै सिंध जानं ॥ कं० ॥ १२८ ॥
 जपै इष्ट मंचं मुषं राम नामं । कहै मेच्छ दीनं ग्रहै मुठ्ठि वामं ॥
 कुटै तीर भारं द्रुमं कै निसानं । मनों भादवं गज्जियं मघघवानं ॥ कं० ॥ १३० ॥
 बजै भेरि तूरं बजै संघ नहं । मनों सज्जई बीर अनहह सहं ॥
 भिरें मेच्छ हिंदू लरै लोह तत्ते । सचै ईस सीसं षहं देव पत्ते ॥ कं० ॥ १३१ ॥
 हुण षंड षंडं भरं सो अलगगं । मनों देव दानै विहथ्ये बिलगगं ॥
 पिजै लोह आरब्ब वाहै कहुरं । हली पौज चहुआनं गय सूर नूरं ॥ कं० ॥ १३२ ॥
 तबै आइ ठठ्ठो भरं सिंध सेनं । तनं आवरे वीर रूपं पथेनं ॥
 दिठं दिठ्ठ लग्गी समं षानं पानं । द्यंती द्यंती मुषं आसुरानं ॥ कं० ॥ १३३ ॥
 तुरी कंडि राजं सहै संग पानं । हण सेल सथ्यं फटे पानं थानं ॥
 जुटे सेल संझौ बहै षगग भहं । परै टहरी' भहं लग्गै सुघहं ॥ कं० ॥ १३४ ॥
 भई भीर सिंधं अनुद्धं अपारं । कहै बीर धीरं मुषं मार मारं ॥
 रछौ आइ अड्डो पतीधार स्थामं । हयौ षगग पानं सु पंमार रामं ॥ कं० ॥ १३५ ॥
 दह्यौ आरबं पानं दो दीन साषी । जिने दीन के अंम की लाज राषी ॥ कं० ॥ १३६ ॥

पाँच घड़ी दिन चढ़े वीरता के साथ लड़ कर

अरब खां का मारा जाना ।

कवित्त ॥ पंच घटी दिन चढ्यौ । उमरि आरब्ब पानं लरि ॥
 हिंदुअ सेन सन्धह । कोह कंड्यौ सुकंक अरि ॥
 असि प्रहार चढ़ि धार । मन तुद्यौ तन तुहिय ॥
 अस्त बस्त बज्जी कपाट । दह्यौचन जुहिय ॥
 पग पगति सिंभ पग पग मुगति । भुगति भूमि कित्तिय चलिय ॥
 धनि सेन साह सुरतानं दल । दरिय बीर मुत्ती पुलिय ॥ कं० ॥ १३७ ॥

खुमान खां का क्रोध करके लड़ने को आना ।

कवित्त ॥ एकादस दिन जुद्ध । उमड़ि आरब्ब पानं जुरि ॥

* बल घट्यौ पतिसाह । पवरि पुष्मानं पांन सुनि ॥
परि अरिष्ट सु बिद्यान । भए सब स्थय उतारै ॥
अप्य अप्य मुष कंडि । मंडि करि वार करारै ॥
घरियार सघन समघाइ बजि । लरत लोह भए लल्लरिय ॥
दोइ दीन दुंद दारुन दरिय । करै बीर गुन गल्लरिय ॥ कं० ॥ १३८ ॥

युद्ध का वर्णन ।

कंद मोतीदाम ॥ सुअंत कमत बढै अनदोस । परै घन वत्त सरोसिय रोस ॥
लटै जनु सांड भयानक भंति । करै घन गर्ज घन बन कंति ॥ कं० ॥ १३९ ॥
बहै असि अंक निसंक नि नारि । उतारत भाजन सूत कुंभार ॥
तकै सिरहंन तकत्तिय घाउ । बहै करि वार मनो बहि बाउ ॥ कं० ॥ १४० ॥
जहां तहां धुक्कत उठत एक । सरफै तरफै रत तच्छिय तेक ॥
हलंमल होत घरभर फीर । बहै असमान अनुद्विय तीर ॥ कं० ॥ १४१ ॥
बहै सर पष्यर निक्करि जात । तकै तन घट करंत निघात ॥
परै वर बज गुरज सिरंन । बहै सिर रत कै पव्व भिरंन ॥ कं० ॥ १४२ ॥
अदभुत आवध बज्जिय मार । ठहै जिमि दल सुनह किनार ॥
हलंमिल है दल पैदल एक । भयं इम युद्ध घरी भर एक ॥ कंद ॥ १४३ ॥

ग्यारह दिन युद्ध होने पर सुलतान की सेना का निर्वल
होना । रावल समरसिंह का तिरछी ओर से
शत्रु सेना पर दूटना ।

कवित्त ॥ एकादस दिन जुद्ध । सबर संघट^१ पंच घटि ॥
बल घटिय पतिसाह । पग घरभरिय पांन जुरि ॥
चाइ चाइ आरिष्ट । सकल हिंदून सेन करि ॥
समर सिंघ मुष कंडि । जाइ भंज्यौ तिरछौ परि ॥
घन घाइ बजाइ सु फौज फिरि । लरन लोह कट्टै भिरन ॥
दोउ दीन दीन उप्पम बिसल । मद मैगल कुहे लरन ॥ कंद ॥ १४४ ॥

* यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है ।

(१) मो०—संघट ।

युद्ध वर्णन ।

कंद चिभंगी ॥ मद मोष कि कुहं दो वर जुहं संकर तुहं आहुहं ।

भर भर भूआलं बूथर चालं कर बजि तालं तर तुहं ॥

करि कर वर कुंतं सजि बलवंतं भिरि गज दंतं चढ़ि दंतं ।

करि घन समानं बीर भरानं उप्पम जानं करि नंतं ॥ कं० ॥ १४५ ॥

तज्जे सब सस्त्रं बीर सुमिचं बजि अनुरत्तं उत्तंगे ।

उर उर वर घड़े रुधि रस लुहे कवि बल पट्टे रग रंगे ॥

धर धरति फुरक्कं चलत न दिष्यं अंतर रूपं अवरूपं ॥

बगं अघ जानं को किरवानं गिल छित घानं जह भष्यं ॥ कं० ॥ १४६ ॥

है वै हिंदवानं तजै न थानं ट्रेन समानं गुर पिंडं ॥

रितु राज बसंतं दीपति चितं संकुचि जंतं मिल षंडं ॥

नेजे वर घानं बलि लक्कि ध्यानं मीर धरानं अमि दंदं ॥

सब सेन समाहं सुरपति काहं को तिग राहं लै चंदं ॥ कं० ॥ १४७ ॥

खुरासान खां का घोर युद्ध करना ।

कवित्त ॥ पां घुरसांन ठछाइ । पांन घुरसांन गहन पति ॥

सत्त दून भर समर । समर आहुन्ति मंडि छिति ॥

सेन नवत अित नवत । नवत गजराज साज नव ॥

ते समस्त नव मंच । यंच तंच नव्वंत सब ॥

दिन अदित हंस इक सथ्य उडि । रन आहुदिय बीर वर ॥

दिष्यहि सुजथ्य गंधव गुननि । जुवर कित्त बित्ती सुभर ॥ कं० ॥ १४८ ॥

समर सिंह की बीरता का वर्णन ।

कवित्त ॥ पख्लौ समर घावास । समर जित्तै सुरतानी^१ ॥

परि भट्टी मच नंग । सस्त्र वाहे सुविदानी ॥

पख्लौ गौर केहरी । रेह अजमेरां सषिय^२ ॥

स्वामि भ्रम जस रत्त । कित्त भारथ भर भषिय ॥

रघुवंस पंच पंचां मिले । वर पंचानन नाम क्रमि ॥

चिचंग बीर पंचो परत । चढ्यौ भान मध्यान नमि ॥ कं० ॥ १४९ ॥

सूचना ।

निम्न लिखित पुस्तकें “सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी” को लिखने से मिल सकती हैं ।

| | | | | मूल्य डांकव्यय | |
|------------------------------------------------------------------------|-----|-----|-----|----------------|----|
| मलिक मुहम्मद की अखरावट | ... | ... | ... | 15) | 1) |
| कविवर बिहारीलाल—(बाबू राधाकृष्णदास रचित) | ... | ... | ... | 5) | 1) |
| गद्यकाव्यमीमांसा—(पण्डित अम्बिकादत्त व्यास रचित) | ... | ... | ... | 1) | 1) |
| हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित) | ... | ... | ... | 1) | 1) |
| समालोचना—(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) | ... | ... | ... | 5) | 1) |
| समानोचनादर्श—पद्य—(बाबू जगन्नाथ दास रचित) | ... | ... | ... | 5) | 1) |
| कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र—(पण्डित नारायणपांडे रचित) | ... | ... | ... | 1) | 1) |
| बिसूचिका चिकित्सा | ... | ... | ... | 1) | 1) |
| हरिश्चन्द्र—पद्य—(बाबू जगन्नाथ दास रचित) | ... | ... | ... | 5) | 1) |
| प्रगल्भीता—(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) | ... | ... | ... | 15) | 1) |
| उथेलो—(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) | ... | ... | ... | 5) | 1) |
| नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) ६ भाग छप चुके हैं (चाटकों | | | | | |
| भाग नहीं है) मूल्य—प्रति भाग | | | | 1) | 1) |
| हिन्दी लेखक (बाबू हरिश्चन्द्र रचित) | ... | ... | ... | 1) | 1) |
| गुप्तदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित | ... | ... | ... | 15) | 1) |
| उदलमिश्र की चन्द्रावती | ... | ... | ... | 15) | 1) |
| सूदन कवि का सुजानचरित्र | ... | ... | ... | 2) | 5) |
| नाल कवि का कृत्रप्रकाश | ... | ... | ... | 9) | 1) |
| मन्ददास की रासपञ्चाध्यायी | ... | ... | ... | 15) | 1) |
| राचीन—लेख-मणि-माला—१ भाग (बाबू श्यामसुन्दरदास लिखित) | ... | ... | ... | 9) | 1) |
| प्रशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा लिखित) | ... | ... | ... | 1) | 1) |
| नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित) | ... | ... | ... | 15) | 1) |
| रुखीराजरासो—पहिला भाग (समय १-११) | ... | ... | ... | 8) | 1) |
| “ समय १२-२४ | ... | ... | ... | 2) | 5) |
| कुमारसम्भवसार (पण्डित महाश्वर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) | ... | ... | ... | 5) | 1) |
| श्रीधर का जंगनामा | ... | ... | ... | 1) | 1) |
| धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा लिखित) | ... | ... | ... | 1) | 1) |

| | | | | |
|-------------------------------------------------|-----|-----|-----|-----|
| सभा के पुस्तकालय की सूची | ... | ... | ... | १) |
| मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित) | ... | ... | ... | ॥ |
| चन्द्रशेख का हमीर हठ | ... | ... | ... | ॥ |
| महिलामृदुबाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित) | ... | ... | ... | १) |
| वैज्ञानिक कोश (भौगोलिक परिभाषा) | ... | ... | ... | १)॥ |
| " " (व्यौत्तिषिक परिभाषा) | ... | ... | ... | १) |
| " " (अर्थशास्त्र की ") | ... | ... | ... | ॥ |
| " " (रासायनिक ") | ... | ... | ... | ॥ |
| " " (गणितशास्त्र की ") | ... | ... | ... | ॥ |
| नवीन दृष्टि में प्रचीन भारत | ... | ... | ... | १) |
| गीतावली | ... | ... | ... | १) |
| योगदर्शन | ... | ... | ... | २) |
| गुरुगीता | ... | ... | ... | १) |
| रामचरितमानस | ... | ... | ... | ५) |

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की १० पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकों मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तक मूल्य सभासदों के लिये ६) रु० है।

